FYBA – HINDI COMPULSORY LIST OF TEXT BOOKS

प्रथम वर्ष कला

हिंदी - (अनिवार्य)

१. काव्य प्रदीप : संपादक डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे

प्रकाशन – परिदृश्य प्रकाशन
दादी संतुक लेन, धोबी तलाव
मरीन लाइन्स, मुंबई

पाठय – क्रम के लिए निर्धारित कवितायें

	कवि	कविताएँ
१.	मैथिलीशरण गुप्त	सिद्धि हेतु स्वामी गए
२.	अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध	फूल और कांटा
३.	माखनलाल चतुर्वेदी	पुष्प की चाह
४.	सुभद्रा कुमारी चौहान	झाँसी की रानी
५.	जयशंकर प्रसाद	हिमाद्रि तुंग श्रृंग से
६.	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	संध्या सुंदरी
७.	महादेवी वर्मा	बीन भी हूँ मै तुम्हारी रागिनी भी हूँ
८.	बालकृष्ण शर्मा नवीन	कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ
९.	रामधारी सिंह दिनकर	हिमालय
१०.	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय	कलगी बाजरे की
११.	नागार्जुन	अकाल
१२.	सवेश्वर दयाल सक्सेना	दिवंगत पिता के प्रति
१३.	दुष्यंत कुमार	गजल
१४ .	धूमिल	मोची राम
१५.	केदारनाथ सिंह	रोटी
१६.	अरुण कमल	अपनी केवल धार
१७.	ओमप्रकाश वाल्मीकी	घृणा और प्रेम कहाँ से शुरु होते है
१८.	सूरजपाल चौहान	प्यारा हिंदुस्तान

२. आधुनिक हास्य वंग संग्रह :- संपादक शंकर पुणताम्बेकर
प्रकाशक - पंचशील प्रकाशन
फिल्म कालोनी, चौड़ा रास्ता
जयपुर – ३०२००३.

<u>पाठय – क्रम के लिए निर्धारित रचनाएँ</u>

१.	खरगोश के सींग	प्रभाकर माचवे
२.	भोलाराम का जीव	हरिशंकर परसा
३.	एक रेल – सफर की बात	शंकर पुणताम्बेकर
४.	अंगद का पाँव	श्री लाल शुक्ल
५.	समस्या सुलझाने में बुध्दिजीवी का योगदान	शरद जोशी
६.	प्रधान मंत्री वयों नहीं हँसते ?	लतीफ घोंधी
७.	घूस एक चिकनाई है	रवीन्द्र कालिया
८.	क्रिकेट इज इंडिया एंड इंडिया इज क्रिकेट	घनश्याम अग्रवाल
९.	समुझै कवि की कविताई	प्रेम जन्मेजय
१०.	मौत की राजनीति	इश्वर शर्मा
११.	रुकी हुई ट्रेन और क्रांति का बीज	ज्ञान चतुर्वेदी
१२.	भगवन बचाए मेहमान से	पूरण सरमा

३) पत्रलेखन : – निमंत्रण, बधाई, रिक्त पद हेतु आवेदन पत्र, संपादक के नाम पत्र (शिकायत एवं सुझाव)

४) निबंध लेखन : – सामाजिक, शैक्षणिक, आत्मकथात्मक, वैचारिक, समसामयिक

५) व्याकरण :-

१. वाक्य परिवर्तन – क (विधि, निषेधवाचक प्रश्नार्थक, विस्मयादिबोधक)
ख (सामान्य वाक्य, संयुक्त वाक्य, मिश्र वाक्य)

२. वाक्य – रचना की शुद्धता

३. काल परिवर्तन – वर्तमान काल, भूत काल, भविष्यकाल एवं उनके उपभेद.

४. वर्तनी की शुद्धता

५. मुहावरें तथा कहावतों का अर्थ एवं प्रयोग

६. विशेषण शब्दों की रचना

७. भाव वाचक शब्दों की रचना

८. (लिंग एवं वचन परिवर्तन) संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों का

प्रथम सत्र

यूनिट का विभाजन

(काव्य प्रदीप)

यूनिट १	व्याख्यान -८	सिद्धि हेतु स्वामी गए से हिमाद्रि तुंग श्रृंग से तक
यूनिट २	व्याख्यान -९	संध्या सुंदरी से हिमालय तक

आधुनिक हास्य व्यंग संग्रह

यूनिट ३	व्याख्यान -८	खरगोश के सींग, भोलाराम का जीव, एक रेल सफर की बात.
यूनिट ४	व्याख्यान -७	अंगद का पाँव, समस्या सुलझाने में बुद्धिजीवी का योगदान, प्रधान मंत्री क्यों नहीं हँसते
यूनिट५	क (व्याख्यान -७	पत्र लेखन
	ख (व्याख्यान- ८	व्याकरण (वाक्य परिवर्तन, वाक्य रचना की शुद्धता, काल परिवर्तन, वर्तनी की शुद्धता)
यूनिट ६	व्याख्यान -१५	प्रस्तुतीकरण, वाचन , लेखन प्रकल्प चर्चा एवं अन्य रचनात्मक कार्य

द्वितीय सत्र

(काव्य प्रदीप)

यूनिट १	व्याख्यान -८	कलगी बाजरे की से मोचीराम तक
यूनिट २	व्याख्यान -७	रोटी से प्यारा हिंदुस्तान तक

आधुनिक हास्य व्यंग संग्रह

यूनिट३	व्याख्यान- ८	घूस एक चिकनाई है से समुझै कवि की कविताई तक
यूनिट ४	व्याख्यान -७	मौत की राजनीति से भगवान् बचाए मेहमान से तक
यूनिट ५	क (व्याख्यान -७	निबंध लेखन
	ख (व्याख्यान -८	मुहावरे तथा काहवतों का अर्थ एवं प्रयोग, विशेषण शब्दों की रचना, भाव वाचक शब्दों की रचना, लिंग एवं वचन परिवर्तन

ODOL के विद्यार्थियों हेतु प्रश्न – पत्र का प्रारुप समय ३ घंटे कुल अंक - १००

प्रश्न १	सन्दर्भ सहित व्याख्या (दोनों पुस्तकों से आतंरिक विकल्प सहित)	अंक १४
प्रश्न २	दीघोतरी प्रश्न (दोनों पुस्तको से आतंरिक विकल्प सहित)	अंक २४
प्रश्न३	सामान्य प्रश्न (दोनों पुस्तको में से किसी एक का उत्तर अपेक्षित)	अंक १०
प्रश्न४	क- टिप्पणियां (दोनों पुस्तको से विकल्प सहित)	अंक १०
	ख –वस्तुनिष्ठ प्रश्न (दोनों पुस्तको ६ -६)	अंक १२
प्रश्न ५	च – पत्र लेखन (२ में से १)	अंक ८
	छ – निबंध लेखन (४ में से १)	अंक १२
प्रश्न ६	व्याकरण आधारित प्रश्न	अंक १०

❖❖❖

१

‘सिद्धि हेतु स्वामी गए’, ‘फूल कांटा’, ‘पुष्प की अभिलाषा’?

काव्य - प्रदीप

सं. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे

(आधुनिक हिन्दी कविताओं का संकलन)

इकाई की रुप - रेखा

१.० उद्देश्य
१.१ प्रस्तावना
१.२ कवि परिचय
१.३ कविता का भावार्थ
१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
  i) कविता की पंक्ति
  ii) संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या, साहित्यिक सौंदर्य / विशेष
१.५ बोध प्रश्न, वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१.० उद्देश्य:

इस खंड की प्रथम इकाई में हम तीन कविताएँ - ‘सिद्धि हेतु स्वामी गए’ ‘फूल और कांटा, ‘पुष्प की अभिलाषा’ दे रहे हैं, कविता के भावार्थ से पूर्व कवि परिचय दिया जा रहा है। जिससे कवि व उसकी अन्य रचनाओं के बारे में जानकारी हो सके। उदाहरण के तौर पर संदर्भसहित स्पष्टीकरण भी दिया जा रहा है। कविता की अन्य विशेताएँ भी दी जा रही हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद – सदियों से शोषित नारीमन की पीड़ा व उसके महत्व को समझने में सफलता मिलेगी।

सद्वृत्तियॉ एवं दुवृत्तियों को समझना आसान रहेगा। सामाजिक समझ को व्यापक बनाने में कविता मद्द करेगी। राष्ट्र प्रेम की भावना का निर्माण होगा।

कविता के भाव पक्ष व शिल्प पक्ष के प्रति व्यापक समझ का निर्माण होगा। साहित्यिक अभिरुचि का निर्माण होगा।

समाज के प्रति संवेदनशीलता का भाव जागेगा। कविता में व्याप्त कठिन शब्दों, मुहावरों व अलंकारों के अर्थ जान सकेंगे और कविता के महत्त्व को समझ सकेंगे।

१.१ प्रस्तावना :

राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त द्वारा रचित 'सिद्धि हेतु स्वामी गए' में नारी मन की पीड़ा को 'यशोधरा' के माध्यम से कवि ने व्यक्त किया है। यशोधरा को इस बात का दु:ख है कि स्वामी मुझे बिना बताये, 'सिद्धि हेतु' चले गए। 'फूल और कांटा' कविता में हरिऔध जी ने फूल को सदवृत्तियों का प्रतीक माना हैं और कांटे को दुष्प्रवृत्तियों का। सज्जनता पूज्यनीय व प्रशंसनीय होती है, और दुर्जनता त्याज्य एवं निदंनीय'।

'पुष्प की अभिलाषा' कविता में कवि माखन लाल चतुर्वेदी जी स्वराज्य की प्राप्ति के लिए त्याग और बलिदान को आवश्यक मानते हैं। वे अपनी कविता को ढाल बनाकर देशवासियों के मन में राष्ट्रप्रेम जगाना चाहते हैं।

१.२ कवि परिचय

मैथिलीशरण गुप्त (१८८६-१९६४)

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त भारतीय के अमर गायक के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना का स्वर है। इनकी सेवाओं के लिए महात्मा गाँधी ने इनको 'राष्ट्र कवि' की उपाधि से सम्मानित किया और राष्ट्रपति ने इनको संसद - सदस्य मनोनीत किया ।

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म झाँसी के चिरगाँव में सन १८८६ ई. में हुआ था। स्वाध्याय से ज्ञान प्राप्त कर, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से खड़ी बोली में कविता लिखना प्रारम्भ किया । द्विवेदी युग के सर्वाधिक लोकप्रिय होते हुए भी उनके काव्य में शाश्वत मूल्यों की रक्षा की गई है। अपनी साहित्यिक उपलब्धियों के कारण इन्हें आगरा और इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने. डी. लिट की उपाधि से सम्मानित किया । 'साकेत' महाकाव्य की रचना पर इनको मंगला प्रसाद पारितोषिक दिया गया ।

रचनाएँ

इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - साकेत, यशोधरा, द्वापर, भारत - भारती, जयभारत, पंचवटी, झंकार, जयद्रथवध, त्रिपथगा, कुणाल गीत, नहुष, काबा और कर्बला, विश्ववेदना, विष्णुप्रिया आदि। इनके अतिरिक्त - चन्द्रहास, त्रिलोत्तमा और अनघ गीति - नाट्य हैं । मेघनाथ वध, स्वप्न वासवदत्ता बंगला, संस्कृत और फारसी से की गई अनूदित रचनाएँ हैं। इनकी प्रमुख रचना 'भारत-भारती' अपने समय की अत्यन्त लोकप्रिय रचना थी, इसमें देश - प्रेम एवं राष्ट्रीयताा की भावना मुखरित हुई है। 'साकेत' महाकाव्य रामकथा पर आधारित है। इसमें मर्मस्पर्शी स्थलों का चयन कर भरत के उज्जवल चरित्र को दर्शाया है। चित्रकूट प्रसंग उनकी अपनी खासियत है और 'कैकेयी अनुताप' कवि की अपनी मौलिक शक्ति का परिचय देती है।

'यशोधरा' भी गुप्त जी की उच्च कोटि की रचना है । इसमें गौतम बुद्ध के गृह त्याग से लेकर ज्ञान - प्राप्ति तक की घटनाओं का क्रमश: वर्णन है ।

१.३ 'सिद्धि हेतु स्वामी गए' : भावार्थ / कथ्य

प्रस्तुत कविता मैथिली शरण गुप्त जी की 'यशोधरा' खंडकाव्य से ली गई है। यशोधरा में राष्ट्र कवि ने नारी मन की पीड़ा को भली भाँति समझा और उसे अभिव्यक्ति दी । सदियों से उपेक्षित नारी पात्रों पर द्विवेदी काल में खूब लेखनी चली।

साहित्यकारों ने, गौतम बुद्ध के गृहत्याग की घटना को ऐतिहासिक घटना सिद्ध करने में कहीं कसर नहीं छोड़ी किन्तु उनका ध्यान यशोधरा की ओर से कैसे विमुख हो गया? उसकी पीड़ा जगत की प्रत्येक नारी की पीड़ा क्यों नहीं बन पायी? बुद्ध (सिद्धार्थ) के गृहत्याग से, यशोधरा पर क्या गुजरी? उसका जीवन कैसे बीता, किसी ने इस पर अपनी लेखनी नहीं चलायी? किन्तु, नारी मन के पारखी कवि गुप्त जी भला यशोधरा की पीड़ा से कैसे अछूते रह जाते? बुद्ध यशोधरा और राहुल को सोता हुआ छोड़कर, सिद्धि प्राप्ति के लिए चले जाते हैं, यशोधरा से एक बार भी नहीं कहते। यह मेरे लिए गौरव की बात हैं, निश्चय ही स्वामी 'सिद्धि हेतु गए हैं। मेरे स्वामी अगर मुझसे कहकर जाते तो मैं उनके पथ की रूकावट न बनती हे सखि। मुझे दु:ख इसी बात का है कि मेरे स्वामी मुझे, यद्यपि बहुत मानते थे पर मुझे पूर्णत: पहचान नहीं पाए। उनका चुपके से जाना मेरे लिए असहनीय है मैंने सदैव भारतीय नारी धर्म का पालन करते हुए, उनके कार्य को प्रमुख माना किन्तु उन्होंने मुझ पर विश्वास नहीं किया, यही अफसोस है। भारतीय महिलाएँ तो क्षत्रिय धर्म का पालन करते हुए अपने पतियों को स्वयं सुसज्जित करके युद्धभूमि में भेजती हैं। वह कभी कमजोर नहीं पड़ती। उन्हें चाहिए था कि वे मुझसे कह कर गये होते। अपने भाग्य को कोसती हुई यशोधरा कहती है भला मैं किस पर गर्व करूँ, जिसने अपनाया था अब उसी ने त्याग दिया। उनको (पतिको) मुझ पर जरा भी दया नहीं आयी। फिर भी, यशोधरा के स्मरण में वे नित्य बने रहते हैं। यशोधरा को दु:ख इस बात का है कि स्वामी सिद्धि प्राप्ति के लिए गए और मैं उन्हें विदा न कर सकी। यह कसक उसे बहुत सालती है। यद्यपि, नेत्र उन्हें कठोर कहते हैं पर उनसे जो आँसू बहते हैं, वे इस बात के प्रमाण है कि वे सहृदय हैं। वे मेरे रोने को बर्दाश्त नहीं कर पाते अत: मुझ पर तरस खाकर ही गये होंगे। वह अपने स्वामी की सिद्धि प्राप्ति के लिए मंगल कामना करती है। वह कोई उलाहना भी नहीं देना चाहती और न ही अपने दु:ख से अपने स्वामी को दु:खी करना चाहती है। बल्कि, आज उसे अपने स्वामी और अधिक अच्छे लगते हैं। फिर भी बिना कहे जाने का दु:ख उसे है।

कविता के अंत में, यशोधरा का पूर्ण विश्वास है कि उसके पति लौटकर जरूर घर आयेंगे और सिद्धि प्राप्ति के बाद कुछ अनोखा लायेंगे भी। पर, ये दु:खी हृदय क्या उनके आगमन को सहर्ष स्वीकार करेगा? एक तरफ पति मिलन की तीव्र इच्छा दूसरी तरफ मधुर आक्रोश व उपालंभ। दाम्पत्य जीवन की सहज नोंक-झोंक कविता की अपनी विशेषता है।

इस प्रकार गुप्त जी ने अपनी रचनाओं में नारी के गौरव को अक्षुण्ण रखते हुए उनके जननी, भार्या, जनसेविका, प्रिया रूप के आकर्षक चित्र खींचे हैं। भारतीय नारी करूणा, श्रद्धा, आस्था, विश्वास, प्रेम समर्पण, त्याग आदि गुणों से युक्त होती है। 'यशोधरा' में भी इन सभी गुणों का समावेश है जो वर्तमान 'नारी समाज' के लिए प्रेरणास्रोत है।

अयोध्यसिंह उपाध्याय 'हरिऔध' - (१८६५-१९४७)

'हरिऔध' जी खड़ीबोली के प्रथम महाकवि के रूप में विख्यात हैं। उनकी कृतियों में जहाँ उनका भावुक कवि निखरा है, वहीं उन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य का सृजन करके अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण का भी परिचय दिया है।

'हरिऔध' जी का जन्म सन १८६५ ई. में जिला आजमगढ़ में स्थित निजामाबाद नामक स्थान पर हुआ । इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही शुरू हुई । इन्हें अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त संस्कृत फारसी और बंगला का अच्छा ज्ञान था ।
हरिऔध जी ने अपने छात्र जीवन में ही काव्य सर्जना प्रारम्भ कर दी थी। मुक्तक, खण्डकाव्य तथा महाकाव्य के आप प्रणेता हैं।

रचनाएँ -

ब्रजभाषा काव्य : कबीर - कुण्डल, कृष्ण - शतक 'काव्योपवन', प्रेमाम्बुवारिधि, प्रेमाम्बु-प्रवाह, प्रेमाम्बु-प्रस्रवाण, प्रेमाम्बु-प्रपंच का एकीभूत रूप है। उपदेश कुसुम (अनूदित रचना) आदि।

खड़ी बोली काव्य: प्रेम पुष्पोपहार, प्रियप्रवास, पद्यप्रमोद, चुभते चौपदे, चोखे-चौपदे; पद्यप्रसून, फूल पत्ते आदि (खड़ी बोली काव्य: प्रेम पुष्पोपहार, प्रियप्रवास, पद्यप्रमोद चुभते चौपदे, चोखे चौपदे, पद्यप्रसून, फूलपत्ते आदि) इनके अतिरिक्त कल्पकता, ग्रामगीत, बाल कवितावली, हरिऔध सतसई, वैदेही वनवास आदि भी प्रमुख रचनाएँ हैं। उपाध्याय जी कवि, सुधारक, समाजसेवी, भाषाशास्त्री व नाटककार के साथ-साथ जागरूक कवि के रूप में प्रख्यात हैं।

१.३.१ फूल और कांटा - भावार्थ / कथ्य

प्रस्तुत कविता में फूल अच्छे और कांटा बुरे व्यक्तियों के प्रतीक हैं। एक अपनी सद्वृत्तियों के कारण पूज्य एवं प्रशंसनीय है तो दूसरा अपने दुर्गणों के कारण त्याज्य एवं निंदनीय है।

'फूल और कांटा' दोनों एक ही स्थान से खाद - पानी ग्रहण करते हैं फिर भी उनके गुण अलग - अलग हैं। इन दोनों की उत्पत्ति स्थान एक होने के बावजूद भी उनके स्वभाव में अन्तर है। कवि के कहने का आशय यह है कि कोई भी मनुष्य जन्म से छोटा या बड़ा, भला या बुरा नहीं होता। बल्कि, वह अपने गुणों के आधार पर छोटा या बड़ा बन जाता है।

'फूल और कांटे' का जन्म एक ही स्थान पर होता है और उन दोनों का एक ही पौधा बिना किसी भेद-भाव के पालन - पोषण करता है। दोनों की परिस्थितियाँ भी समान हैं किन्तु उनके कार्यों में समानता नहीं है। एक ओर यहाँ फूल मन को प्रसन्न कर सुख पहुँचाता है वहीं काँटा मन को दु:खीकर कष्ट पहुँचाता है। फूल अपनी विशेषताओं के कारण संसार में लोकप्रिय बन जाता है जबकि काँटा अपनी कुटिलता के कारण त्याज्य। अर्थात मानव अपने सद्कर्मों से महान बनता है, अपनी जाति से नहीं।

'हरिऔध' जी कहते हैं कि 'फूल और काँटे' पर चन्द्रमा अपनी चाँदनी समान रूप से बिखेरता है, बादल भी समान रूप से वर्षा करते हैं, हवाएँ भी समान रूप से बहती हैं, सारे प्राकृतिक क्रिया - कलाप समान रूप से घटित होने पर भी उन दोनों में समानता नहीं पायी जाती है।

काँटा लोगों की अँगुलियों को छेदकर खून निकाल देता है, कपड़ों में अटककर, कपड़े फाड़ देता है। इतना ही नहीं, प्रेम मग्न तितलियों के पंख कुतरकर, उन्हें पीड़ा पहुँचाता है। प्रेम का प्रतीक भौंरा तो इन काँटों से सदैव दुखी रहता है।

समान स्थितियों में उत्पन्न फूल तितलियों और भौरों को अपनी गोद में लेकर अपना अनूठा रस पिलाता है अर्थात उन्हें सुख पहुँचाता है। अपनी सुगंध और अनोखे (सुन्दर) रंग से हृदय की कली को प्रफुल्लित करता है अर्थात उसके मन में खिलने की कामना जगाता है।

एक तरफ फूल अपनी अच्छाइयों (गुणों) के कारण देवताओं के शीश पर चढ़ाया जाता है और सुशोभित होता है, वहीं काँटा लोगों की आँखों में खटकता है । इस प्रकार मात्र ऊँचे कुल में

जन्म लेने से कोई व्यक्ति बड़ा नहीं हो जाता। बड़ा होने के लिए व्यक्ति में त्याग, करुणा, दया, सहिष्णुता, समता जैसे मानवीय मूल्यों का होना आवश्यक है जो बड़प्पन के प्रतीक हैं। इन मूल्यों को जीवन में अपनाने से ही अपने कुल का गौरव बढ़ता है अन्यथा व्यक्ति के साथ ही उसका कुल भी निंदनीय कहलाता है।

फूल अपनी विशेषताओं के कारण ग्राह्य है जबकि काँटा अपनी बुराइयों के कारण त्याज्य। एक पूजित दूसरा निदंनीय ।

साहित्यिक सौंदर्य -

१. 'फूल और काँटा' में प्रतीकात्मक शैली ।
२. मुहावरेदार भाषा 'आँख में खटकना'
३. हरिऔध की भाषा का सबसे बड़ा गुण विषय तथा भाव की अनुकूलता है।
४. कविता में अनुप्रास की छटा - 'सोहता सुर - सीस' में दर्शनीय हैं।
५. 'मानवीय गुणों के आधार पर ही मनुष्य की पहचान होती है' यही कविता का संदेश है। प्रकारान्तर से जाँति - पाँति का भेद-भाव मिटाने का संदेश भी इस कविता में व्याप्त है।

१.३.२ माखन लाल चतुर्वेदी (१८८९-१९६८)

तलवार और कलम का एक साथ प्रयोग करने की अद्‌भुत क्षमता रखने वाले, माखनलाल चतुर्वेदी हिन्दी साहित्य के समर्थ कवि हैं। उन्होंने साहित्य के सभी क्षेत्रों में अपनी लेखनी चलाई पर काव्य के क्षेत्र में वह अद्वितीय रहे माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म सन १८८९ ई. में मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई नामक गाँव में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा बाबई में हुई। १९५९ ई. में सागर विश्वविद्यालय से उन्हें डी.लिट की उपाधि से सम्मानित किया गया। १९६३ ई. में गणतन्त्र दिवस के अवसर पर उन्हें पद्‌म भूषण की उपाधि प्रदान की गई ।

वह बाल्यावस्था से ही साहित्य प्रेमी रहे । इनका प्रारम्भिक रचनाएँ खण्डवा से प्रकाशित होने वाली 'प्रभा' नामकी पत्रिका में प्रकाशित हुई। इन्हें कई भाषाओं का अच्छा ज्ञान था ।

रचनाएँ

हिमकिरीटिनी, हिमतरंगिनी, माता, युग चरण समर्पण, आधुनिक कवि, वेणुलो गूँजे धरा, बीजुरीकाजल ऑज रही, उनकी प्रसिद्धि काव्य कतियाँ हैं ।

'साहित्य देवता', 'अमीर इरादे, गरीब इरादे। 'समय के पॉव' व 'कृष्णार्जुन' उनके गद्य संकलन हैं।

लगभग दो शताब्दियों तक पराधीनता में जकड़े रहने के बाद भारतीयों का मन स्वतन्तता प्राप्ति के लिए व्याकुल होना स्वाभाविक था। बच्चा - बच्चा देश के लिए बलि देने को तत्पर था । यही बलिदान का स्वर उनकी कविता 'पुष्प की अभिलाषा' में देखा जा सकता है।

१.३.३ पुष्प की अभिलाषा : भावार्थ / कथ्य

प्रस्तुत कविता चतुर्वेदी जी ने जेल में रहकर लिखी थी । इसमें शहीदों के प्रति, अपनी अनन्य निष्ठा को कवि ने व्यक्त किया है। गाँधीवादी विचारधारा के होने के बावजूद वे मानते थे बिना बलिदान और क्रान्ति के स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं हो सकती । इसके लिए वे अपनी कविताओं को ढाल बनाकर देशवासियों के मन में राष्ट्रप्रेम जगा रहे थे।

कवि का कहना है कि स्वराज्य की प्राप्ति के लिए त्याग और बलिदान परम आवश्यक है क्योंकि इसके बिना आजादी की कल्पना व्यर्थ है। सिर्फ, चिल्लाने या रोने से स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती ।

'पुष्प की अभिलाषा' कविता का पुष्प न तो यह इच्छा रखता है कि मैं किसी सुर बाला के गहनों में गूंथा जाऊँ अर्थात किसी देव पत्नी के गले का हार बनूँ, न यह कहता है कि किसी प्रेमी की माला में अनुस्यूत होकर उनकी प्राण-प्रिया को ललचाऊँ। वह, न सम्राटों के शव पर पड़ना चाहता है और न देवताओं के सिर पर चढ़ने की अभिलाषा रखता है। 'देव के सिर पर चढ़कर' गर्व करने की या अपने को महान समझने की उसकी (पुष्पकी) इच्छा नहीं है। बल्कि, उसकी लालसा है कि वह (माली द्वारा) उसे तोड़कर ऐसे मार्ग पर फेंके जहाँ से अनेकों वीर अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए गुजरें। पुष्प अपने सुख की कोई इच्छा नहीं रखता बल्कि वह तो केवल इतनी इच्छा रखता है कि शहीदों के पैंरों का स्पर्श उसे हो जाए ।

राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत यह कविता त्याग और बलिदान की नींव पर खड़ी है, भोग और विलास से कोसों दूर । कवि का 'देश प्रेम' अपनी चरम सीमा पर है ।

साहित्यिक सौंदर्य -

१. राष्ट्रप्रेम त्याग और बलिदान की कामना उनकी कविता का मूल स्वर है।
२. कविता में 'पुष्प' का मानवीकरण किया गया है।
३. 'पुष्प' पराधीन भारत की आम जनता का प्रतीक है।
४. भाषा सहज - सरल व ओज गुण से युक्त है।
५. 'भाग्य पर इठलाना' मुहावरे का प्रयोग हैं।
६. कवि की आत्म-समर्पण की भावना प्रत्येक भारतीय के लिए प्रेरणा स्त्रोत है।

१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

सिद्धि हेतु स्वामी गए, यह गौरव की बात,
पर चोरी- चोरी गए, यहीं बड़ा व्याघात।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते,
कह, तो क्या मुझको वे अपनी पथ – बाधा ही पाते ?

संदर्भ -

प्रस्तुत पंक्तियाँ डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे द्वारा सम्पादित 'काव्य – प्रदीप' संकलन से . 'सिद्धि हेतु स्वामी गए' से ली गई हैं। मूलतः यह गीत 'यशोधरा' खण्डकाव्य से लिया गया है। इसके रचयिता राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हैं।

प्रसंग -

इस कविता में यशोधरा अपने पति सिद्धार्थ के ग्रह त्याग व बिना कहे चले जाने की बात से बेहद दु:खी है। वह अपनी सखियों से कहती हैं कि सिद्धार्थ सिद्धि प्राप्ति के लिए गए हैं यह बड़े गौरव की बात है पर मुझे और राहुल को सोता छोड़ बिना कहे चले गए, यह मेरे लिए अपमानजनक बात है।

व्याख्या -

यशोधारा सिद्धार्थ की पत्नी है जिसे उसके स्वामी रात में सोता हुआ छोड़कर चुपके से निर्वाण की खोज में वन में चले गए। स्वामी सिद्धि प्राप्ति के लिए वन में गए यह बड़े गौरव की बात है पर उनका चुपके से जाना मेरे लिए बड़े अपमान की बात है। यही मेरे दु:ख का भी कारण है। हे सखि यदि वे मुझसे कह कर जाते तो क्या मैं उनके मार्ग में रुकावट बनती, कभी नहीं। एक बार मुझ पर भरोसा कर कहकर तो देखते। यही कष्ट मुझे पीड़ित कर रहा है।

साहित्यिक सौंदर्य -

१. 'सिद्धि हेतु स्वामी गए' कविता में नारी मन की पीड़ा का गरिमामय चित्र प्रस्तुत किया है।
२. 'यशोधरा' के माध्यम से गुप्त जी ने स्त्री विमर्श के लिए एक नया आयाम प्रस्तुत किया है।
३. परम्परागत भारतीय नारी का चित्र यशोधरा के माध्यम से दर्शाया है - 'जाएं, सिद्धि पावें वे सुख से'.
४. शुद्ध परिनिष्ठित खड़ी बोली का प्रयोग।

महत्त्वपूर्ण अवतरण -

"है खटकता एक सब की आँख,
दूसरा है सोहता सुर- सीस पर।
किस तरह कुल की बड़ाई काम
जो किसी में हो बड़प्पन की कमी।"

"मुझे तोड़ लेना बनमाली।
उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक।"

बोधप्रश्न :

'सिद्धि हेतु स्वामी गए' कविता के आधार पर भारतीय नारी के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।
'सिद्धि हेतु स्वामी गए' कविता का कथ्य स्पष्ट कीजिए।

'फूल और काँटा, कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।
'फूल और काँटा' का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।
'पुष्प की अभिलाषा' कविता की मूल संवेदना क्या है ? स्पष्ट कीजिए।
'पुष्प की अभिलाषा' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।

१.५ लघुत्तरी / वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

i) यशोधरा को किस बात का दु:ख है ?

उत्तर यशोधरा को इस बात का दु:ख है कि सिद्धार्थ उसे और राहुल को सोता छोड़ बिना बताये वन में चले गए।

ii) 'सिद्धिहेतु' कौन गए थे ?
उत्तर सिद्धि हेतु, सिद्धार्थ गए थे।

iii) फूल और कांटा किसके प्रतीक हैं ?
उत्तर फूल सज्जन और काँटा दुर्जन व्यक्ति के प्रतीक हैं।

iv) फूल कहाँ पर सुशोभित होता है ?
उत्तर फूल देवताओं के शीस पर सुशोभित होता है।

v) एक ही पौधा किन्हें पालता है ?
उत्तर एक ही पौधा फूल और काँटे दोनों को पालता है।

vi) कॉटा किसकी आँख में खटकता है ?
उत्तर कॉटा सभी की आँख में खटकता है।

vii) पुष्प की अभिलाषा क्या है ?
उत्तर मातृभूमि पर बलिदान होने के लिए जिस रास्ते से वीर जायें उस पथ पर फैंक देने की अभिलाषा पुष्प करता है।

viii) पुष्प किसके गहनों में गूँथे जाने की कामना नहीं रखता।
उत्तर पुष्प सुर –बाला के गहनों में गूथे जाने की कामना (चाह) नहीं रखता।

ix) कौन अपने भाग्य पर इठलाना नहीं चाहता ?
उत्तर पुष्प देवताओं के शीस चढ़ अपने भाग्य पर इठलाना नहीं चाहता।

x) मातृभूमि पर शीश चढ़ाने कौन जा रहे थे।
उत्तर मातृभूमि पर शीश चढ़ाने अनेकों वीर जा रहे थे।

❖❖❖

२

‘झांसी की रानी की समाधिपर’,
‘हिमादि तुङ्ग श्रृंङ्ग से’,
‘सन्ध्या - सुन्दरी’,
‘बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ’

इकाई की रुप - रेखा

२.० उद्देश्य
२.१ प्रस्तावना
२.२ कवि परिचय
२.३ कविता का भावार्थ
२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
  i) कविता की पंक्ति
  ii) संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या, साहित्यिक सौंदर्य / विशेष
२.५ बोधप्रश्न, वस्तुनिष्ठ प्रश्न

२.० उद्देश्य :

इस खंड की दूसरी इकाई में हम चार कवितायें ‘झाँसी की रानी की समाधि पर’, ‘हिमाद्रि तुङ्ग श्रृंङ्ग से’, ‘सन्ध्या –सुन्दरी’, बीन भी हूँ, मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ’, दे रहे हैं। कविता के भावार्थ से पूर्व कवि परिचय दिया जा रहा है। जिससे कवि व उसकी रचनाओं के बारे में जानकारी हो सके। उदाहरण के तौर पर संदर्भसहित स्पष्टीकरण भी दिया जा रहा है। साथ ही कविता की अन्य विशेषताएँ भी दी जा रही हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद –

राष्ट्र प्रेम की भावना का निर्माण होगा।

छायावाद की मुख्य विशेषता रहस्यवादी भावना को समझने में सफलता मिलेगी।

कविता में प्रयुक्त कठिन शब्द व मुहावरों के अर्थ जान सकेंगे।

कविता के भाव पक्ष व शिल्प पक्ष के प्रति व्यापक समझ का निर्माण होगा।

कविता में प्रयुक्त कठिन शब्दों, अलंकारों, शब्द – शक्तियों को जान पायेंगे।

उपर्युक्त विश्लेषण के माध्यम से कविता के महत्त्व को समझने में सफलता मिलेगी।

२.१ प्रस्तावना :

सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता 'झाँसी की रानी की समाधि पर' मैं, झाँसी की रानी द्वारा किये गये बलिदान व स्वतन्त्रता के महत्त्व को बतलाया गया है। लक्ष्मी मर्दानी का चरित्र भारतीय नारी के संघर्ष आत्मसम्मान व गौरव का प्रतीक है।

'हिमाद्रि तुङ्ग श्रृंङ्ग से' कविता में प्रसाद जी अतीत के गौरव का स्मरण कराकर आजादी के लिए संघर्ष की प्रेरणा देते हैं।

'संध्या- सुन्दरी' कविता में निराला जी ने प्रकृति पर मानवी चेतना का आरोप करते हुए संध्या को सुन्दर स्त्री के रुप में प्रस्तुत किया है। प्रकृति पर चेतनता का आरोप छायावाद की प्रमुख प्रवृत्ति है।

'बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ ' कविता में भारतीय दर्शन की मान्यता के आधार पर आत्मा और परमात्मा की एकात्मता को स्वीकारा है। मनुष्य में परमात्मा का अंश वह परमात्मा से अलग होकर छटपटाता रहता है और मिलने पर अपूर्व आनंद का अनुभव करता है। इस गीत में कवयित्री ने अज्ञात प्रियतम के साथ अपना भावनात्मक प्रेम दर्शाया है।

२.२ कवि परिचय :

सुभद्रा कुमारी चौहान (१९०४-१९४५)

सुभद्राकुमारी की कविताओं में राष्ट्रीय संस्कृति व समसामयिक राजनीति तथा इतिहास की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है । राष्ट्रीय संस्कृति, स्वतंत्रता की भावना व राष्ट्रीय अस्मिता सुभद्राकुमारी चौहान के काव्य के प्रमुख विषय रहे हैं।

देश भक्ति की भावना से ओत-प्रोते, सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म सन् १९०४ ई. को प्रयाग के निहालपुर मोहल्ले में हुआ था । सुभद्रा जी का रचनाकाल भारतीय राष्ट्रीय चेतना के विकास में एक युगान्तकारी समय था । सन् १९२० में जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड तथा युद्ध के समय दिये गये आश्वासनों की उपेक्षा एवं अंग्रजों की शोषण नीति के कारण कवयित्री में विद्रोह की भावना का जन्म हुआ।

रचनाएँ

काव्यसंग्रह - मुकुल, नक्षत्र त्रिधारा व सभा का खेल ।

कहानी : बिखरे मोती, उन्मादिनी, सीधे-सादे चित्र।

सुभद्रा जी कवयित्री होने के साथ - साथ राजनीतिक व सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी जानी जाती हैं। वे काफी समय तक मध्यप्रदेश असेम्बली की सदस्या भी रहीं हैं।

'झाँसी की रानी की समाधि पर 'कविता में कवयित्री' झाँसी की रानी की समाधि के महत्त्व को रेखांकित करते हुए उसके द्वारा किये गये बलिदान व स्वतन्त्रता के महत्त्व को प्रतिपादित करती है।

२.३ झाँसी की रानी की समाधि पर : भावार्थ / कथ्य

प्रस्तुत कविता में कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान कहती हैं कि झाँसी की रानी की समाधि में जो राख की ढेरी छिपी हुई है, वह ढेरी उस शहादत का प्रतीक है जिसने देश की स्वतंत्रता की आरती फेरने में अपने आप को कुर्बान कर दिया। लक्ष्मी मर्दानी की यह लघु समाधि वस्तुतः उनकी अंतिम लीला स्थली है। यहीं कहीं पर रानी लड़ते हुए भग्न विजयमाला की तरह बिखर गईं। अंत तक अंग्रेजों के खिलाफ लड़ते हुए वार पर वार सहती रहीं और वीरबाला की तरह लड़ती रहीं। वस्तुतः आहुति की तरह गिरकर वह चिता पर चढ़ी और दिव्य ज्वाला की तरह चमक उठीं। कवयित्री कहती है कि आज जब रानी नही है तब हमें रानी से भी ज्यादा प्यारी उनकी यह समाधि लगती है क्योंकि इस समाधि में स्वतंत्रता के आशा की चिनगारी छिपी हुई है, झाँसी की रानी की इस समाधि से भी अधिक सुंदर समाधियाँ हम संसार में पाते हैं। किंतु उनका गान छुद्र जीव ही किया करते हैं। रानी की इस लघु समाधि की कहानी कवियों की वाणी में अमर है। कवियों की वाणी ने उसके यश को अमर कर दिया है। स्नेह और श्रद्धा के साथ कवियों की वाणी रानी की इस समाधि के महत्व का गुणगान करती है।

बुंदेले हर बोलों के मुख से हमने झाँसी वाली रानी के मर्दानगी की कहानी सुन रखी हैं। वस्तुतः रानी की यह समाधि उनकी चिरसमाधि है। उनकी अंतिम लीला स्थली है, किंतु हमारे लिए दिव्य प्रेरणा का स्रोत हैं।

साहित्यिक सौंदर्य

१. रानी की समाधि स्वतंत्रता संग्राम में प्रेरक का कार्य करती है।
२. लक्ष्मी मर्दानी का चरित्र भारतीय नारी के संघर्ष व आत्मसम्मान तथा गौरव का प्रतीक है।
३. 'आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर' में बलिदान का भाव निहित है।
४. भाषा भाव व विषय के अनुकूल है।

२.३.१ जय शंकर प्रसाद (१८८९-१९३७)

प्रसाद जी बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न, छायावाद के प्रवर्तक कवि होने के साथ-साथ सुप्रसिद्ध नाटककार, निबंधकार, उपन्यासकार एवं कहानीकार भी हैं। आधुनिक हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने में आपका योगदान अप्रतिम है।

जीवन परिचय

प्रसाद जी का जन्म वाराणसी के प्रसिद्ध 'सुँघनी साहु' नामक प्रसिद्ध सात्विक शिवभक्त वैश्य परिवार में सन् १८८९ ई. में हुआ था। प्रसाद जी की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही सम्पन्न हुई। दस वर्ष की अवस्था में बनारस के क्वींस कॉलेज में उनका प्रवेश कराया गया और जब वे बारह वर्ष की अवस्था में सातवीं कक्षा में थे तभी उनके पिता का देहान्त हो गया। उसके बाद, उन्होंने अंग्रेजी, फारसी, संस्कृत, हिंदी तथा उर्दू की शिक्षा घर पर ही ग्रहण की । संस्कृत के पठन-पाठन में इनकी विशेष रूचि थी। प्रसाद जी का काव्यारम्भ ब्रजभाषा से हुआ, किन्तु १९१३-१४ ई. से उन्होंने खड़ी बोली में जो लिखना शुरू किया तो अन्त तक उसी में काव्य-रचना करते रहे। उनकी ब्रजभाषा सम्बन्धी कविताएँ 'चित्राधार' में संकलित हैं तथा खड़ी बोली में लिखी शुरूआती कविताएँ 'कानन-कुसुम' में संगृहीत हुई हैं। इसके बाद उनके 'करुणालय'

'प्रेम–पथिक' महाराणा का महत्व काव्य भी प्रकाशित हुए किन्तु 'झरना' नामक रचना से उन्हें सर्वाधिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई। १९२७ संवर्द्धित रुप से 'झरना' का जो द्वितीय संस्करण प्रकाशित हुआ, उससे हिंदी काव्यधारा को एक नया मोड़ मिला। इसी काव्यधारा को छायावाद के नाम से पुकारा जाने लगा।

रचनाएँ-

प्रसाद जी ने गद्य और पद्य दोनों रूपों में उत्तम साहित्य की रचना की है। उनकी प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं-

क) काव्य कृतियाँ – कानन कुसुम, प्रेम पथिक, चित्राधार, महाराजा का महत्व, करूणालय, लहर, झरना, आँसू, कामायनी।

ख) नाटक – प्रायश्चित, सज्जन, कामना, विशाख, एक घूँट, राजश्री जनमेजय का नागयज्ञ, अजातशत्रु, ध्रुव स्वामिनी, स्कन्द गुप्त, चन्द्रगुप्त, कल्याणी परिणय।

ग) उपन्यास – कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)।

घ) कहानी संकलन – आकाशदीप, आँधी, छाया, प्रतिध्वनि, जाल।

निबन्ध संग्रह – काव्यकला तथा अन्य निबन्ध।

'कामायनी' आधुनिक युग की सर्वश्रेष्ठ कृति व छायावादी महाकाव्य है। 'कामायनी' में कवि ने मनु, श्रद्धा और इड़ा की कथा के द्वारा मानवता के उन्नयन की सिद्धि की गाथा को ही काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। यह कथा प्रधान महाकाव्य न होकर भाव प्रधान महाकाव्य है और छायावादी काव्य की अनोखी उपलब्धि है।

वस्तुत : प्रसाद सौंदर्य एवं प्रेम के अमर कवि हैं, उनके काव्य में निश्छल प्रेम की तीव्र प्यास, शब्द में संगीत व मादक मधुरता है।

२.३.२ हिमांद्रि तुंगश्रृंग से – (हिमाद्रि तुङ्गश्रृंङ्ग से)

प्रस्तुत कविता राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत है और प्रत्येक भारतवासी को आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। प्रसाद जी मुख्यत: कवि है इसी कारण उनके गद्य में भी इनका कवि रूप मुखरित हो गया है। यह कविता उनके प्रसिद्ध नाटक चंद्रगुप्त के चौथे अंक के छठें दृश्य से उद्धृत है। 'चंद्रगुप्त' नाटक में इस प्रयाण गीत को अलका गाती है। कविता प्रतीकात्मक है। 'चंद्रगुप्त' नाटक में भारतीय सेनानी यवनों को भारतभूमि से खदेड़ने को लेकर पूर्ण संकल्पित हैं जिसमें अलका राजनीतिक क्रान्ति का प्रतीक है। चंद्रगुप्त नाटक पराधीन भारत में लिखा गया था। ब्रिटिश हुकूमत का विरोध आमने-सामने करना संभव नहीं था, इसलिए प्रसाद जी ने ऐतिहासिक घटनाओं को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया । कविता का प्रमुख विषय अतीत के गौरव का स्मरण एवं आजादी के प्रति संघर्ष की प्रेरणा है।

कवि कहता है कि हिमालय के उच्च शिखरों से अपने – आप में अत्यन्त सुशोभित भारत माता भारतवासियों को पुकार-पुकार कर कह रही है कि हे भारतवासियो तुम सभी अमर वीर हो और अपनी प्रतिज्ञा पर अड़िग रहने वाले हो। भारत देश की उन्नति अब तुम्हारे हाथों में है, प्रगति का पथ तुम्हारे समक्ष है, इस पर लगातार बढ़ते चलो।

कवि भारतवासियों को प्रोत्साहित करते हुए कहता है – असंख्य कीर्ति रूपी किरणें हम भारतवासियों के मन में दिव्य ज्वाला की तरह फैली हुई है अर्थात हमारी पृथ्वी वीरों के शौर्य से भरी हुई है। अत: मातृभूमि के सच्चे सपूतों, वीरता और साहस के साथ अनवरत आगे बढ़ते

चलो, रूकना तुम्हें शोभा नहीं देता। शत्रु की विशाल सेना रूपी समुद्र को देखकर अपने साहस को मत छोड़ो और उस विशाल समुद्र में समुद्र की अग्नि की तरह जलकर, शत्रु सेना का भस्म कर दो। तुम श्रेष्ठ वीर हो और तुम्हें इस युद्ध में विजयी होना है। हे युवा, तुममें अपार शक्ति है, अतः सारी चिन्ताओं को त्यागकर निरन्तर बढ़ते चलो।

इस प्रकार गेय शैली में रचित यह कविता राष्ट्रप्रेम से भरपूर है तथा आज भी शत्रुदेशों की दुष्प्रवृत्तियों के खिलाफ बल प्रदान करती है। देश की स्वतन्त्रता की पुकार को कवि प्रत्येक भारतीय के मन में जगाना चाहता है।

साहित्यिक सौंदर्य-

१. भारत के नवयुवकों को आह्वान करते हुए प्रसाद जी प्रतीकात्मक रूप से अंग्रेजों को खदड़ने की प्रेरणा देते हैं।
२. कविता का प्रमुख स्वर अतीत के गौरव का स्मरण एवं आजादी के प्रति संघर्ष की प्रेरणा है।
३. 'हिमाद्रि तुङ्गं श्रृंङ्ग से 'कविता 'मार्चिंग सांग' की तरह प्रतीत होती है।
३. इस कविता में कवि ने 'भारत माता' को मानवीय रूप में प्रस्तुत किया है।
४. शब्द चयन, नाद सौंदर्य एवं चित्रात्मक शैली का प्रयोग छायावाद की अपनी विशेषता है।
५. प्रस्तुत कविता की भाषा शुद्ध, संस्कृतनिष्ठ परिनिष्ठित हिन्दी है।

२.३.४ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला ' (१८९७ - १९६१)

आधुनिक काल की हिन्दी की कविता के विद्रोही कवि एवं छायावाद तथा रहस्यवाद के प्रमुख स्तम्भ 'निराला ' जी का जन्म २१ फरवरी सन् १८९७ को बसन्त पंचमी के दिन बंगाल के मिदनापुर जिले के महिषादल राज्य में हुआ था। यहीं राजघराने में रहकर अंग्रेजी, बंगला, संस्कृत आदि भाषाओं का अध्ययन किया। उनका जीवन अनेक अभावों व संघर्षो में गुजरा पर झुकना उन्होंने नहीं सीखा। सन् १९१५ से इन्होंने कविता लिखना शुरू कर दिया था। निराला जी ने कुछ पत्र – पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया।

रचनाएँ-

क) अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकरमुत्ता, अणिमा नयेपत्ते, बेला, अर्चना, आराधना, गीत कुंज आदि काव्य कृतियाँ है।
ख) उपन्यास – अप्सरा, अलका, निरूपमा, प्रभावती, चोटी को पकड़, काले कारनामे, चमेली (अपूर्ण)।
ग) कहानी संकलन - चतुरीचमार, लिली, सुकुल की बीबी, सखी।
घ) निबन्ध संग्रह – प्रबन्ध प्रतिभा, चाबुक प्रबन्ध पद्मा।
ङ) रेखाचित्र – कुल्लीभाट, बिल्लेसुर बकरिहा।
च) आलोचना ग्रन्थ – रवीन्द्र कविता कानन।
छ) अनुवाद – बंगला भाषा के ग्यारह उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद।

संध्या – सुन्दरी –

यह कविता निराला द्वारा रचित 'परिमल' काव्य-संग्रह से ली गयी है। इस कविता का भाव एवं शिल्प पूर्णतः छायावादी है। प्रकृति पर मानवी चेतना का आरोप करते हुए संध्या को एक

सुन्दरी के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो दिवस के अवसान पर आसमान से धीरे – धीरे पृथ्वी पर उतरती है । सर्वत्र नीरवता छाई हुई है। यह नीरवता संध्या सुन्दरी की सखी है। कवि ने 'संध्या सुन्दरी' को नायिका के रूप मे पृथ्वी पर उतारा है। निराला जी कहते हैं कि दिन समाप्त हो रहा है। चारों ओर संध्याकाल का झुट पुट अन्धेरा घिरता आ रहा है जिसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो वह संध्या रूपी सुन्दरी एक अप्सरा की तरह बादलों से घिरे आकाश से धीरे-धीरे पृथ्वी पर उतर रही है। कहने का आशय यह है कि संध्या अचानक नहीं आ जाती बल्कि धीरे-धीरे घिरती आती है।

अन्धकार ही इस संध्या सुन्दरी का आँचल है जिसे उसने अपने वक्ष पर डाल रखा है। परिणामत: आँचल हवा में उड़ नहीं रहा है। क्योंकि, इस समय वायु का संचरण नहीं हो रहा है। इस संध्या सुन्दरी के दोनों अधर अत्यन्त सुन्दर हैं किन्तु वह इस समय गंभीर दिखायी दे रहे हैं। इन अधरों पर किंचित मात्र भी हास नहीं है। आकाश में एक तारा चमक रहा है जो ऐसा लगता है मानो इस सुन्दरी के घुघराले, काले केशों में टंका हुआ कोई पुष्प हो। वह तारा अपने हृदय राज्य की रानी संध्या का अभिषेक (अभिनन्दन) करता हुआ प्रतीत होता है।

आसमान से उतर रही संध्या सुन्दरी पूरी तरह शान्त है। चारों ओर शान्त वातावरण है कहीं कोई शब्द नहीं गूँज रहा है। संध्या समय छायी हुई नीरवता का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि वह संध्या सुन्दरी आलस्य की लता जैसी प्रतीत हो रही है क्योंकि उसकी चाल बहुत धीमी है। वह मन्दगति से पृथ्वी पर उतर रही है। कोमलता की कली नीरवता को देखकर ऐसा लगता है जैसे नीरवता (शान्ति) इस संध्या सुन्दरी की सबसे प्रिय सहेली है, जिसके कन्धे पर अपनी बाँह रखकर यह छाया के समान आसमान से पृथ्वी पर उतरती आ रही है।

इस संध्या सुन्दरी के हाथों में न तो वीणा बज रही है और नही यह प्रेम-गीत का आलाप गुन-गुना रही है। इसके नूपुर भी शान्त है उनमें से कोई रूनझुन आवाज भी नहीं आ रही है। सर्वत्र एक अव्यक्त शब्द 'चुप-चुप' गूँज रहा है मानो हर कोई एक दूसरे को मौन रहने का संकेत कर रहा हो। कहीं कोई आवाज तनिक भी सुनाई नहीं पड़ रही। ऐसा लगता है कि यह 'चुप' शब्द आकाश से लेकर पृथ्वी तक फैला हुआ है। शान्त सरोवर में खिले हुए कमलों के समूह भी शान्त हैं। अपने सौंदर्य पर इठलाने वाली नदी भी शान्त है और मौन का यह स्वर धीर गम्भीर हिमालय की अटल चोटियों में भी गूँज रहा है। जो सागर ऊँची लहरों वाला है और हमेशा अशान्त रहता है, वह भी संध्या समय शान्त हो गया है। पृथ्वी, जल, आकाश, अग्नि और वायु से युक्त इस संसार में सर्वत्र यही 'चुप' अव्यक्त भाव से गूँज रहा है मानो इसके अलावा कहीं कुछ नहीं है।

सर्वत्र छायी नीरवता को देखकर ऐसा लगता है मानो 'संध्या सुन्दरी' ने सबको नशे में उन्मत्त कर दिया है अर्थात् दिन भर के कामकाज से थके प्राणियों को वह इस सुषमा रूपी मदिरा का एक प्याला सस्नेह पिलाकर, उनकी थकान को दूर कर देती है। कहने का आशय यह है कि थके हुऐ प्राणी संध्याकालीन सुन्दरताा को देखकर अपनी थकान भूल जाते हैं।

यह सुन्दर संध्या उन्हें अपनी गोद में सुलाकर विश्राम देती है और नींद में उन्हें मधुर सपनों में खो जाने देती है। आधी रात के समय जब सब कुछ शान्त हो जाता है तब कवि के हृदय में प्रेम की भावना और अधिक बढ़ जाती है और उसके विरह विकल कण्ठ से स्वत: ही 'विहाग' राग फूट पड़ता है।

संध्या – सुन्दरी प्रकृतिपरक कविता है। निराला एक छायवादी कवि थे उन्होंने मानव, प्रकृति एवं भाव तीनों के सौन्दर्य की अभिव्यक्ति इस कविता में की है।

साहित्यिक सौंदर्य

१. संध्या का मानवीकरण कर प्रकृति पर चेतनता का आरोप छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषता

है।

२. 'संध्या सुन्दरी' में रूपक अलंकार है।

३. संध्याकाल में व्याप्त नीरवता के प्रभाव को व्यक्त करने में 'चुप-चुप-चुप' का प्रयोग कवि की कुशलता का प्रतीक है।

४. 'मदिरा की वह नदी बहाती आती' में लक्षणा शब्द शक्ति है।

५. छायावादी भाव एवं शिल्प इस कविता में विद्यमान है।

२.३.५ महादेवी वर्मा - (१९०७-१९८७)

महादेवी वर्मा छायावाद की प्रमुख कवयित्री हैं। हिन्दी साहित्य जगत में जिस किसी ने अपने काव्य में करुणा, विरह एवं वेदना को चित्रित किया है तो उनमें महादेवी जी का नाम ही सर्वोच्च स्थान पर है। महादेवी जी के काव्य में पीड़ा, वेदना, कसक, टीस आदि की प्रधानता है। इसलिए उन्हें आधुनिक मीरा कहा गया है।

कविपरिचय -

महादेवी जी का जन्म उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद नगर में सन् १९०७ में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में संपन्न हुई, साथ ही उन्हें घर पर संस्कृत उर्दू, चित्रकला और संगीत की शिक्षा दी गई । बचपन में ही महादेवी जी का विवाह तो हुआ था पर आपने पति से कोई सम्बन्ध नहीं रखा । आपने अपना सम्पूर्ण जीवन साहित्य साधना और लोकसेवा में लगा दिया।

बचपन में ही आप काव्य रचना करने लगी थीं। आपकी प्रारम्भिक रचनाएँ ब्रजभाषा में लिखी गयी हैं और बाद में संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली में। इनकी रचनाओं में रहस्यवादी भावधारा की प्रधानता पायी जाती है। विरह – वेदना की सशक्त अभिव्यक्ति महादेवी जी के काव्य की अपनी विशेषता है। इनके साहित्यिक, शैक्षणिक व सामाजिक योगदान से प्रभावित हो भारत सरकार ने उन्हें पदमभूषण की उपाधि से सम्मानित किया।

रचनाएँ -

(क) काव्य : नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, यामा, दीपशिखा और परिक्रमा । 'यामा' पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार भी मिला।

(ख) गद्यः अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, मेरा परिवार, श्रंखला की कड़ियाँ आदि।

भावपक्ष की दृष्टि से महादेवी की कविताओं में विरह वेदना, रहस्यवाद एवं छायावाद की विषयगत एवं शैलीगत प्रवृत्तियों का भव्यरूप दिखायी देता है। इन्हें पीड़ा अत्यन्त प्रिय है। इन्होंने प्रभु को पीड़ा में और पीड़ा को प्रभु में खोजने की कोशिश की है। कवयित्री अपने प्रिय से मिलन नहीं चाहती, उन्हें विरह ही प्रिय है। मिलन में वेदना समाप्त हो जाती है। वेदना का दान तो विरह ही देता है।

महादेवी की कविताओं में आरम्भ से ही विस्मय, जिज्ञासा, व्यथा और आध्यात्मिकता के भाव मिलते हैं। ये भाव लगातार प्रौढ़ व परिमार्जित होते गये हैं। उनके गीत भाव प्रधान हैं। उनके विविध गीतों में व्यथा, पीड़ा, आशा, अज्ञात प्रिय के प्रति प्रेम, निवेदन व साधना की विविध अवस्थाओं के दर्शन होते हैं।

महादेवी की भाषा पूर्णतया शुद्ध साहित्यिक व संस्कृत निष्ठ है। उनकी भाषा भावों के संप्रेषण में सहायक होती है। भाषा में संगीतात्मकता व चित्रात्मकता मधुर भावों को सरसता प्रदान करते हैं। आधुनिक हिन्दी साहित्य में कलात्मक भाषा के प्रयोग में महादेवी का स्थान अग्रणी हैं।

'बीन भी हूँ, मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ'(भावार्थ / कथ्य)- मूल रूपसे यह कविता 'नीरजा' काव्य संकलन से है। इस कविता में कवयित्री लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना करती है। उस अज्ञात प्रियतम के प्रति अपना आत्मनिवेदन व्यक्त करते हुए महादेवी ने उससे अपने सम्बन्ध को व्यक्त किया है।

कवयित्री कहती है – हे प्रियतमा मैं तुम्हारी वीणा भी हूँ और उसमें से निकलनेवाली रागिनी भी मैं ही हूँ। अर्थात् जिस प्रकार वीणा बजानेवाला उसमें से मधुर रागिनी के स्वर निकालने में समर्थ होता है उसी प्रकार मैं अपने प्रियतम की वीणा भी हूँ। मुझमें से फूटने वाली रागिनी प्रियतम की देन है। जो माधुर्य मुझमें दिखाई दे रहा है वह उस अज्ञात प्रियतम के कारण ही है।

सृष्टि के प्रत्येक कण-कण में मेरी ही नींद व्याप्त थी पर तुमने ही मुझे पहलीबार जगाकर जगत की धड़कन से मेरा परिचय करवाया। कहने का अभिप्राय यह है कि उस अज्ञात प्रियतम ने मुझे नव चेतना एवं स्फूर्ति प्रदान की । मेरी जड़ता को भंग कर मुझे मेरे अस्तित्व का बोध कराया और मैं जागकर संसार को पहचान सकी। प्रलयकाल में जब सब कुछ नष्ट हो जाता है तब मैं तुममें समा जाती हूँ और सृष्टि में तुम मुझे नया जीवन प्रदान कर मेरे पद चिह्न पृथ्वी पर बनाने में सहायक होते हो। किन्तु जीवन का यह बन्धन मुझे वरदान सदृश प्रतीत होता है क्योंकि में इसमें तुम्हारी यादों में खोई रहती हूँ और लगातार तुम्हारा ध्यान करती रहती हूँ।

वास्तविकता तो यह है कि मैं ही इस जीवन रूपी नदी का किनारा हूँ और मैं ही निरन्तर बहने वाली नदी की धारा हूँ। तटबन्धों के अभाव में नदी का अस्तित्व नहीं है और धारा के अभाव में तटबन्धों का अस्तित्व नहीं है। अत: धारा और धारा के तटबन्धों के रूप में मुझे अपना ही अस्तित्व बोध होता है।

महादेवी जी ने अज्ञात प्रियतम से अपना सम्बन्ध स्थापित किया है तथा प्रेम के प्रचलित प्रतीकों के माध्यम से अपनी भावना को प्रकट किया है। कवयित्री कहती हैं कि हे प्रिय मेरी स्थिति उस प्यासे चातक के समान है जिसकी आँखें लगातार बादलों की ओर टकटकी लगाये रहती हैं – इस आशा में कि कब पानी बरसे और मेरी प्यास बुझे। मैं भी तुम्हारे प्रेम की प्यासी हूँ और हमेशा तुम्हारा इन्तजार मुझे चातक की भाँति रहता है। मैं स्वयं को उस निष्ठुर दीपक की भाँति समझती हूँ जिसके प्राण अपने चारों ओर मंडराने वाले पतंगों में लगे रहते हैं। निरन्तर जलता हुआ दीपक प्रेमी पतंगों की बाट जोहता है उसी प्रकार मैं भी आपकी प्रतीक्षा करती रहती हूँ। मेरा और तुम्हारा प्रेम दीपक पतंगे जैसा है।

जिस प्रकार बुलबुल अपने हृदय में व्याकुलता लिये हुए खिले फूलों की प्रतीक्षा करता है, वही व्याकुलता अपने हृदय में लिए हुए मैं तुम्हारी प्रतीक्षा में रत रहती हूँ। मेरा और तुम्हारा सम्बन्ध शरीर और छाया के समान है। शरीर से उसकी छाया अलगअलग नहीं रह सकती फिर भी वे अलग – अलग ही रहते हैं। भले ही मैं तुमसे दूर हूँ किन्तु अपने आपको अखंड सौभाग्यवती समझती हूँ।

महादेवी का उस अज्ञात प्रियतम के प्रति अपना शाश्वत सम्बन्ध यहाँ विरोधाभास लिए दिखाई देता है। कवयित्री कहती हैं कि मैं एक ऐसी आग हूँ जिससे बर्फ जैसे शीतल जल बिन्दु टपकते हैं। अर्थात् हृदय में प्रिय विरह की आग जलती रहती है और आँखों से आँसू निरन्तर टपकते रहते हैं। मैं स्वयं को ऐसा शून्य मानती हूँ जिसके स्वागत के लिए समय ने पलक पाँवड़े

बिछाये हैं। मेरी इस स्थिति का दायित्व मेरे प्रियतम पर है। मैं कठोर पत्थर के ह्रदय में उत्पन्न होनेवाली रोमांचभरी सिहरन हूँ। अर्थात तुम्हारे स्वरूप की छाया होने से तुम्हारे ही समान सर्वव्यापी हूँ। मैं तुमसे भिन्न नहीं हूँ। आकाश भी मैं ही हूँ और उसमें चमकनेवाली बिजली भी मैं ही हूँ। इस प्रकार मेरा अस्तित्व प्रियतम से अलग नहीं है।

कविता के अंत में महादेवी अपना प्रणय निवेदन परमात्मा के प्रति व्यक्त करती हुई कहती हैं कि हे प्रिय अब मैं यह समझ चुकी हूँ कि नाश और निर्माण की प्रक्रिया भिन्न नहीं है। नाश में भी मैं व्याप्त हूँ और अनन्त विकास में भी । मैं उस ईश्वर में एकाकार होकर उसी का अंश बन गई हूँ अत: जीवन की प्रत्येक गतिविधि में अपने को ही देख रही हूँ। त्याग रूपी दिन प्रकाश की उज्जवलता और आसक्ति रूपी अन्धकार की कालिमा में मुझे ही व्याप्त समझो। अर्थात् त्याग और आसक्ति दोनों ही उस परमात्मा के स्वरूप हैं। मैं ही वीणा हूँ और उसके तारों पर किया गया आघात व उस आघात से उत्पन्न होने वाली झंकार हूँ। मैं ही मधुपात्र हूँ, मैं ही उसमें भरी मदिरा हूँ और मैं ही उस मदिरा की मदहोशी हूँ । मैं अधर भी हूँ और अधरों पर व्याप्त रहने वाली चाँदनी जैसी हँसी भी हूँ।

इसप्रकार महादेवी अपनी रहस्यवादी भावना को व्यक्त करते हुए आत्मा को सर्वव्यापी ठहराती है।

साहित्यिक सौंदर्य –

१. प्रेम के लौकिक प्रतीकों के माध्यम से महादेवी जी ने उस अज्ञात प्रियतम से अपने सम्बन्ध को व्यक्त किया है।
२. अनुप्रास एवं विरोधाभास के साथ उपमा व रूपक की छटा दर्शनीय है।
३. रहस्यसवादी भावना इस कविता में दिखाई देती है।
४. भाषा शुद्ध परिमार्जित खड़ी बोली है।
५. 'आत्मा उसी परमात्मा का अंश है जो सर्व व्यापी है' कहकर कवयित्री अपनी कविता में अद्वैतवाद के दर्शन भी करा देती हैं।

२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

" मदिरा की वह नदी बहाती आती,
थके हुए जीवों को वह सस्नेह
प्याला वह एक पिलाती,
सुलाती उन्हें अंक पर अपने
दिखलाती फिर विस्मृति के वह कितने मीठे सपने।"

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियाँ संध्या - सुन्दरी नामक कविता से ली गई हैं। इसके संपादक डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे जी हैं। कवि यह कविता छायावादी सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित काव्य - संग्रह 'परिमल' में संकलित है। इस कविता को हमारी पाठ्य- पुस्तक 'काव्य-प्रदीप' से लिया गया है।

प्रसंग :

'संध्या - सुन्दरी' आसमान से धीरे -धीरे उतरकर पृथ्वी पर सर्वत्र नीरवता का साम्राज्य फैला देती हैं। ऐसा लगता है जैसे वह मदिरा की नदी बहाकर सबको उन्मत्त करके शय्या पर सुला देती हैं और उन्हें मीठे सपनों में खो जाने को विवश कर देती हैं।

व्याख्या :

दिन ढलते ही धीरे-धीरे रात का अँधेरा चारों ओर छाता जा रहा है। प्रकृति में एक अनोखा परिवर्तन दिखायी देता हैं। संध्या के उस पहर को कवि ने सुन्दर स्त्री की कल्पना में ढाला है। कवि कहता है कि आसमान से धीरे -धीरे उतरने वाली वह 'संध्या- सुन्दरी' वातावरण को इतना मादक (नशीला) बना देती है कि मानो वह मदिरा की नदी बहाती हुई आ रही हो। दिन - भर के काम -काज से थके हुए प्राणियों को वह इस सुषमा रुपी मदिरा का एक प्याला सस्नेह पिलाकर उनकी थकान को दूर कर देती है। भाव यह है कि थके हुए प्राणी संध्याकालीन सुन्दरी को देखकर अपनी थकान भूलकर सो जाते हैं और मधुर सपने देखते हैं जो सपने अधूरे रह गए हैं, उन्हीं में खो जाते हैं।

विशेष या साहित्यिक सौंदर्य :

१. 'मदिरा की वह नदी बहाती आती ' में लक्षणा शब्द -शक्ति है।
२. 'संध्या' का मानवीकरण करके कवि ने प्रकृति पर मानवी चेतना का आरोप किया है।
३. संध्या की बेला थके हुए प्राणियों के लिए विश्राम - दायिनी होती है।
४. छायावादी भाषा एवं शिल्प इस कविता में विद्यमान है।

१. "नाश भी हूँ मैं, अनंत विकास का क्रम भी,
२. त्याग का दिन भी, चरम आसक्ति का तम भी,
३. तार भी, आद्यांत भी, झंकार की गति भी,
४. पात्र भी, मधु भी, मधुप भी, मधुर विस्मृति भी,
५. अधर भी हूँ और स्मित की चाँदनी भी हूँ।।"

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियाँ वेदना की कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा रचित गीत ' बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ, से ली गयी हैं। मूल रुप में यह कविता उनके काव्य - संकलन 'नीरजा' में संकलित है। महादेवी वर्मा आधुनिक युग की मीरा के नाम से जानी जाती हैं। इस गीत में उन्होंने अज्ञात प्रियतम के प्रति अपना आत्म-निवेदन व्यक्त कर उनसे अपना सम्बन्ध बतलाया है।

प्रसंग :

कवयित्री की मान्यता है कि नाश और निर्माण में, त्याग और आसक्ति में, तार और झंकार में, मधुपात्र एवं मदहोशी तथा अधरों और उसकी हॅसी मैं ही व्याप्त हूँ। परमात्मा के प्रति अपने प्रणय निवेदन को महादेवी जी ने इन पंक्तियों में रहस्यवादी दृष्टि से व्यक्त किया है।

व्याख्या :

कवयित्री कहती हैं कि हे प्रिय अब मैं यह समझ सकी हूँ कि नाश और निर्माण अलग - अलग नहीं हैं। नाश में भी मैं व्याप्त हूँ और अनन्त विकास में भी मैं ही व्याप्त हूँ। मैं उस परमात्मा

से एकाकार होकर उसी का अंश बन गयी हूँ। अत: जीवन की हर गतिविधि में अपने को ही देख रही हूँ। त्याग रुपी दिन प्रकाश की उज्जवलता और आसक्ति रुपी अन्धकार की कालिमा में मुझे ही व्याप्त समझो। अर्थात, त्याग और आसक्ति दोनों ही उस परमात्मा के स्वरुप हैं। मैं ही वीणा, उसके तारों पर किया गया आघात और उस आघात से उत्पन्न होने वाली झंकार हूँ। मैं ही मधुपात्र हूँ, मैं ही उसमें भरी मदिरा हूँ और मैं ही उस मदिरा की मदहोशी हूँ। मैं अधर भी हूँ और अधरों पर व्याप्त रहने वाली चाँदनी जैसी हँसी भी हूँ।

विशेष या साहित्यिक सौंदर्य :

(१) महादेवी जी ने रहस्यवादी भावना के फलस्वरुप आत्मा को सर्वव्यापी कहा है।
(२) स्मित की चाँदनी में रुपक अलंकार हैं।
(३) समग्र छन्द में रहस्यवादी भावना हैं।
(४) छायावादी भाषा - शिल्प का प्रयोग है।
(५) आत्मा उसी परमात्मा का अंश है जो सर्व व्यापी है। उसके अद्वैतवाद को यहाँ स्वीकारा गया है।

महत्त्वपूर्ण अवतरण :

१) सपूत मातृभूमि के रुको न शूर साहसी!
अराति सैन्य सिंधु मैं, सुवाडाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो, बढ़े चलो, बढ़े चलो।।"

२) "इस समाधि में छिपी हुई है
एक राख की ढेरी।
जलकर जिसने स्वतन्त्रता की
दिव्य आरती फेरी।

२.५ बोध प्रश्न :

१. 'झाँसी की रानी की समाधि पर' कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।
२. 'झॉसी की रानी की समाधि' को देखकर कवयित्री को कैसा अनुभव हुआ ? स्पष्ट कीजिए।

३. 'हिमाद्रि तुङ्ग श्रृंङ्ग से' कविता में व्याप्त राष्ट्रीयता की भावना पर प्रकाश डालिए।
४. 'हिमाद्रि तुङ्ग श्रृंङ्ग से 'कविता की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।
५. 'संध्या - सुन्दरी' के रुप का वर्णन कवि किस प्रकार करता है ?स्पष्ट कीजिए।
६. 'संध्या - सुन्दरी' कविता का कथ्य अपने शब्दों में लिखिए।

७. 'बीन भी हूँ, मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ' गीत में व्यक्त कवयित्री की संवेदना पर प्रकाश डालिए।
८. 'बीन भी हूँ, मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ' कविता का केन्द्री भाव लिखिए।

लघुत्तरी / वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

i) इस समाधि में क्या छिपी हुई है ?
उत्तर इस समाधि में मृत झाँसी की रानी की राख की ढेरी छिपी हुई है ।

ii) यह लघु समाधि किसकी है ?
उत्तर यह लघु समाधि झाँसी की रानी की है ।

iii) इस समाधि में किसके फूल संचित हैं ?
उत्तर इस समाधि में झाँसी की रानी के फूल (अस्थियॉ) संचित हैं।

iv) रानी से भी अधिक हमें क्या प्यारी है ?
उत्तर रानी से भी अधिक हमें उसकी समाधि प्याारी है ।

v) पुण्य पंथ कैसा है ?
उत्तर पुण्य पंथ प्रशस्त है।

vi) भारतमाता किसे पुकार रही है ?
उत्तर भारत माता अपने अमर वीर पुत्रों को पुकार रही है।

vii) संध्या - सुन्दरी कहाँ से उतर रही है ?
उत्तर संध्या - सुन्दरी आसमान से उतर रही है ।

viii) संध्या - सुन्दरी के अधर कैसे हैं।
उत्तर संध्या - सुन्दरी के अधरों का वर्णन करते हुए कवि कहता है - मधुर - मधुर हैं दोनों उसके अधर।

ix) संध्या - सुन्दरी किसकी नदी बहाती आयी है ?
उत्तर संध्या - सुन्दरी मदिरा की नदी बहाती हुई आयी है ।

x) 'बीना भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ' इस पंक्ति का अर्थ क्या है।
उत्तर महादेवी जी अज्ञात प्रियतम को सम्बोधित करते हुए कहती हैं - मैं तुम्हारी वीणा भी हूँ और उसमें से निकलने वाला स्वर भी मैं ही हूँ।

xi) 'नयन में जिसके जलद वह तृषित चातक हूँ' में कवयित्री ने अपनी उपमा किससे की है ?
उत्तर इस पंक्ति में कवयित्री ने अपनी उपमा तृषित चातक से की है।

xii) 'मधु भी, मधुप भी,मधुर विस्मृति' में कौनसा अलंकार है ?
उत्तर इस पंक्ति में अनुप्रास अलंकार हैं।

xiii) 'स्मित की चॉदनी भी हूँ' में कौन -सा अलंकार है ?
उत्तर इस पंक्ति में रुपक अलंकार है ।

xiv) 'बीन भी हूँ, मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ, गीत में छायावाद की कौन-सी विशेषता सर्वाधिक है ?
उत्तर 'बीन भी हूँ, मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ। गीत में छायावाद के अन्तर्गत आने वाली रहस्यवाद की प्रवृत्ति सर्वाधिक है।

xv) 'बीन भी हूँ, मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ, नामक गीत किस संकलन में संकलित है ?
उत्तर यह गीत महादेवी जी के 'नीरजा' काव्य संकलन में संकलित है।

३

‘कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, ‘हिमालय’, ‘कलगी बाजरे की’, ‘अकाल और उसके बाद’

इकाई की रुप - रेखा

३.० उद्देश्य
३.१ प्रस्तावना
३.२ कवि परिचय
३.३ कविता का भावार्थ
३.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
  i) कविता की पंक्ति
  ii) संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या, साहित्यिक सौंदर्य / विशेष
३.५ बोध, वस्तुनिष्ठ प्रश्न

३.० उद्देश्य :

इस खंड की तीसरी इकाई में हम चार कविताएँ ‘ कवि , कुछ ऐसी तीन सुनाओ, ‘हिमालय’ ‘कलगी बाजरे की, अकाल और उसक बाद, दे रहे हैं। कविता के भावार्थ से पूर्व कवि का परिचय दिया जा रहा है। जिससे, कवि व उसकी अन्य रचनाओं के बारे में जानकारी हो सके। संदर्भ - सहित स्पष्टीकरण भी दिया जा रहा हैं। साथ ही, कविता की अन्य विशेषताएँ भी दी जा रही है। इस इकाई को पढ़ने के बाद राष्ट्र प्रेम की भावना का निर्माण होगा।

प्राचीन भारत के ऐतिहासिक गरिमामय स्वरुप को व आज जो देश की वास्तविक स्थिति है उसे समझने में सफलता मिलेगी। सामाजिक समझ को व्यापक बनाने में कविता मद्द करेगी। कविता के भाव पक्ष व शिल्प पक्ष की विशेषताएँ समझ सकेंगे। साहित्यिक अभिरुचि का निर्माण होगा।

समाज के प्रति संवेदनशीलता का भाव जागेगा।

कविता में प्रयुक्त कठिन शब्दों, मुहावरों व अलंकारों के अर्थ जान सकेंगे और कविता के महत्त्व को समझ सकेंगे।

३.१ प्रस्तावना :

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' द्वारा रचित कविता 'कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ में 'नवीन' जी काव्य में परिवर्तन चाहते हैं ताकि व्यवस्था में परिवर्तन हो सके। प्राचीन नख - शिख वर्णन की कविता की परिपाटी को बदलकर क्रान्ति की कामना करते हैं।

'हिमालय' कविता में कवि 'दिनकर' जी ने भारत की ऐतिहासिक गरिमा, प्राकृतिक सौंदर्य, भौगोलिक महत्त्व व सांस्कृतिक महत्त्व का सुन्दर चित्रण किया है। साथ ही, अपने देश की वास्तविक स्थिति के प्रति सन्ताप भी व्यक्त किया है।

'कलगी बाजरे की' कविता में कवि 'अज्ञेय' जी ने अपनी प्रेमिका के लिए नवीन उपमानों का प्रयोग किया है और अपने इस प्रयोग को न्याय संगत माना है।

'अकाल और उसके बाद' कविता में कवि नागार्जुन ने अनेकों प्रतीकों के माध्यम से अकाल का वर्णन किया है। साथ ही आम आदमी की स्थिति को भी उजागर किया है।

३.२ कवि परिचय :

बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन'(१८९७-१९६०)

साहित्य और राजनीति दोनों में अपनी पहचान बनाने वाले बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन' आधुनिक हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रमुख कवि रहे हैं।

'नवीन' जी का जन्म ८ दिसम्बर १८९७ ई. में ग्वालियर के भयाना नामक गाँव में हुआ। गाँव का सहज जीवन और अर्थाभाव उनके चिरपरिचित मित्र थे। विपरीत परिस्थितियों से जूझकर वे 'नवीन ताकत 'के साथ फिर-फिर खड़े रहे। जीवन की हर चुनौती को स्वीकार कर एक 'नया मनुष्य' बनने की ललक उनमें थी। 'नवीन' उपनाम अपनाकर, कलम को अपना साथी बनाकर उन्होंने जीवन संग्राम की यात्रा की।

गाँधीजी के सत्याग्रह आन्दोलन से प्रभावित होकर कॉलेज की शिक्षा छोड़ वे राजनीति में प्रवेश कर गये। गणेश शंकर विद्यार्थी के सम्पर्क में आने पर उनके जीवन में एक नया मोड़ आया। विद्यार्थी जी के पत्र 'प्रताप' से जुड़कर उनके लेखन को एक नयी दिशा मिली। राष्ट्रीय आन्दोलनों में इनका सहयोग सराहनीय रहा। अपनी जेल यात्रा के दरम्यान ही इन्होंने 'उर्मिला' प्रबन्ध काव्य की रचना की।

रचनाएँ-

कुंकुम, रश्मिरेखा, अपलक, क्वासि, विनोबा स्तवन, उर्मिला प्राणार्पण हमविषपायी जनम के, यौवन मदिरा की पावस पीड़ा, स्मरण द्वीप मृत्युधाम या सॉझ आदि।

सन १९१८ में 'सरस्वती' में प्रकाशित उनकी सन्त कहानी व विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उनके वक्तव्यों से उनका गद्य रूप भी चर्चित रहा।

पत्रकारिता – दैनिक 'प्रताप' व 'प्रभा'।

३.३ कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ - भावार्थ / कथ्य :

१) कवि 'नवीन' काव्य में परिवर्तन चाहते हैं ताकि व्यवस्था में परिवर्तन हो। प्राचीन नख-शिख वर्णन की कविता जिसमें देश की किसी समस्या को नहीं उठाया गया था उस परिपाटी को बदलकर, क्रान्ति की कामना करते हैं।

२) 'कवी कुछ ऐसी तान सुनाओ' विद्रोही स्वर में रचित, नयी व्यवस्था की मांग कर रही हैं। क्रान्ति के अग्रदूत बनकर कवि अन्य कवियों से कहते हैं कि कवि कुछ ऐसी रागिनी छेड़ो (गाओ) जिससे समस्त देश में क्रान्ति की लहर फैल जाए और समाज की सोच में परिवर्तन दिखायी दे। नवनिर्माण की प्रक्रिया में कवि का योगदान अतुलनीय है। अन्य देशों का इतिहास देखे तो वहाँ की क्रान्ति में वहाँ के साहित्यकारों की अहम् भूमिका रही है। कवि भारतीय व्यवस्था में बदलाव की अपेक्षा रखता है पर यह कार्य जनता द्वारा ही संभव है। जनता के विचारों में बदलाव एक कवि ही कर सकता है क्योंकि उसकी लेखनी में अपार शक्ति होती है। कवि कहता है ऐसी क्रान्ति की लहर देश में छा जाए कि विदेशी हुकुमत को अपने प्राण बचना कठिन हो जाए। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में उथल-पुक्षल मच जाए। जो गलत है, विष है, बुरा है, अनैतिक है उसका ध्वंस होना भी आवश्यक है।आसमान से आग के अंगारे पृथ्वी पर ऐसे गिरें कि जिसमें समस्त धरती और आकाश नष्ट होजाएँ। पाप-पुण्य, सद्भावना ये सब धूल के समान उड़कर दाएं-बाएं (इधर-उधर) हो जायें ताकि देश में एक नव निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो। कवि की कविता में व्याप्त विद्रोह से आकाश का हृदय फट जाये, तारे टूटकर गिर जायें। हे कवि कुछ ऐसा करो कि जिससे परिवर्तन शीघ्र आये।

पुनः कवि कहता हैं कि हे 'कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओं' कि माँ का अमृतमय दूध विषाक्त हो जाए, आंखों का पानी सूख जाए, मूढ विचारों की आधार शिला डग-मगा जाए। सदियों पुरानी कायरता कॉपने लगे, रूढ़िबद्धता नष्ट हो जाए, वर्तमान का अभिशाप एवं भविष्य की अनेक बाधाएँ दूर हो जाएँ। हे कवि कुछ ऐसा करो कि मूढ़ विचारों की अचल शिला जो मानव जीवन के विकास में व मानव धर्म में बाधक बन रही है वह दूर हो जाए। कवि की तान से गर्जना का ऐसा स्वर निकले की सम्पूर्ण धरती कॉप उठे। सम्पूर्ण ब्रह्मांड में विनाशक की ध्वनि फैल जाए। हे कवि, कुछ ऐसा राग गाओ कि जिससे भूमण्डल में उथल-पुथल मच जाए।

नियम व उपनियमों के बीच जकड़ा समाज बंधन मुक्त हो जाए। विश्वंभर की पोषक वीणा के सब तार मूक हो जाएं, शांति का दंड टूटे, महारूद्र का सिंहासन थर्रा उठे। हे कवि कुछ ऐसा राग गाओ कि जिससे महानाश की प्रलयकारी आँख खुल जाएँ।

कवि स्वयं आज इसी प्रकार के राग का आवाहन करता हुआ कहता है कि मेरी वीणा में औरों को उत्तेजित करने वाली और विध्वंश को बढ़ावा देने वाली – चिनगारियों ने आकर स्थान ले लिया है। ध्वनि उत्पादन में सहायक अंगुलियाँ ऐंठ गई हैं और उनमें अवस्थित ध्वनि उत्पादक छल्ला भी टूटन का शिकार हो गया है। वह आगे कहता है कि मेरा कंठ अवरूद्ध होता जा रहा है। फलस्वरूप महाविनाश का गीत भी अवरूद्ध होने की कगार पर है। कुछ ही क्षणों में मेरे हृदय की दाहक अग्नि प्रज्जवलित कर उनके मनों का असंतोष से भर देगी और नये संघर्ष का बढ़ावा देगी। मेरे इस दाहक गायन के स्वर में जंगल राज व्याप्त हो गया है। इस प्रकार रूके हुए गीत की असंतोष पैदा करने वाली तान मेरे अतःकरण से निकली हुई, अंतःकरण की पुकार है।

कवि आगे कहता है कि यह असंतोष पैदा करने वाला स्वर कण-कण में व्याप्त हो गया है, यहाँ तक कि मेरे रोम-रोम से उच्चारित होने लगा है। यह विषैला गान फणिधर सर्प की पुकारों तक में चिन्तन की मणि के रूप में व्याप्त हो गया है। क्रान्ति की इस ध्वनि से जीवन ज्योति लुप्त होने

वाली है और उसे संरक्षित करने वाला समय भी अब बीत चुका है। सृष्टि की विनाशक श्रृंखला सब कुछ निगल जाना चाहती है। वह संसार को विनष्ट करने हेतु संपूर्ण ब्रह्मांड का विनाश के स्वर से गुंजायमान कर देना चाहता है। वह पुनः कहता है कि इसी अवरूद्ध गीत की क्रोध से भरी हुई तान मेरे अंतःकरण की पुकार है। दीपों की लौ को हाथों से मसल-मसल कर बुझाने से उनमें जो तपन-पीड़ा आ गयी है उसे वह मेंहदी रचा रचा कर शान्त कर, दूर कर देता है। और, इस प्रकार एक - एक अंगुली के परिचालन द्वारा उत्पन्न विनाशक ताण्डव नृत्य को तुम स्वयं देख-सुन अनुभव करो, ऐसा आह्वान करता है। कवि कहता है कि संसार में जो मूर्ति के समान लोग है, वह हट जायें क्योंकि जनता अब कठोर प्रहार नहीं सहेगी। पृथ्वी टुकडों में विभाजित हो नष्ट हो जायेगी, फिर कुछ भी नहीं बचेगा अर्थात एक नये जगत का निर्माण होगा। समाजवादी विचारों के प्रवर्तक 'नवीन' जी समाज में व्याप्त बराइयों व मूलभूत सुविधाओं के अभाव को देखकर क्रान्ति की पुकार करते हैं। कवि कहता है कि आज मैंने अपनी आँखो से सब कुछ देख लिया है और जीवन के सभी राजों (रहस्यों को) समझ भी लिया । पृथ्वी पर, मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जो सुविधाएँ होनी चाहिए, उसके न होने के क्या कारण ? अर्थात् कवि यह जान चुका हैं कि सामाजिक समता, स्वतन्त्रता, समानता व न्याय के लिए एक कुत्सित व्यवस्था का अंत व जन कल्याणकारी व्यवस्था का होना जरूरी है। यही कारण है कि कवि जीवन के गीत न गाकर मृत्यु के गीत गाना चाहते हैं क्योंकि मृत्यु (प्रलय) के बाद नये जीवन का सूत्रपात हो सकेगा। कवि विश्व निर्माता को भी चुनौती देते हुए प्रतीत होते हैं, उनकी यह चुनौती पूँजीवादी समाज एवं साम्राज्यवादी ताकतों के विरूद्ध है।

कवि का कहना है कि शब्दों में क्रान्ति की शक्ति होती है अतः वे ऐसी तान छेड़ना चाहते हैं जिससे परिवर्तन शीघ्र हो जाए। यद्यपि, इस प्रक्रिया में बहुत कुछ नष्ट हो जायेगा पर परिवर्तन के लिए यह जरूरी है। क्रान्ति में बहुत कुछ खोना पड़ता है पर उसके बाद जो प्राप्त होता है वह संतोषजनक होता है।

साहित्यिक सौंदर्य-

१. प्रस्तुत कविता क्रान्ति दर्शन की है, कवि आमूल-चूल परिवर्तन का आकांक्षी है।
२. भाषा शुद्ध साहित्यिक, संस्कृत निष्ठ व ओजपूर्ण है।
३. अनुप्रास की छटा दर्शनीय है- 'टूक-टूक', रोम-रोम आदि।
४. कविता में विनाश की कामना के पीछे नव-निर्माण की आकांक्षा है।
५. यह कविता गुलामी की जंजीरे तोड़ने और उथल-पुथल मचा देने का आह्वान करती है।

कवि परिचय : रामधारी सिंह 'दिनकर' (१९०८-१९७४)

'दिनकर'परिचय : जन चेतना के गायक के रूप में जाने जाते हैं। भारत की स्वतन्त्रता से पूर्व आप लगातार अपनी कविताओं में ब्रिटिश साम्राज्य का विरोध करते रहे और स्वतन्त्रता मिलने के बाद देश की सामाजिक प्रगति न होते देखकर, आपके हृदय में आग की प्रचंड ज्वाला भभक उठती है।

कवि 'दिनकर' जी का जन्म सन १९०८ ई. में बिहार मुंगेर जिले सिमरिया घाट नामक गॉव में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर हुई। 'दिनकर' जी कई भाषाओं के कुशल ज्ञाता थे तथा इतिहास, दर्शन, राजनीति व संस्कृति के प्रति इनकी गहरी रूचि थी।

सन १८५६ में राष्ट्रभाषा आयोग के सदस्य चुने गए। पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित, संसद सदस्य व राष्ट्रकवि के रूप में प्रख्यात हैं।

रचनाएँ-

काव्य – रेणुका, रसवंती, द्वन्दगीत, सामधेनी, बापू, कुरूक्षेत्र, मगध महिमा, इतिहास के आँसू, दिल्ली, नीलकुसुम नीम के पत्ते, रश्मिरथी, धूप और धुआँ, सीपी और शंख, हुँकार, वारदोली, विजय, चक्रवाल , उर्वशी।

आलोचना और निबन्ध-

अर्द्धनारीश्वर, मिट्टी की ओर, रेती के फूल, हमारी सांस्कृतिक एकता, पंत, प्रसाद, मैथिलीशरण काव्य की भूमिका।

संस्कृति और इतिहास – संस्कृति के चार अध्याय।

बालोपयोगी- चित्तौड़ का साका, मिर्चों का मजा, सूरज का ब्याह, धूप छाँह।

हिमालय – भावार्थ / कथ्य

दिनकर राष्ट्रीय चेतना के कवि हैं। इनकी कविताओं में अखण्ड देश प्रेम, अतीत का गौरव, भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान व वर्तमान पर खेद दिखायी देता है। 'हिमालय' कविता में कवि ने भारत की ऐतिहासिक गरिमा, प्राकृतिक सौंदर्य, भौगोलिक महत्त्व और सांस्कृतिक वैभव का सुन्दर चित्रण किया है। साथ ही, देश की वास्तविक स्थिति को भी उजागर किया है।

कवि ने 'हिमालय' को साकार, दिव्य, गौरव विराट्, पौरूष के पुंजी भूत ज्वाल के रूप में देखा है अर्थात् हिमालय पौरूष की साकार प्रतिमा के रूप में स्थापित है। भारतमाता का हिम किरीट है। भारत के दिव्य ललाट के रूप में हिमालय युग-युग से अजेय, निर्बन्ध, मुक्त एवं पवित्रता का वितान ओढ़े हुए हैं। वह गर्वोन्नत एवं नित्य ही महान रहा है फिर भी कवि हिमालय से पूछना चाहता है कि तुम सीमाहीन आकाश में किस महिमा का वितान तान रहे हो? अर्थात् कवि हिमालय की अटलता पर प्रश्न चिह्न लगाते हुए पूछता है कि हे नगपति! हे सन्यासी प्रवर! आज, जब देश अनेक समस्याओं से जूझ रहा है पराधीनता का दुःख उसे खाये जा रहा है तथापि तुमने अखंड चिरसमाधि ले ली है। क्या तुम इस महाशून्य में जटिल समस्या का समाधान खोज रहे हो? तुम्हारे इस अखंड समाधि का अंत कब होगा? कवि के कहने का अभिप्राय यह है कि देश के कोने-कोने से तड़पती आवाजें हिमालय को क्यों सुनाई नही दे रही हैं? उसकी ध्यानावस्था कवि के मन को झकझोर रही है। हे हिमालय ! एक पल के लिए तो अपनें नेत्रों को खोलकर देखो कि अपना देश किन विषम परिस्थतियों से गुजर रहा है। अर्थात् देश के वैभव के मिट जाने पर भी हिमालय के समान तपस्वी लोग ध्यान मग्न ही रहे। दिनकर जी कहते हैं कि सिन्धु, गंगा, यमुना ब्रह्मपुत्र आदि नदियों की अमृतधारा को इस पवित्र भूमि पर भेजकर तुमने अपनी करूणामय उदारता का परिचय दिया था, पर अब मौन व्रत क्यों धारण कर लिया है? हे हिमालय, तुमने अनादि काल से भारत की रक्षा की है फिर आज जब देश को तुम्हारी आवश्यकता है तो तुम उसकी पुकार पर क्यों ध्यान नहीं दे रहे हो। अर्थात् भारत की गरिमा और उसके स्वाभिमान को क्यों बचाने का प्रयत्न नहीं कर रहे हो? लेकिन, भारत पर ऑच आने से पहले, मैं मर जाना चाहता हूँ। इस प्रकार कवि, भारतवासियों में देश प्रेम की भावना जगाना चाहता है।

कवि भारत की दुखद स्थिति को, करूण स्वर में किमालय से निवेदित करते हुए कहते हैं कि हे नगपति! आज हमारी इस पवित्रभूमि पर गहन संकट आ पड़ा है। समस्या रूपी सर्प चारों ओर से डस रहे हैं। व्याकुल होकर तेरी सन्तान तड़प रही है। अर्थात् अनेक समस्याएँ व अभावग्रस्त जीवन सर्प के रूप में चारों ओर मंड़रा रहे हैं, देश का वैभव छिन्न-भिन्न हो गया है और तू अभी भी ध्यान मग्न है। देश की वर्तमान स्थिति को देखकर कवि ऐसा महसूस करता है

कि आज देश को ऐसे वीरों की आवश्यकता है जो देश के लिए मर मिटें। कवि कहता है कि हे हिमालय, हमारे देश पर दूसरे शासक आकर हमारी मणियों को और वैभव को चुरा ले गये, मेरा देश वीरान हो गया फिर भी तू ध्यान मग्न ही बैठा रहा। अर्थात् भारत के स्वर्णिम अतीत की ओर संकेत कर कवि यह कहना चाहता है कि अब जो कुछ बचा है उसे हे भारतवासियों, बचा लो अन्यथा मेरा देश वीरान हो जायेगा। द्रौपदी की भॉति अनेक अबलाओं ने अपनी अस्मिता को खो दिया, कितनों का असमय अंत हुआ, शोषण हुआ फिर भी तू अभी तक मौन बैठा है। कवि को चित्तौड़ के प्रथम वीर महाराणा प्रताप का स्मरण हो आता है जिन्हें स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए वन-वन की खाक छाननी पड़ी थी, फिर भी, गर्व से अपने मस्तक को ऊँचा उठाये रखा था।

देश पर छायी विषम परिस्थतियों में कवि उन हिमालय पुत्रों की याद करते हैं जिन्होंने देश के विभिन्न भूभागों की समय-समय पर रक्षा की है। हे हिमपति, तेरा वह राजस्थान कहाँ हैं? अर्थात् इस भारत देश के वीर पुरूष कहाँ है? जंगल-जंगल स्वतन्त्रता की पुकार करने वाले वे बलवान कहाँ है? हे नगपति! अब तो अपनी आँखे खोलिए। अर्थात् आजादी के बावजूद भी देश के हालात पूरी तरह नहीं सुधरे। आज भी साम्राज्यवादी एवं सामंतवादी दृष्टिकोण का बोलबाला है, बेरोजगारी, भ्रष्ट्राचार, जाति-पांति संप्रदायवाद, अंधविश्वास आज भी देश में व्याप्त हैं। इन्हें अपने देश से दूर करने के लिए प्रत्येक भारतवासी को जागना होगा।
कवि हिमालय के माध्यम से अपने देश के सन्ताप को व्यक्त करता है।

साहित्यिक सौंदर्य-

१. हिमालय का मानवीकरण करते हुए कवि ने प्रकृति पर मानवी चेतना का आरोप किया है।
२. हिमालय कविता राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत है।
३. युग-युग, किन-किन में अनुप्रास की छटा दर्शनीय है।
४. भाषा शुद्ध साहित्यिक एवं ओजगुण प्रधान है।
५. 'हिमालय' भारतीय संस्कृति के अस्तित्व एवं अस्मिता का प्रतीक है।

कविपरिचय :

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (१९११-१९८७)

'अज्ञेय' हिंदी काव्य जगत के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर रहे हैं। प्रयोगवादी कविता के प्रतिष्ठापक के रूप में अज्ञेय की विशेष ख्याति रही है कविता के साथ-साथ अज्ञेय ने कहानी और उपन्यास भी लिखे हैं। कविता, कहानी तथा उपन्यास इन समस्त विधाओ में अज्ञेयजी ने नये प्रयोग किए हैं। साहित्य सर्जना के साथ – ही – साथ अज्ञेय युवा क्रांतिकारी व प्रखर पत्रकार भी थे। देश, विदेश के अनेक विश्वविद्यालयों में वह कला, संस्कृति और साहित्य के अतिथि अध्यापक रहे। साथ ही सैनिक, विशाल भारत, प्रतीक, वाक, दिनमान, एवरीमैन और नवभारत टाइम्स में भी आपने संपादन का कार्य किया।

अज्ञेयका जन्म उत्तर – प्रदेश के कुशीनगर जनपद के प्रसिद्ध बौद्ध स्थल कसया के पास ७ मार्च १९११ई. को हुआ था। अज्ञेय में संवेदना के साथ एक सजग बौद्धिकता है। उनकी कविताओं में मानव के प्रेम रूप, यौवन, आनन्द, भोग तथा विरह का वर्णन भी दृश्यमान है। कुछ कविताओं में आज के तनाव और दबावपूर्ण मानव जीवन का करूण क्रन्दन भी है।

रचनाएँ -

काव्य : भग्नदूत, चिन्ता, इत्यलम्, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इन्द्र धनु रौंदे हुये, अरी ओ करूणा प्रभामय, आंगन के पार द्वार, सुनहरे शैवाल आदि

कितनी नावों में कितनी बार काव्य –संग्रह ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित है।

उपन्यास - शेखर – एक जीवन, भाग १,२, अपने-आपने अजनबी

कहानी – संकलन :- 'विषमता', 'कोठरी' की बात, 'शरणार्थी' इत्यादि।

इतके अतिरिक्त अरे यायावर रहेगा याद, एक बूंद सहसा उछली (यात्रा वृतान्त), स्मृति लेख (संस्मरण), त्रिशुंक, आत्मनेपद, आलबाल, योग लिखी, स्त्रोत और सेतु, सम्ब त्सर अद्यतन आदि (आलोचना ग्रंथ) भवन्ती, अंतरा, शाश्वती (अन्तः क्रियाएँ) तथा बहुचर्चित चार सप्तकों के सम्पादित काव्य संकलन।

कलगी बाजरे की – भावार्थ / कथ्य

'कलगी बाजरे की' मूलतः एक प्रयोगवादी रचना है। इस रचना में कवि परंपरागत उपमान से हटकर अपनी प्रेमिका के लिए नवीन उपमान बाजरे की कलगी का प्रयोग करता है और अपने इस प्रयोग को न्यायसंगत ठहराता है।

कवि अज्ञेय अपनी नायिका को 'हरी बिछली घास' तथा 'बाजरे की छरहरी कलगी' कहते हैं। वे अपनी नायिका को ललाती सांझ के नभ की तारिका अथवा शरद की कुमुदिनी अथवा चंपे की टटकी कली नहीं कहना चाहते। क्योंकि उन्हें लगता है कि ये सारे उपमान सदियों से प्रेमिका के लिए प्रयुक्त होते आए हैं। अतः ये मैले पड़ चुके हैं। कवि कहता है कि इन प्रतीकों के देवता इन प्रतीकों को छोड़कर कब का निकल गए हैं। जैसे- बर्तन को अधिक घिसने से बर्तन का मुलम्मा छूट जाता है और बर्तन भद्दा दिखने लगता हैं, वैसे ही ये उपमान इतने अधिक प्रस्तुत किए जा चुकें हैं कि इनकी चमक गायब हो गई है।

कवि कहता हे कि तुम्हें 'बिछली घास' अथवा 'कलगी छरहरे बाजरे की' का उपमान देना ज्यादा सार्थक है। कवि यह भी कहता है कि आज हम शहरातियों के जीवन का सौंदर्य बोध बदल गया है। आज हमें गमले में खिली हुई जूही में ज्यादा सौंदर्य नजर आता है। सृष्टि के ऐश्वर्य और औदार्य में यदि सौंदर्य को देखना हैं तो वह सच्चे अर्थों में बिछली घास तथा इस दोलती बाजरे की कलगी मे ही दिखाई पड़ेगा। सृष्टि के इस सौंदर्य को जब कवि देखता है तब – तब उसे सृष्टि के सौंदर्य में संपूर्ण समर्पण की स्थिति नजर आती है।

साहित्यिक सौंदर्य

१. यह कविता प्रयोगवादी कवि के प्रयोगधर्मी दृष्टिकोण का प्रतिफलन है। नवीन उपमानों के प्रयोग की परंपरा में यह कविता आती है।

२. यह कविता प्राकृतिक सौंदर्य को उसके उन्मुक्त व सहज रूप में देखने की प्रेरणा देती है। गमले में तराशी गई प्रकृति इस उन्मुक्त रूप के सौंदर्य का मुकाबला नहीं कर सकती।

प्रस्तुत कविता प्राकृतिक सौंदर्य को उसके उन्मुक्त व सहज रुप में देखने की प्रेरणा देती है।

३. अज्ञेय 'जी ने बिछली घास'तथा 'दोलती कलगी' छरहरी बाजरे की कहकर नायिका के लिए सर्वथा नूतन उपमानों का प्रयोग किया है जो नायिका के शरीरांगों की कोमलता, उसके छरहरेपन के लिए अत्यंत उपयुक्त हैं।

४. भाषा विषयानुकूल है।

कवि परिचय :

नागार्जुन (१९११-१९९८)

प्रगतिवादी काव्य धारा में सर्वाधिक चर्चित और महत्वपूर्ण नाम नागार्जुन का ही है। वे जन्म से ही शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने वाले विद्रोही प्रकृति के कवि थे। इनका मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र हैं। ' नागार्जुन ' और यात्री नाम से प्रायः उनकी रचनाएँ मिलती हैं। कबीर, नागा व चाणक्य विभिन्न नामों से वे जाने जाते हैं। उनका जन्म अपने ननिहाल के ग्राम सतलखा, पोस्ट मधुबनी, जिला दरभंगा में हुआ। उनका पैतृक गाँव दरभंगा शहर से दस – पंद्रह मील पूरब में तरौनी है। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा संस्कृत पाठशाला में प्राचीन पद्धति से हुई थीं।

नागार्जुन बहु आयामी प्रतिभा के धनी हैं। वे स्वभाव से फक्कड़, उदार रूढ़िवादी परंपराओं से परे, बहु भाषाविज्ञ, सुधी संपादक, कुशल व्यंग्कार एवं बालसाहित्य के चितरे भी है। मैथिली, हिंदी और संस्कृत में उन्होंने साहित्य रचना की। साम्यवाद और आंचलिकता पूर्ण प्रवाह उनके साहित्य पर दिखायी देता हैं।

रचनाएँ –

युगधारा, सतरंगे पंखोवाली, इस गुब्बारे की छाया में, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, ऐंसे भी तुम क्या? रत्नगर्भ, पुरानी जूतियों का कोरस, हजार-हजार बाँहोवाली, खिचड़ी, विप्लव देखा हमने, प्यासी पथराई आँखे, तुमने कहा था, शपथ प्रेत का बयान भस्मांकुर, मेघदूत, खून और शोले, चनाजोरगरम आदि काव्य रचनाएँ हैं।

रतिनाथ की चाची, बलचनमा, वरूण के बेटे, दुखमोचन, बाबा बटेसरनाथ आदि प्रमुख उपन्यास हैं।

अकाल और उसके बाद : भावार्थ / कथ्य

प्रस्तुत कविता कवि नागार्जुन के 'सतरंगे पंखों वाली' कविता संग्रह से है। कवि अनेको प्रतीकों के माध्यम से अकाल का वर्णन कर रहा है।

अकाल पड़ने के कारण कई दिन तक चूल्हा नहीं जला घर में खाना नहीं बना। ऐसा लगता है कि चूल्हा रो रहा है। कई दिन तक चक्की चलाकर आटा नहीं पीसा गया। उस दशा में चक्की उदास मालुम पड़ती थी। चूल्हे और चक्की से काम नहीं लिया गया तो कई दिन तक कानी कुतिया कवि के पास सोती रही। किसी ने कुतिया को चूल्हे और चक्की से दूर भगाने पर ध्यान ही नहीं दिया। कई दिन तक छिपकलियों दीवार पर दौंड़ लगाती रहीं, क्योंकि अकाल के कारण सब कीड़े-मकोड़े भी मर गये थे। छिपकलियाँ को कुछ खाना नहीं मिल रहा था। कई दिन तक चूहों की दशा भी खराब रही। अकाल के कारण जहाँ आदमियों को भोजन (अन्न का दाना) नहीं मिल रहा था, वहाँ चूहों को कहाँ से मिलता?

अकाल समाप्त होने के बाद, घर में अनाज आया, कई दिन भूखे रहने के बाद खाना बना। खाना बनाने के लिए चूल्हा जलाया गया, चूल्हा जलते ही उसका धुआँ घर के ऊपर उठा। ऐसा कई दिनों के बाद हुआ। घर में चूल्हा जलते देखकर घर के सभी प्राणी प्रसन्नता से चहक उठे। उनकी आँखो में जीवन जीने की प्रसन्नता दिखाई दी। कौवे को बहुत दिन बाद रोटी मिलने की आशा बाँधी तो उसने अपने पंख खुजलाने प्रारम्भ किये।

आम आदमी दो समय की रोटी पाकर प्रसन्न हो जाता हैं क्योंकि उसके लिए पेटभर रोटी पाना बड़ी बात है।

साहित्यिक सौंदर्य -

१. चूल्हा-चक्की दैनिक आवश्यकता के साधन है। इनका काम में न आना भूखे रहने का प्रतीक है।
२. प्रतीक योजना अतिसुन्दर है।
३. सामान्य लोगों को रोटी मिलना ही बहुत बड़ी प्रसन्नता होती है।
४. 'कानी कुतिया' में अनुप्रास अलंकार है।
५. अकाल और उसके बाद उपजी परिस्थितियों का मार्मिक चित्रण है।
६. भाषा सहज सरल व घर-भर में ध्वनि साम्य है।

महत्त्वपूर्ण अवतरण :

"बरसे आग, जलद जल जाएं, भस्मसात भूधर हो जाए,
पाप-पुण्य सदसद्भावों की धूल उड़ उठे दाएं - बाएं।
नभ का वक्ष: स्थल फट जाए, तारे टूक- टूक होजाएं,
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ – जिससे उथल- पुथल मच जाए।"

"और सचमुच, इन्हें जब –जब देखता हूँ
यह खुला वीरान संसृति का घना हो सिमट आता है -
और मैं एकान्त होता हूँ
समर्पित
शब्द जादू हैं-
मगर क्या यह समर्पण कुछ नहीं है ?

"पूछें सिकता कण से हिम पति!
तेरा वह राजस्थान कहाँ ?
वन – वन स्वतन्त्रता दीप लिए!
फिरने वाला बलवान कहाँ ?
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक काव्य –प्रदीप में संकलित दिनकर जी द्वारा रचित 'हिमालय' कविता से ली गई हैं। इसके सम्पा.डॉ. सूर्यनारायण रण सुभे जी हैं। दिनकर जी राष्ट्रीय चेतना के कवि हैं। ' हिमालय' कविता वह यह अपील करते हैं कि देश को भयंकर संकटों से बचाने के लिए, आज भी अर्जुन भीम जैसे योद्धाओं की आवश्यकता है।

प्रसंग :

कवि दिनकर जी कहते हैं कि हे हिमालय, हमारे देश के वैभव को दूसरे शासक चुरा ले गये, मेरा देश वीरान हो गया। दोप्रदी की भॉति कितनी अबलाओं ने अपनी अस्मिता को खो दिया, कितनों का असमय अंत हुआ, शोषण हुआ फिर भी तू अभी तक मौन बैठा है। कवि हिमालय के माध्यम से भारत वासियों को सम्बोधित करता है।

व्याख्या :

देश पर छायी विषम परिस्थतियों में कवि उन हिमालय पुत्रों की याद करते हैं, जिन्होंने देश के विभिन्न भू भागों की रक्षा समय समय पर की है। हे हिमपति, तेरा वह राजस्थान कहाँ हैं? अर्थात् इस भारत वर्ष के वीर पुरुष कहाँ हैं? जंगल –जंगल स्वतन्त्रता का दीप जलाने अर्थात् स्वतन्त्रता की पुकार करने वाले वे बलवान आज कहाँ है? हे नगपति। अब तो अपनी ऑखे खोलिए। अर्थात् आजादी के बावजूद भी देश के हालात पूरी तरह नहीं सुधरे। आज भी साम्राज्यवादी एवं सांमतवादी (दृष्टिकोण) का बोलबाला है। बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, जाति – पांति, संप्रदायवाद, अंधविश्वास आज भी देश में व्याप्त है। इन्हें दूर करने के लिए प्रत्येक भारत वासी को जागना होगा।

साहित्यिक सौंदर्य / विशेष :

१) हिमालय का मानवीकरण करते हुए कवि ने प्रकृति पर मानवी चेतना का आरोप किया है।
२) हिमालय कविता राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत है।
३) 'हिमालय' भारतीय संस्कृति के अस्तित्व एवं अस्मिता का प्रतीक है।
४) भाषा शुद्ध साहित्यिक एवं ओजगुण प्रधान है।

३.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

"दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआं उठा आंगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आंखें कई दिनों के बाद
कौएं ने खुजलायी पांखें कई दिनों के बाद।।"

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्यपुस्तक 'काव्य-प्रदीप' में संकलित 'अकाल और उसके बाद' से ली गई हैं। प्रगतिवादी कवि नागार्जुन द्वारा रचित यह कविता मूल रुप से उनके कविता संग्रह 'सतरंगे पंखोंवाली में संकलित है। कवि ने इस कविता में प्रतीकों के माध्यम से अकाल का वर्णन किया है।

प्रसंग :

कवि नागार्जुन का कहना है कि सामान्य जनता की दशा तो सुकाल में भी खराब रहती है, अकाल के समय उसे भूखों मरने के अतिरिक्त और क्या उपाय है? फिर भी सामान्य जन जीवित रहा और मुट्ठीभर अनाज पाकर पुनः प्रफुल्लित हो उठा।

व्याख्या :

कवि कहता है कि अकाल के कई दिन बाद घर में अनाज आया । घर के लोग अन्न के अभाव में कई दिन भूखे रहे। अनाज घर में आने के बाद खाना बनाने के लिए चूल्हा जलाया गया। इस कारण धुँआ घर के ऊपर उठा। ऐसा कई दिनों के बाद हुआ। घर में चूल्हे पर खाना

बनता देखकर घर के सभी लोगों की आँखों में प्रसन्नता भर गयी। वे कई दिनों से भूखे थे। कौवे को बहुत दिन बाद रोटी मिलने की आशा बँधी तो उसने अपने पंख खुजाने आरम्भ किये।

विशेष या साहित्यिक सौंदर्य :

१) सामान्य लोगों को रोटी मिलना ही बहुत बड़ी प्रसन्नता होती है। अकाल में रोटी मिलना ही बहुत बड़ी उपलब्धि है।
२) प्रतीक योजना का सुन्दर प्रयोग है।
३) घर भर में ध्वीन साम्य है।
४) भाषा सहज, सरल व व्यावहारिक है।

३.५ बोधप्रश्न :

१) 'कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ' कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।
२) 'कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ' कविता में व्यक्त विद्रोही स्वर पर प्रकाश डालिए।
३) 'हिमालय' कविता द्वारा कवि क्या संदेश देना चाहता है?
४) हिमालय कविता में व्यक्त 'राष्ट्रीय भावना' को अपने शब्दों में लिखिए।
५) 'कलगी बाजेर की' कविता के मूल उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
६) कवि अपनी प्रियतमा को 'कलगी बाजरे' की क्यों कहता है? स्पष्ट कीजिए।
७) 'अकाल और उसके बाद' कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।
८) "कौए ने खुजलायी पांखें कई दिनों के बाद" ऐसा कवि ने क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।

लघुत्तरी / वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

i) कवि नवीन जी किस स्वर में छा जाने की बात करते हैं?
उत्तर कवि नवीन जी त्राहि-त्राहि के स्वर को नभ में छा जाने की बात करते हैं।

ii) 'रुद्ध गीत की क्षुब्धतान, कहाँ से निकलती है?
उत्तर 'रुद्ध गीत की क्षुब्धतान मेरे अंतर तम से अर्थात् कवि के ह्रदय से निकली है।

iii) 'पौरुष के पूंजीभूत ज्वाल' किसे कहा गया है?
उत्तर 'पौरुष के पूंजीभूत ज्वाल' हिमालय को कहा गया है ।

iv) कवि ने हिम – किरीट किसे कहा हैं?
उत्तर कवि ने हिम – किरीट हिमालय को कहा हैं ।

v) 'मौन तपस्यालीन यती किसे कहा गया है?
उत्तर 'मौन तपस्यालीन यती हिमालय को कहा गया है ।

vi) 'आन पड़ा संकट कराल' कवि ने किसके लिए कहा है ?

उत्तर 'आन पड़ा संकट कराल' कवि ने भारत –भूमि के लिए कहा है ।

vii) कवि ने किसे 'कलगी धरहरी बाजरे की' कहा है ?

उत्तर कवि ने अपनी प्रेमिका को कलगी धरहरी बाजरे की कहा हैं।

viii) अज्ञेय जी के अनुसार पुराने उपमान कैसे हो गये है ?

उत्तर अज्ञेय जी के अनुसार पुराने उपमान मैले हो गये है।

ix) बासन बहुत अधिक घिसमें से क्या छूट जाता है ?

उत्तर बासन बहुत अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है।

x) 'कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास,' ऐसा कवित ने क्या कहा है ?

उत्तर अकाल पड़ने के कारण कई दिनों तक न तो घर में चूल्हा जला, न चक्की में आटा पीसा गया, देखकर ऐसा लगता है कि चूल्हा रो रहा है और चक्की उदास हैं।

xi) कई दिनों तक कानी कुतिया कहॉ सोयी ?

उत्तर कई दिनों तक कानी कुतिया कवि के पास सोती रही और किसी ने उस भगाया नहीं।

xii) कई दिनों तक किनकी हालत शिकस्त रही ?

उत्तर कई दिनों तक चूहों की हालत शिकस्त रही।

xiii) 'कानी कुतिया' में कौन – सा अलंकार है ?

उत्तर 'कानी कुतिया' में अनुप्रास अलंकार है।

xiv) 'कई दिनों के बाद' आंगन से ऊपर क्या उठता दिखायी दिया ?

उत्तर कई दिनों के बाद आंगन से ऊपर धुआं उठता दिखायी दिया।

xv) 'चमक उठी घर भर की आँखे' ऐसा कवि ने क्यों कहा ?

उत्तर कई दिनों के बाद जब घर में खाना बना तो घर के सभी लोगों की आंखे प्रसन्नता से चमक उठी।

❖❖❖

४

'दिवंगत पिता के लिए', 'गजल', मोचीराम', 'रोटी '

इकाई की रुप - रेखा

४.० उद्देश्य
४.१ प्रस्तावना
४.२ कवि परिचय
४.३ कविता का भावार्थ
४.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
i) कविता की पंक्ति
ii) संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या, साहित्यिक सौंदर्य / विशेष
४.५ बोध, प्रश्न, वस्तुनिष्ठ प्रश्न

४.० उद्देश्य :

इस खंड की चौथी इकाई में हम चार कविताएँ - 'दिवंगत पिता के लिए', 'गजल', 'मोचीराम', 'रोटी' दे रहे हैं। कविता के भावार्थ से पूर्व कवि का परिचय दिया जा रहा है। जिससे कवि व उसकी रचनाओं के बारे में जानकारी हो सके। संदर्भ सहित स्पष्टीकरण भी दिया जा रहा है साथ ही, कविता की अन्य विशेषताओं से भी परिचित कराया जा रहा है। इस इकाई को पढ़ने के बाद राष्ट्र प्रेम की भावना का निर्माण होगा।

पूंजीवाद के प्रति विद्रोह की भावना का उदय होगा। कविता में प्रयुक्त कठिन शब्द व मुहावरों के अर्थ जान सकेंगे।

कविता के भाव पक्ष व शिल्प पक्ष के प्रति व्यापक समझ का निर्माण होगा।

कविता में प्रयुक्त, अलंकारों व शब्द- शक्तियों को जान पायेंगे।

साहित्यिक अभिरुचि का निर्माण होगा। उपर्युक्त विश्लेषण के माध्यम से कविता के महत्त्व को समझने में सफलता मिलेगी।

४.१ प्रस्तावना :

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना द्वारा रचित कविता 'दिवंगत पिता के लिए 'में' दिंवगत पिता' का प्रतीकार्थ आंतरिक मूल्यों से जुड़ा है। हमारे आंतरिक मूल्य आज इस आपा-धापी की दुनिया में सारहीन हो गये हैं। मूल्यों के नष्ट होने पर कवि अपना दु:ख प्रकट करता है।

नव युग के प्रगतिशील गीत – गजलकार दुष्यन्त कुमार की गजल 'कहॉ तो तय था चिरागां हरेक घर के लिए' में कवि कहता है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति से जितनी सुख समृद्धि की आशा की

गयी थी, उतनी प्राप्त नहीं हुई। अनेकों प्रतीकों का सहारा लेकर जीवन की विसंगतियों को व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है।

'मोचीराम' कविता में कवि धूमिल ने युगीन सच्याइयों को व्यक्त किया है। सर्व साधारण की दृष्टि में जीवन क्या है ?इसकी व्याख्या भी कविता में की गयी है।

'रोटी' कविता में कवि केदारनाथ सिंह हमें देश की बुरी व्यवस्था के छद्म से आगाह करते हैं जिसमें रोटी पूँजीवादी शोषक के कब्जे में है। कवि जानता है कि उसके बारे में बात करना विद्रोह करने के बराबर है पर रोटी पर सबका अधिकार, इस रोटी का पाने के लिए मनुष्य कुछ भी कर सकता है।

४.२ कवि परिचय :

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना – (१९२७ - १९८३)

आधुनिक कवियों में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना अपने अनोखे व्यक्तित्व के लिए प्रसिद्ध हैं। नई कविता के सशक्त हस्ताक्षर सक्सेना जी ने युगीन विरोधाभासों, असंगतियों और विकृतियों को अपनी कविता का मुख्य विषय बनाया।

सर्वेश्वर का जन्म १५ सितम्बर १९२७ ई. को बस्ती जिले के पिकौरा नामक गाँव में हुआ था। अनकी प्रारम्भिक शिक्षा बस्ती में ही हुई। जीविकोपार्जन के लिए उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश किया। कभी अध्यापन, कभी आकाशवाणी में सहायक प्रोड्यूसर कभी सम्पादक के रूप में (दिनमान, पराग) उनकी छवि दिखायी देती है।

हिन्दी जगत में उनका प्रवेश कहानीकार के रूप में हुआ। बाद में, १९५० ई. से वे कविता लिखने लगे। नयी कविता की समस्त विशेषाएँ उनके काव्य में मौजूद हैं। उनकी प्रारम्भिक कविताओं में एक तरफ वैयक्तिक चेतना का प्रभाव दिखायी देता है तो दूसरी तरफ यथार्थ का आग्रह भी।

रचनाएँ – कविता संग्रह –

काठ की घंटियाँ, बाँस का पुल, एक सूनी नाव, गर्म हवाएँ, कुआनो नदी, जंगल का दर्द, खूँटियों पर टँगे लोग, कोई मेरे साथ चले। संयुक्त कविता संग्रह (तीसरा सप्तक) में सात कवियों के साथ अन्तिम कवि सर्वेश्वर जी हैं।

उपन्यास - 'सूने चौखटे', 'सोया हुआ जल', 'पागल कुत्तों का मसीहा,'

कहानी संग्रह- कच्ची सड़क, अँधेरे पर अँधेरा, लड़ाई।

नाटक – बकरी, अब गरीबी हटाओ।

बालनाटक - 'भों भों खों खों', 'लाख की नाक'।

बालसाहित्य – बतूता का जूता, महँगू की टाई।

इसके अतिरिक्त वे अनुवादकार्य से भी जुड़े रहे।

४.३ दिवंगत पिता के लिए : भावार्थ / कथ्य

प्रस्तुत कविता में सर्वेश्वर जी यह कहना चाहते है कि मूल्यों से जुड़ने वाले लोग की प्राप्ति भले ही करलें किन्तु भौतिक सुखों से प्रायः आत्मसुख वंचित ही रहते हैं। 'दिवंगत पिता' का प्रतीकार्थ आंतरिक मूल्यों से जुड़ा है। हमारे आंतरिक मूल्य जो इंसानियत, दया व प्रेम पर

आधारित थे, वे वर्तमान आपा-धापी की दुनिया में सार हीन हो गये हैं। मूल्यों के नष्ट होने पर कवि अपना दु:ख प्रकट करता है।

सर्वेश्वर जी पिता से संबधित स्मृतियों का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पिता सुबह - शाम पूजा – पाठ में निमग्न रहते थे। जैसे ही अनाथाश्रम की घंटी बजती थी, भूखे, भटकते बच्चे लौटकर चले जाते थे। जहाँ तक कवि की नजर पड़ती है देखता है कि दूर-दूर तक फैले खेतों पर संध्या होने से अंधकार छा गया है। बरसात से भीगे कच्चे रास्तों पर करूणा भरा अंधकार फैल गया है। उसी समय कवि को पिता के पुकारने की समृति हो आती है। उस अंधकार में भी तुम्हारी आवाज से मेरा नाम सार्थक हो जाता था। मैं अब भी यहाँ हूँ इस स्वार्थी समाज के बीच, दु:खो से भरी आवाजें रोते हुए अंधकार का प्रतीक हैं। पर, तुम्हारी मुझे पुकारने वाली आवाज आज नहीं है। पिता ने जिन मूल्यों का सम्मान किया बदले में समाज ने उन्हें क्या दिया? आपका मानना था कि किसी को धक्का देकर आगे जाना पाप है इसलिए तुम भीड़ से अलग रहे। अपने को बड़ा मानने या बड़ा बनाने कि इच्छा ही सब दु:खों का कारण है। इसलिए तुम जहॉ थे वही रहे। 'संतोष ही परम धन है' यह मानकर तुमने अपना सबकुछ लुट जाने दिया। हे पिता, इन आदर्शो पर चलकर तुम्हें क्या मिला? एक तरफ मूल्यों के प्रति आस्था और दूसरी तरफ इन मूल्यों को अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करनेवाला समाज। इन मूल्यों पर चलकर पिता अनाथ निराश्रित और विपन्न ही बने रहे, उन्हें कुछ भी हाथ नहीं लगा। मृत्यु के समय पिता के मलिन मुख पर पड़ी कठोर और भयंकर छाया यह कह रही है कि पिता स्वार्थमय लिप्त समाज से निराश थे। कवि की नजर में एक ओर पिता का सादगीपूर्ण जीवन दूसरी ओर इन मूल्यों को पैरों तले कुचलने वाला समाज। जब पूरा समाज त्यौहारों का जश्न मना रहा था तब भी तुम दरवाजे पर चुपचाप खड़े थे। 'झूठ नहीं बोलूंगा' की प्रतिज्ञा लिए पिता प्रत्येक संगोष्ठी में चित्र की तरह मूर्त बने रहे अर्थात् लोगों के बीच अपनी पहचान बनाने में असफल रहे। जब आपने अपने महत्व को समझा व सार्थक बनाना चाहा तब लोगों ने तुम्हे अर्थहीन बना दिया अर्थात् समाज ने तुम्हारे महत्त्व का स्वीकार नहीं किया। छल-कपट से भरे इस संसार में सच्चे व्यक्ति का कोई सम्मान नहीं करता, यही सच है। कवि पिता और पुत्र के बीच की द्वन्दात्मक परिस्थिति को प्रस्तुत करता है। साथ ही, वर्तमान परिवेश में मूल्यों और आदर्शो पर चलने वाले व्यक्ति को समाज महत्व नहीं देता, इस सच्चाई को बयान किया है। कविता में कवि ने यह बताने की कोशिश भी की है कि जिन मूल्यों से लोगों ने प्रेरणा ली आज उसे ही भुला दिया अर्थात् सच्चाई के मार्ग पर चल कर सदैव तुम्हें दु:ख ही मिला, सुख नहीं। अंतिम पंक्तियों में कवि ने उन स्वार्थी लोगों पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया प्रकट करते हुए कहा कि जिन्होंने पिता की सेवायें प्राप्तकर प्रगति की पर उनकी अंतिम यात्रा में भी वे सम्मलित नहीं हुए। कवि आगे कहता है जिन लागों ने तुम्हारी मद्द के सहारे अपनी इतनी प्रगति की कि आज वे भव्य इमारतों में सुख सुविधाओं के साथ शहरों में बड़े आराम की जिन्दगी बसर कर रहे हैं। और जिन्होंने तुम्हारी सादगी के सिक्कों से भड़कीली दुकानें खोल रखी थी व तुम्हारे सादगी पूर्ण जीवन के विज्ञापन के आधार पर, ढिंढोरा पीटकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे थे वही लोग आज तुम्हारी अंतिम-यात्रा में नहीं आये।

यह कविता पिता को प्रतीक बनाकर समाज के यथार्थ को बयान करती है अर्थात् कवि यह संदेश देना चाहता हैं कि मूल्यों के प्रति निष्ठा रखने वाले लोगों को ढाल बनाकर स्वार्थी लोग अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं और, निष्ठावान को विस्मृत कर देते हैं।

साहित्यिक सौंदर्य :

१. मूल्यों के प्रति मोहभंग की स्थिति को दर्शाया गया है।

२. व्यंग के माध्यम से समाज की पोल खोलना कवि का स्वभाव है।
३. भाषा विषय के अनुरूप है।

दुष्यंत कुमार (१९३१-१९७५)

दुष्यंत कुमार स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। उन्होंने कवि, कहानीकार, उपन्यासकार एवं नाटककार के रूप में हिन्दी साहित्य को अपना योगदान दिया है। इनके साहित्य का मूल स्वर यथार्थवादी एवं मानवतावादी है।

इनका जन्म राजपुर नवादा गॉव, जिला बिजनौर उत्तर प्रदेश में १९३१ में हुआ था। आप आजीवन 'परिमल अकादमी ' से जुड़े रहे। साथ ही, आकाशवाणी व राजभाषा कक्ष (मध्य प्रदेश) में आपकी भूमिका सराहनीय है।

नये भावबोध और आधुनिक मनुष्य की त्रासद स्थितियों को अपनी गजल व कविता का विषय बनाकर, आपने पाठकों को सर्वाधिक प्रभावित किया है। सच्चे अर्थो में आप पीड़ा और दर्द के कवि हैं। आपने जिस दर्द का भोगा है उसी को अपनी कविता के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। शिल्प की दृष्टि से दुष्यन्त कुमार नये कवियों के अधिक समीप हैं।

रचनाऍ-

काव्य 'कहॉ तो तय था चिरागाँ हर एक घर के लिए' कैसे मंजर, खंडहर बचे हुए हैं, जो शहतीर हैं, जिन्दगानी का कोई मकसद, मुक्तक, आज सड़कों पर लिखे हैं, मत कहो आकाश में, धूप के पॉव, गुच्छेभर अमलतास, सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे, जलते हुए वन का बसन्त, आग जलती रहे, एक आशीर्वाद, आग जलनी चाहिए, मापदण्ड बदलो, कहीं पै धूप की चादर, बाढ़ की संभावनाऍ, इस नदी की धार में, हो गयी पीर पर्वत सी।

गजल संग्रह – साये में धूप

काव्य नाटक – एक कंठ विषयापी

नाटक – और मसीहा मर गया

लघुकथा – मन के कोंण

उपन्यास – छोटे– छोटे सवाल, ऑगन में एक वृक्ष, दुहरी जिन्दगी।

गजल : भावार्थ / कथ्य

नव युग के प्रगतिशील गीत – गजलकार दुष्यन्त कुमार की गजल 'कहाँ तो तय था चिरागां हरेक घर के लिए', उनके प्रसिद्ध काव्य संकलन 'साये में धूप' में संगृहीत है। स्वतन्त्रता प्राप्ति से जितनी सुख समृद्धि की कामना की गयी थी, उतनी प्राप्त नहीं हुई। चुनाव से पूर्व जो वायदे किए गए, वे निभाये नहीं गए। अनेक प्रतीकों के माध्यम से कवि यही कहना चाहता है।

कहॉ तो निश्चय किया था कि प्रत्येक घर के लिए प्रकाश की व्यवस्था की जायेगी, किन्तु अब पूरे शहर के लिए भी दीपक उपलब्ध नहीं है। सारे शहर में अन्धकार है। स्वतन्त्रता संग्राम के समय यह तय हुआ कि आजादी के बाद प्रत्येक मनुष्य को सुख समृद्धि प्राप्त होगी। सभी को उन्नति के समान अवसर दिये जायेंगे, पर आज स्वतन्त्रता मिलने पर देश गरीबी और भुखमरी से परेशान है। बेरोजगारी की समस्या ने पूरे देश को निराशा के अन्कार से डुबे रखा है।

इस स्थान पर पेड़ों की छाया में भी धूप तपाती है। यहाँ छाया मिलने की कोई आशा नहीं है अर्थात् यहाँ रहने से कोई लाभ नहीं होगा। यहाँ से कहीं और जाने में ही फायदा है।

पेड़ों से ताप्तर्य नेताओं और देश के शासकों से है। जिनकी छत्रछाया एवं कुशल शासन में सुख, शान्ति और समृद्धि मिलनी चाहिए थी, वे हमें कष्ट अशान्ति, बेकारी और व्याकुलता दे रहे हैं।

इस देश को छोड़कर अन्यत्र चले जाने से अभिप्राय शासन को बदलकर दूसरी राजनीतिक पार्टी को सत्ता में लाना है।

इस देश के लोग इतने सन्तोषी व अभावों में जीवन बिताने के अभ्यासी हो गए हैं कि अगर उनके पास पहनने के लिए कमीज नहीं होगी तो पॉव सिकोडकर अपना पेट ढक लेंगे अर्थात् अपनी लज्जा का निवारण कर लेंगे । स्वतन्त्रत देश की समृद्धि के लिए जो आह्वान किया जा रहा है, उस यात्रा के लिए ये लोग कितने उपयुक्त हैं। यहॉ के लोग अभावों में और निर्धनता में भी किसी प्रकार काम चलाते हुए स्वतन्त्र देश की सरकार का साथ देंगे। ये लोग इस देश की शासन व्यवस्था की सुविधा के लिए बहुत उपयोगी और अनुकूल हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि ईश्वर नहीं है, यह तो मनुष्य की कल्पना मात्र है। मैं मानता हूँ कि उनकी बात सत्य है पर ईश्वर की कल्पना हमारी दृष्टि के लिए एक सुन्दर दृश्य तो उपस्थित करती है।

इस स्वतन्त्र देश में तो अच्छे दृश्य नहीं हैं। यही अच्छा है कि लोग ईश्वरीय कल्पना के रुप में उत्तम, सुन्दर और लुभावने दृश्य देख लेते हैं।

तेरा शासन है। तू चाहे तो कवि की वाणी को बन्द कर सकता है, उसका मुँह सिल सकता है। मैं जिस छन्द में अथवा जिस लय में गा रहा हूँ उसके लिए यह पूर्व प्रबन्ध आवश्यक है। मेरी कविता तेरे शासन का विरोध करेगी। तू उस विरोध से बचने के लिए पहले मेरा मुँह बन्द कर दे, अर्थात् मुझे मौन कर दे।

हमारी यही सुन्दर कामना है कि हम अपने बगीचे में सुन्दर फूलोंवाले गुलमोहर वृक्ष के नीचे जियें। अगर हम किसी पराये पुरूष अथवा शत्रु की गलियों में मरें भी तो इसी गुलमोहर की रक्षा के लिए। कहने का आशय यह है कि हम अपने देश में सुख-समृद्धि और सुशासन में जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। मरना भी पड़ेंतो अपने देश की सुख, समृद्धि व सुशासन की रक्षा के लिए।

आधुनिक जीवन की विसंगतियों और विडम्बनाओं को इस गजल में व्यंग्यात्मक ढंग से व्यक्त किया है।

साहित्यिक सौंदर्य-

१. 'पाँवों से पेट''नही न' में अनुप्रास अलंकार है।
२. 'चिरागां'समृद्धि का, शहर-देश का, दरख्त-नेता का प्रतीक है।
३. भाषा खड़ी बोली है, जिसमें उर्दू-फारसी के तत्सम शब्दों की भरमार है।
४. आधुनिक जन-जीवन का गजल में सजीव चित्रण किया है।
५. कवि की मानवतावादी दृष्टि उल्लेखनीय है।

धूमिल (सुदामा पांडेय) (१९३६ - १९७४)

धूमिल का जन्म ९ नवम्बर १९३६ में वाराणसी जिले के सदर तहसील के खेवली नामक गॉव में हुआ था। धूमिल का असली नाम सुदामा पांडेय था। अपने साहित्यिक मित्रों के बीच वे धूमिल के नाम से प्रसिद्ध थे। यह उनका उपनाम था। ग्राम्य संस्कार और शहरी संस्कृति के अन्तर्विरोधो के तनावो में वे तनते रहे, बेलाग बोलते रहे और अपनी निजी लड़ाई को व्यापक लड़ाई तक ले जाते रहे।

धूमिल के तीन काव्यसंग्रह प्रकाशित हुए। दो उनके जीवन काल में और एक मरणोपरान्त। पहला काव्यसंग्रह 'बाँसुरी जल गई' (१९६१), दूसरा 'संसद से सड़क तक'(१९७२) तथा तीसरा 'कल सुनना मुझे' (१९७७) में प्रकाशित हुए थे। 'बाँसुरी जल गई' गीतों का संग्रह था जो अप्राप्त है।

धूमिल की कविता, प्रहार और पर्दाफाश की कविता है।, हमारे सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक जीवन में जो मोहभंग, मूल्यहीनता और अव्यवस्था गहराती गई है, उसकी हू-ब-हू शक्ल धूमिल की कविता में आक्रोश, व्यंग्य और चौकानेवाले पंक्तियों के माध्यम से देखने को मिलती है। धूमिल की कोशिश यह रही है कि, कविता को अधिकाधिक सार्थक बनाते हुए जिंदगी की सार्थकता की तलाश की जाए।

उनकी काव्यभाषा में कुछ अन्य गुण भी देखे जा सकते हैं, - वाक्य संरचना में नवीन शब्द – प्रयोग उनकी महत्वपूर्ण उपल्बधि है। मुक्त छंद कविता में वाक्य की संरचना, जिस रूप में अपेक्षित होती है, कवि उसका पालन नहीं करता वरन् सही और सार्थक भाषा की तलाश में भाषाहीन होने का प्रयत्न करता है।

रचनाएँ – संसद से सड़क तक, कल सुनना मुझे, सुदामा पांडे का प्रजातंत्र, धूमिल की कविताएँ, बासुरी जल गई (गीत संग्रह), स्फुटगीत।

मोचीराम : भावार्थ / कथ्य

'मोचीराम' एक केंद्रीय चरित्र के माध्यम से व्यंग्य करनेवाली महत्वपूर्ण कविता है। इसमें कवि ने युगीन सच्चाईयों को व्यक्त किया है। इस कविता में मोची का एकालाप नही है। वह आधुनिक युग का कबीर है। मोचीराम यह कविता प्रारंभ से इस बात का संकेत दे देती है कि, कवि और मोची में काफी बातचीत हो चुकी है। अपने पेशे की वजह से अपने मन की बात वह सबके सामने नहीं कर सकता, पर कवि को क्षणभर टटोलने के बाद और आश्वस्त होने पर हँसते हुए कहता है कि, उसकी निगाह में कोई भी मनुष्य जूते के नाप के बाहर नहीं है। बल्कि सभी समान हैं न कोई छोटा है न बड़ा।बस एक जोड़ी जूता है, जो मरम्मत के लिए खड़ा है।

अपमानित दलितवर्ग की ओर से उच्चवर्गीय आइने में झाँकनेवाला मोची शोषित वर्ग का प्रतीक है। वह उच्चवर्ग के चेहरे में अपने चेहरे को पहचानता है। वह मोची के माध्यम से मनुष्य के दो चेहरों का स्पष्ट वर्णन करता है। कवि का मानना है कि इनकार से भरी हुई चीख और समझदार चुप दोनों का मतलब एक है। उसके अनुसार भविष्य के निर्माण में समझदारी से भरा चुप और आक्रोश से भरी चीख दोनों की भूमिका समान है। उसके लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता होते हुए भी आदमीयत बड़ी चीज है। वह जूतो की जाति पहचानता है। अपने ही सर्वहारा वर्ग के प्रति गहरी सहानभूतियों से भरकर चकतियों के थैली वाले जूतों में चकतियों की जगह आँखे फिट करता है। जब मध्यमवर्गीय अहंकारी, लालची कोई बनियॉ या बिसाती जो हिटलर के नाती कि तरह घंटे भर तक ठोका- पीटी, घिस्सा लगवाकर गुर्राते हुए चल देता है थोड़े से सिक्के फेंककर, तब वह जानता है कि कोई कील उसे चुभेगी। क्योंकि, सताया हुआ आदमी कभी न कभी मौका पाकर विद्रोह करता ही है। मोचीराम के भीतर एक सजग विचारक बैठा है, जो साफ महसूस करता है कि जीने के पीछे एक सार्थक और सही भूमिका होनी चाहिए।

जूते के तीसरे वर्ग के संबंध में अर्थात् उच्चवर्ग के संदर्भ में कुछ नहीं कहा गया। ये लोग मोचीराम के पास जूतों की मरम्मत के लिए कभी आते ही नहीं। आते भी है तो लानेवाले निम्नवर्ग के लोग ही होते हैं। वह जिंदगी को किताबों से नहीं बल्कि अनुभवों से नापता है। वह जानता है कि सच्चाई सबसे होकर गुजरती है। कवि के पास शब्द है, अतः उसके पास इन्कार से भरी चीख है जो पेट की आग से डरता है इसलिए उसके पास एक समझदार चुप है। लगता है जैसे कवि का संकेत हो कि वर्ग चेतस बुद्धिजीवी, विद्रोह और अस्वीकृति की चीख लेकर पीड़ित किंतु

चुप जनता को क्रांति के लिए तैयार करते हैं। और यह संगठन ही क्रांति लाने में या परिवर्तन लाने में सक्षम होता है।

इस प्रकार नाटकीय कौशल से युक्त यह रचना वर्ग-चेतना की सुंदर कृति है।

साहित्यिक सौंदर्य :

१. यह कविता गहन चिंतन, नाटकीय शैली, पैने-व्यंग, चटकीले बिंब एवं वर्ग चेतना से भरी है।
२. कविता की भाषा व्यावहारिक और विषयानुकूल दोनों है। अभिधा के माध्यम से ये शब्द लक्षणा और व्यंजना की प्रस्तुती करते हैं।
३. इसका शिल्प सुगठित है। अभिनव प्रयोग के साथ शैली शिल्प में रोचकता, प्रवाह और गतिमयता है।
४. 'मोचीराम' शीर्षक रचना का व्यंग्य अन्तर्मन को छू लेता है।

केदारनाथ सिंह – जन्म १९३४ ई.

केदारनाथ सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में चकिया नामक गाँव में सन १९३४ में हुआ। केदारनाथ सिंह मार्क्सवादी प्रतिबद्ध कवि हैं परन्तु इनकी प्रतिबद्धता जड़तरीके की नहीं है। कवि ने जीवन को निकट से देखा है तथा जो वर्ग खास रूप से इनकी रचना का विषय बनता है वह भूखा आदमी, पिता की चाय के लिए बहुत सुबह दूध लेने जाता हुआ बच्चा, बढ़ई, दरजी, औरत, बुढ़िया, बच्चे, लड़के , बस का इंतजार करती स्त्री, नंगी पीठ वाला आदमी, मल्लाह, हलवाहा, हज्जाम आदि। ये अपनी कविताओं में स्वयं को अभिव्यक्त करते हैं। अब तक इनके कुल चार काव्यसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने पीएच.डी.उपाधि के एक शोध-प्रबंध 'आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब-विधान' नाम से प्रस्तुत किया। यह शोध-प्रबंध प्रकाशित होकर हिन्दी-समीक्षा-जगत में चर्चित हो चुका है। सर्वप्रथम केदारनाथ सिंह की २३ कविताएँ अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'तीसरा सप्तक' में संकलित हुई थी।

रचनाएँ – अभी बिल्कुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो, अकाल में सारस, तालस्तॉय और साइकिल तथा अन्य कविताएँ, कल्पना और छायावाद, आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब-विधान, मेरे समय के शब्द, कब्रिस्तान में पंचायत तथा मेरे साक्षात्कार।

रोटी : भावार्थ / कथ्य

प्रस्तुत कविता 'जमीन पक रही है' नामक काव्य-संग्रह से ली गई है। इस कविता में कवि हमें गलत व्यवस्था के उस छाद्म से आगाह करते हैं जिसमें रोटी पूँजीवादी शोषक के कब्जे में है।

उनका मानना है कि उसके बारे में बात करना विद्रोह करने के बराबर होगा अर्थात् रोटी पर सबका अधिकार है इस बारे खुलकर बोलना पूँजीवादी मानसिकता वाले लोगों को अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए वह उस पार बात नहीं करेगा। गोल, खूबसूरत, सुर्ख और पकी हुई रोटी आदमी की नींद और विचारों को भी उत्तेजित करती है। रोटी के लिए आग जरूरी है, भीतरी और बाहरी आग। इसी कारण वे कहते है कि मैं आपको आमंत्रित करता हूँ आप उस आग तक चले, उस चूल्हे तक चले जहाँ वह पक रही है और उसकी गंध पूरी दुनिया या समाज को बदलने की ताकत रखती है। कवि ने गरम होने, पकने का सांकेतिक अर्थ दिया है। सब-कुछ जहाँ गरम हो रहा है निश्चित रूप से वहाँ आग है, ऊर्जा है। आवश्यकता है ऊर्जा को पहचानने की और उसे

सही दिशा में मोड़ने की। वह ऊर्जा जो है वह जड़ो की ओर वापस आना नहीं है। वह ऊर्जा धीरे-धीरे आगे बढ़ रही है और अपना हक पाने के लिए झपट्टा मारती है। क्रान्ति की आग आम आदमी के विचारों को उद्वेलित करती है, उन्हें जगाने का काम करती है। और, कवि का विश्वास है सभी उसका सामना करने के लिए तैयार है। कवि कहता है कि जब वह आम आदमी को क्रान्ति की आग से निकलते देखता है तो उसका शिकार करने के लिए तैयार रहता है ताकि क्रान्ति आगे तक न बढ़ सके। उसके हाथ अपने अस्त्र तीर और धनुष खोजने लगते हैं फिर उसे लगता है वही हाथ उसे खोज रहे हैं क्योंकि वह सर्वहारा वर्ग का वह प्रतिनिधित्व कर रहा है। और आराम से उसे नहीं खा सकता है।

कवि जब मेहनतकश लोगों का साथ देने के बाद रोटी का टुकड़ा तोड़ता है तो वह उसे पहले से स्वादिष्ट, गोल खूबसूरत और लालरंग की पकी हुई लगती है अर्थात वह और रुचिकर और स्वादिष्ट लगती है।

यहाँ पर कवि क्रान्ति द्रष्टा कवि के रूप में दिखाई देता है। वह केवल शाब्दिक आडम्बर मात्र नहीं रचता है अपितु उस आग की ओर इशारा करते हैं कि जो भूख से पीड़ित व्यक्ति के पेट में पक रही है। उसका मानना है कि समाज का एक वर्ग भूखा रहेगा तो भूख क्रान्ति की आग में परिवर्तित हो रही है। यह भूख के बारे में उसी आग का बयान, सत्ता वर्ग के प्रति चेतावनी के रूप में है। कवि समकालीन परिस्थितियों को गहराई से महसूस करते हुए उसी आग के बयान को दीवार पर लिखे जाने की बात कर रहे हैं।

मानव का संपूर्ण अस्तित्व 'रोटी' पर ही निर्भर है। 'रोटी' के लिऐ ही मनुष्य लगातार संघर्ष करता है। जब किसी वर्ग को रोटी नहीं मिलती है तब उसकी भूख क्रान्ति में बदल जाती है और तब वह किसी नियम में बॅधकर नहीं रहता।

साहित्यिक सौंदर्य :

१. इस कविता में जीवन-शक्ति को ही नहीं अपितु उसके सामाजीकरण को भी व्यक्त किया गया है।
२. कविता की संरचना अनगढ़ है परन्तु शिल्प में आकर सुकुमार-सी प्रतीत होती है।
३. कविता का शाब्दिक विन्यास अद्‌भूत है।

४.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

"पिता! इन मूल्यों ने तो तुम्हें
अनाथ, निराश्रित और विपन्न ही बनाया,
तुमसे नहीं, मुझसे कहती है,
मृत्यु के समय तुम्हारे
निस्तेज मुख पर पड़ती यह क्रूर दारुण छाया।"

जब कि मैं जानता हूँ कि 'इनकार से भरी हुई एक चीख'
और एक समझदार चुप
दोनों का मतलब एक है।
भविष्य गढ़ने में, 'चुप' और 'चीख'
अपनी – अपनी जगह एक ही किस्म से
अपना – अपना कर्ज अदा करते हैं।

"आप विश्वास करें
मैं कविता नहीं कर रहा हूँ
सिर्फ आग की ओर इशारा कर रहा हूँ।
वह पक रही है
और आप देखेंगे – यह भूख के बारे में
आग का बयान है
जो दीवारों पर लिखा जा रहा है
आप देखेंगे
दीवारें धीरे –धीरे स्वाद में बदल रही हैं।"

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'काव्य प्रदीप से केदारनाथ सिंह द्वारा रचित 'रोटी' शीर्षक से ली गई हैं। मूल रुप से यह कविता उनके काव्य-संग्रह 'जमीन पक रही है' में संकलित हैं। इस कविता में कवि ने समकालीन विषम परिस्थतियों भावी परिणाम की ओर इंगित किया है।

प्रसंग :

कवि केदारनाथ सिंह कहते हैं कि क्रान्ति की आग विचारों को उत्तेजित करने का काम करती है और कवि को विश्वास है कि सभी उसका सामना करने के लिए तैयार हैं। कवि जब मेहनती आदमी के हाथ में रोटी का टुकड़ा देखता है तो वह उसे और अधिक रुचिकर लगती है।

व्याख्या :

यहॉ पर कवि एक दृष्टा के रुप में दिखाई देता है। वह केवल शाब्दिक आडम्बर मात्र नहीं रचता है बल्कि उस आग की और संकेत करता है जो भूख से पीड़ित व्यक्ति के पेट में पक रही है। उनका मानना है कि समाज का एक वर्ग जो भूखा रहेगा तो भूख क्रान्ति का रुप धारण कर लेगी। यह भूख के बारे में उसी आग का बयान, सत्तावर्ग के प्रति चेतावनी के रुप में है। यदि, व्यक्ति मूलभूत सुविधाओं से वंचित रहेंगे, उन्हें उनके मौलिक अधिकार भी प्राप्त नहीं होंगे तो निश्चय ही क्रान्तिका स्वर चारों और दिखाई देगा। फिर इस क्रान्ति को रोकना किसी नियम व कानून के हाथ में नहीं होगा। कवि समकालीन परिस्थितियों को गहराई से अनुभव करते हुए उसी आग के बयान को दीवार पर लिखे जाने की बात कर रहे हैं।

साहित्यिक सौंदर्य, विशेष :

१) इस कविता में कविने जीवन शक्ति को ही नहीं अपितु उसके सामाजीकरण को भी व्यक्त किया है।
२) कविता की संरचना अनगढ़ है परन्तु शिल्प में आकर, सुकुमार सी प्रतीत होती है।
३) कविता का शब्दिक विन्यास अद्‌भुत है।
४) भाषा सहज व सरल है।

संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

"कहां तो तय था चिरागां हरेक घर के लिए,
कहां चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।

यहां दरख्तों के साये में धूप लगती है,
चलो यहाँ से चलें और उम्रभर के लिए।
न हो कमीज तो पांवों से पेट ढंक लेंगे,
ये लोग कितनें मुनासिब हैं, इस सफर के लिए।।"

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियों नव युग के प्रगतिशील गीत -गजलकार दुष्यन्त कुमार की गजल 'कहाँ तो तय था चिरागां हर एक घर के लिए' से ली गयी हैं। यह गजल दुष्यन्तकुमार के काव्यसंकलन 'साये में धूप' में सगृहीत है। कवि स्वतन्त्र भारत में जन साधारण के दु:खों एवं अभावों का संकेत रुप में वर्णनकार रहा है।

प्रसंग :

स्वतन्त्रता प्राप्ति से जितनी सुख समृद्धि की कामना की गयी थी, उतनी प्राप्त नहीं हुई। चुनाव से पूर्व पार्टियों के घोषणा पत्रों में जो वायदे होते थे, उन्हें बाद में वही पार्टियाँ सन्तारुढ़ होकर नहीं निभाती थीं। प्रतीकों के माध्यम से कवि अपने मन की व्यथा को व्यक्त करता है। साथ ही, आज की शासन व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार पर दुष्यन्त कुमार ने गहरा व्यंग्य किया है।

व्याख्या :

कवि कहता हैं कि कहां तो यह निश्चय किया गया था कि प्रत्येक घर के प्रकाश की व्यवस्था की जायेगी, किन्तु अब पूरे शहर के लिए एक भी दीपक उपलब्ध नहीं हैं। सारे शहर में अंधकार है। स्वतन्त्रता संग्राम के समय यह निश्चित हुआ था कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद प्रत्येक मनुष्य को सुख - समृद्धि प्रदान की जायेगी, सभी को उन्नति के समान अवसर दिये जायेंगे, पर आज भी आजाद भारत गरीबी और भुखमरी से परेशान है। बेरोजगारी की समस्या सभी को व्याकुल कर रही है। सम्पूर्ण देश में निराशा की अंधकार छाया है।

इस स्थान पर पेड़ों की छाया में भी धूपत पाती है। यहाँ छाया मिलने की कोई आशा नहीं है। चलो यहाँ से पूरे जीवन के लिए अर्थात हमेशा के लिए यहाँ से चलें। यहाँ रहना व्यर्थ है। यहाँ छाया (आश्रय) कहीं नहीं मिलेगी। वृक्षों से तात्पर्य नेताओं और देश शासकों से है। जिनकी छत्रछाया एवं सुशासन में सुख शान्ति एवं समृद्धि मिलनी चाहिए थी, वे हमें कष्ट, अशान्ति बेकारी और व्याकुलता दे रहे हैं। इस देश से हम सदा सदैव के लिए कहीं दूसरी जगह चले चलें अथवा हम इस शासन को बदलकर दूसरी राजनीतिक पार्टी को सत्ता में लाये।

इस देश के लोग इतने संन्तोषी और अभावों में जीवन जीने के अभ्यासी हैं कि अगर इनके पास पहनने के लिए कमीज नहीं होगी तो पैर सिकोड़कर अपना पेट ढक लेंगे। इस प्रकार अपनी लज्जा बचा लेंगे। स्वतन्त्र देश की समृद्धि के लिए जो आहवान किया जा रहा है, उन जिम्मेदारियों का निर्वाह करने के लिए यह लोग कितने उपयुक्त हैं? यहाँ की जनता गरीबी में जीवन जीकर भी सरकार का साथ देती है। वास्तव में, यही जनता इस देश की शासन व्यवस्था की सुविधा के लिए बहुत उपयोगी और अनुकूल है।

विशेष या साहित्यिक सौंदर्य :

१) आधुनिक जीवन की विसंगतियों और विडम्बनाओं को इन पंक्तियों में व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है।
२) 'पॉवों से पेट' में अनुप्रास अलंकार है।
३) 'चिरागां' समृद्धि का, 'दरख्त' नेता का प्रतीक बनाकर प्रयोग किया गया है।

४) भाषा उर्दू है, सरल एवं बोधगम्य है। व्यंग्यात्मक शैली है।
५) यहा कवि की मानवतावादी विचारधारा है।

४.५ बोध प्रश्न :

१) 'दिवंगत पिता के लिए' कविता द्वारा कवि क्या संदेश देना चाहता है ?
२) 'दिवंगत पिता के लिए' कविता की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।
३) 'कहॉ तो तय था चिरागां हरेक घर के लिए' गजल का आशय अपने शब्दों में लिखिए।
४) दुष्यन्त कुमार की गजल में 'समकालीन भारतीय जीवन का यथार्थ चित्रण है' स्पष्ट कीजिए।
५) 'मोचीराम' कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ? प्रकाश डालिए।
६) 'मोचीराम' कविता का कथ्य अपने शब्दों में लिखिए।
७) 'रोटी' कविता के शीर्षक की सार्थकता को स्पष्ट कीजिए।
८) 'रोटी' पर ही मनुष्य का अस्तित्व निर्भर है' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

लघुत्तरी / वस्तुनिष्ठ प्रश्न:

i) घंटी कहॉ बजती थी ?
उत्तर घंटी अनाथाश्रम में बजती थी।

ii) अंधियारे में किसके पुकारने की आवाज आती थी ?
उत्तर अंधियारे में पिता के पुकारने की आवाज आती थी ।

iii) झूठ के इस मेले में पिता कैसे पडे रहे ?
उत्तर झूठ के इस मेले में पिता बैरागी की भॉति पड़े रहे।

iv) पूरे शहर के लिए क्या मयस्सर नहीं था ?
उत्तर पूरे शहर के लिए एक चिराग (दीपक) मयस्सर नहीं था ।

v) 'यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है ? पंक्ति का क्या अर्थ है ?
उत्तर इस पंक्ति का अर्थ होगा कि यहाँ पर पेड़ों की छाया में भी धूप लगती है ।

vi) 'पांवों से पेट ढंक लेंगे' में कौनसा अलंकार है ?
उत्तर 'पांवों से पेट ढंक लेंगे' में अनुप्रास अलंकार है ।

vii) 'मरें तो गैर की गलियों में गुलमोहर के लिए' यह पंक्ति किसने लिखी है ?
उत्तर 'मरें तो गैर की गलियों मे गुलमोहर के लिए' यह पंक्ति दुष्यन्त कुमार ने लिखी है।

viii) 'मोचीराम' कविता के कवि का नाम लिखिए ?
उत्तर 'मोचीराम' कविता के कवि का नाम धूमिल है।

ix) 'मोचीराम की नजर में आदमी क्या है ?
उत्तर 'मोचीराम की नजर में आदमी एक जोड़ी जूता है।

x) 'चुप और चीख' में कौन -सा अलंकार है ?
उत्तर 'चुप और चीख' में अनुप्रास अलंकार है।

xi) कवि केदारनाथ सिंह के अनुसार 'रोटी' के बारे में क्या करना हिमाकत की बात होगी ?
उत्तर कवि केदारनाथ सिंह के अनुसार रोटी के बारे में कविता करना हिमाकत की बात होगी।

xii) मनुष्य का अस्तित्व किस पर निर्भर है ?
उत्तर मनुष्य का अस्तित्व रोटी पर निर्भर है।

xiii) कवि केदारनाथ सिंह किस आग की ओर इशारा कर रहे हैं ?
उत्तर कवि केदारनाथ सिंह उस आग की ओर इशारा कर रहे - हैं जो पेट में पक रही है।

xiv) कवि ने अनुसार रोटी का पकना भूख के बारे में किसका बयान है।
उत्तर कवि के अनुसार रोटी का पकना भूख के बारे में आग का बयान है।

xv) 'दीवारें धीरे - धीरे स्वाद में बदल रही हैं ? यह पंक्ति किसने लिखी है ?
उत्तर दीवारे धीरे - धीरे स्वाद में बदल रही हैं, यह पंक्ति कवि केदारनाथ सिंह ने लिखी है।

५

‘अपनी केवल धार’, ‘घृणा और प्रेम कहाँसे शुरु होते हैं?’, ‘प्यारा हिंदुस्तान ’

इकाई की रुप - रेखा

५.० उद्देश्य
५.१ प्रस्तावना
५.२ कवि परिचय
५.३ कविता का भावार्थ
५.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
  i) कविता की पंक्ति
  ii) संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या, साहित्यिक सौंदर्य / विशेष
५.५ बोधप्रश्न, वस्तुनिष्ठ प्रश्न

५.० उद्देश्य :

इस खंड की पांचवी इकाई में हम तीन कविताएँ - ‘अपनी केवल धार’, ‘घृणा और प्रेम कहाँ से शुरु होते हैं?’ ‘ प्यारा हिन्दुस्तान’ दे रहे हैं। कविता के भावार्थ से पूर्व कवि परिचय दिया जा रहा है। जिससे कवि व उसकी रचनाओं के बारे में जानकारी हो सके। संदर्भ सहित स्पष्टीकरण भी दिया जा रहा है। साथ ही, कविता की अन्य विशेषताओं से भी परिचित कराया जा रहा है। इस इकाई को पढ़ने के बाद -

राष्ट्रप्रेम की भावना का निर्माण होगा।
पूंजीवाद के प्रति विद्रोह की भावना जागेगी।
सामाजिक भेद- भाव व विषमता दूर होगी।
कविता में प्रयुक्त कठिन शब्द व मुहावरों के अर्थ जान सकेंगे।
कविता के भाव पक्ष व शिल्प पक्ष के प्रति व्यापक समझ का निर्माण होगा।
अलंकारों व शब्द शक्तियों को समझ सकेंगे।
साहित्यिक अभिरुचि का निर्माण होगा।
उपर्युक्त विश्लेषण के माध्यम से कविता के महत्त्व
को समझने में सफलता मिलेगी।

५.१ प्रस्तावना :

समकालीन प्रगति शील कवि अरुण कमल द्वारा रचित ‘अपनी केवल धार’ में यह बतलाया गया है कि आज मनुष्य भौतिकवाद, भूमंडलीकरण व बाजार वाद के प्रभाव के कारण अपनी मूल शक्तियों से दूर होते जा रहा है।

'घृणा और प्रेम कहाँ से शुरु होते हैं? कविता में कवि ओम प्रकाश वाल्मीकि जी ने सामाजिक विषमता को घृणा का कारण बतलाया है। सदियों से सवर्णों के मन में सदैव दलितों के प्रति घृणा के भाव रहे हैं और उन्हें प्रताड़ित भी किया है, कवि कविता द्वारा यह बतलाने की कोशिश करता है।

'प्यारा हिन्दुस्तान' कविता में कवि सूरज पाल चौहान ने आज के हिन्दुस्तान का यथार्थ चित्रण किया है। साथ ही, व्यंग्य के माध्यम से अपने राष्ट्र प्रेम को दर्शाया है।

५.३ कवि परिचय

अरूण कमल : (जन्म १५ फरवरी १९५४)

अरूण कमल समकालीन कविता के बहुचर्चित कवि हैं। इनका जन्म १५ फरवरी १९५४ को बिहार के रोहताज जिले के नासरीगंज में हुआ। अपने सजग लेखन के लिए समय-समय पर 'भारतभूषण' अग्रवाल पुरस्कार, श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार, सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार तथा शमशेर सम्मान से सम्मानित किए जा चुके हैं। वर्ष १९९८ का साहित्य अकादमी पुरस्कार उनके तीसरे काव्यसंग्रह 'नये इलाके'को दिया गया है।

अरूण कमल ने अपनी कविताओं के माध्यम से समकालीन कवियों में एक विशिष्ट पहचान बनाई है। इनका काव्य संघर्षशील मनुष्य की गाथा और अपने समय और समाज के सच को समेटे हुए है। उनकी कविताएँ पाठक को प्रभावित ही नहीं करती अपितु उसे झकझोरती हैं, सोचने पर विवश करती हैं। 'अपनी केवल धार' कविता में वर्तमान शोषणमूलक व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश, नफरत और उसे उलटकर एक नई मानवीय व्यवस्था का निर्माण करने की आकुलता दृष्टिगत होती है। अपने समय के लोगों के के साथ चलते हुए, कवि ने जो कुछ भी अनुभव किया, मनुष्य पर आए गहरे दबाव को भोगा उसे यहाँ वाणी मिली है।

रचनाएँ :

चार कविता पुस्तकें – 'अपनी केवलधार' (१९८०) सबूत (१९८९), नये इलाके में (१९९६), पुतली में संसार (२००४) एक आलोचना – पुस्तक कविता और समय (१९९९) / वियतनामी कवि तो हू की कविताओं और टिप्पणियों की एक अनुवाद – पुस्तिका। मायकोब्स्की की आत्मकथा का अनुवाद अंग्रेजी में 'वायसेज़' नाम से भारतीय युवा कविता के अनुवादों की कविता में प्रकाशित ।

अपनी केवल धार : भावार्थ / कथ्य

'इस कविता में उन्होंने अपने युग और समय की समस्त पीड़ाओं', अन्तर्विरोधों और कसमसाती हुई सम्भावनाओं को वाणी दी है। वे घोषणा पूर्वक कहते हैं कि सम्पूर्ण अभिव्यक्ति उस जीवन की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है जो उन लोगों की है। उनलोगों से तात्पर्य निश्चित रूप से देश की मेहनतकश जनतासे है।

यहाँ कवि का मानना है सारा लोहा आम जनता का है जबकि उस पर धार बुद्धिजीवी, पूँजीवादी और उस समाज का मानते है जो भौतिकवाद, बाजारवाद एवं पश्चिमी देशों के

झंडाबरदार हैं। उत्तर आधुनिकता के दौर में लोग अपनी संस्कृति, और मानवतावादी दृष्टिकोण से विभक्त हो गए हैं। ये पक्तियाँ इस ओर भी संकेत करती हैं कि लोहा धार पाकर जैसे संघर्ष का हथियार बनता है, जीवन का अनुभव भी कवि का स्पर्श पाकर कविता के रूप में संघर्ष का हथियार बन जाता है। कवि जनता की चीज़ जनता से लेकर उसी को लौटा देता है लेकिन एक तीक्ष्ण अस्त्र के रूप में। कविता कैसे संघर्ष का हथियार बनती है इस प्रक्रिया को कवि ने सहज ही अभिव्यक्त कर दिया है ।

कवि कहता है कि जिससे हमारे शरीर का पोषण होता है वह अन्न एक आम किसान उपजाता है। जो वस्त्र विभिन्न ऋतुओं में हमारे शरीर की रक्षा करते हैं उसे एक साधारण बुनकर तैयार करता है। तात्पर्य यह है कि हम अपने जरूरत की प्रत्येक चीज़ें किसी अन्य से प्राप्त करते हैं, जिनका उत्पादन सर्वहारा वर्ग ही करता है। परन्तु वह इन मेहनतकश लोगों की उपेक्षा करता है। कवि अंत में कहता है कि आज का मनुष्य इतना लाचार और बाह्य वस्तुओं पर आश्रित हो गया है कि वह खुद की पहचान भूलता जा रहा है। लगता है कि आधुनिक परिवेश का व्यक्ति उधार की सम्पति पर जी रहा है। यदि कहने के लिए उसके पास अपना कुछ है तो ऐसा है जैसे लोहा किसी और का हो और उस परधार केवल मनुष्य की हो। समाज का निर्माण करने एवं गढ़ने का कार्य तो सर्वहारा वर्ग ही करता है क्योंकि उन लोगों की मेहनत के बिना जीवन-निर्वाह असम्भव-सा है।

'सर्वहारा वर्ग के महत्त्व को प्रतिपादित किया है तथा आधुनिक युग में मनुष्य कितना लाचार व विवश हो गया है कि उसकी अपनी पहचान ही नहीं है। वह दूसरों पर पूर्ण रुपेण अश्रित हो गया है।

साहित्यिक सौंदर्य :

१. इस कविता में मनुष्य के आन्तरिक विकास के लिए उसके पक्ष में सबूत पेश करने के साथ ही शोषकों के खिलाफ चेहरे बेनकाब करने का साक्ष्य भी ये बन जाती हैं।
२. यह कविता अपने व्यापकत्व में पूरी दुनिया की मानवीय चिंता का आधार लेकर अन्तर्राष्ट्रीय रागात्मकता की प्रगतिशील भावधारा का परिचय देती है।
३. भाषा – शिल्प की सामर्थ्य के बारे में कुछ पक्तियाँ अपने आप बोल उठती हैं- 'अपना क्या है इस जीवन में। सब तो लिया उधार। सारा लोहा उन लोगों का। अपनी केवलधार।'

ओमप्रकाश वाल्मीकि – (१९५०)

आजादी के ६६ वर्ष बाद भी भारतीय समाज विशेषकर हिंदू समाज वर्ण जातियों में विभाजित है। सिद्धान्तों के बाहर देखें तो आज भी लोगों की मानसिकता में कोई खास बदलाव नहीं है। 'पीड़ा' को भली-भाँति वहीं समझ सकता है जिसे उसने भोगा हो अर्थात् दलित की पीड़ा एक दलित ही व्यक्त कर सकता है। स्वतन्त्रता के बाद समानता का अधिकार सबको प्राप्त हुआ परिणामतः दलित वर्ग ने भी उच्च शिक्षा प्राप्त की। और, अपने ऊपर हुए अन्याय के प्रति अपनी संवेदना को व्यक्त किया।

ओमप्रकाश वाल्मीकि का जन्म ३० जून १९५० ई. को बरला, (मुजफ्फर नगर उ.प्र.) में हुआ। मेधावी छात्र होने के बावजूद भी समाज व्यवस्था की बुराइयों से दुखी मन उन्हें अपनी (दलित वर्ग की) पीड़ा व्यक्त करने के लिए झकझोरता रहा। आपके लेखन की सराहना हुई तथा

अनेक पुरष्कारों से आपको सम्मानित भी किया गया। जैसे डॉ. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार, अभिनय व निर्देशन के लिए दर्जनों पुरस्कार, परिवेश सम्मान, (१९५५) आदि।

रचनाएँ

काव्य : सदियों का सन्ताप, बस्स! बहुत हो चुका संकलित : दर्द के दस्तावेज, इन दिनों, उत्तर हिमानी। अंग्रेजी, बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी व उर्दू में प्रकाशित अनूदित रचनाएँ।

जूठन (आत्मकथा) सलाम (कहानी-संग्रह) नाटकों में रूचि होने के कारण लगभग ६० नाटकों में अभिनय व निर्देशन कर चुके हैं।

घृणा और प्रेम कहाँ से शुरू होते हैं? : भावार्थ / कथ्य

प्रस्तुत कविता 'बस्स! बहुत हो चुका' काव्य-संग्रह से लीगयी है। सामाजिक विषमता से उत्पन्न घृणा को कवि ने अभिव्यक्त किया है। कवि सवर्णों के मन में अपजी दलितों के प्रति घृणा के कारण को ढूढ़ने की कोशिश करता है। प्रारंम्भिक दौर में जाति विभाजन कर्म के आधार पर होता था किन्तु बाद में इसे जन्मजात मान लिया गया। फलस्वरूप वर्णव्यवस्था के आधार पर स्वीकृत नियमों ने लोगों में घृणा का भाव उत्पन्न कर दिया। उच्चकुल में जन्मे लोग अपने को श्रेष्ठ मानकर दलितों को प्रताड़ित करने लगे।

कवि कहता है कि छोटी-छोटी बातों पर दलितों को खुले आम बेरहमी से पीटा जाता था। दलित युवक संवेदनशील था, जिसने जंगल के फूलों और नदी की लहरों को अपना मित्र बनाना चाहा था। पर उसे रोका गया और पीटा भी गया। कवि कहता है कि एक माँ की आँखों के सामने उसके निरपराध बेटे को मारा गया और चाहकर भी माँ उसे बचा न सकी, उस माँ की पीड़ा को जरा याद कर सोचो उसे उस समय कैसा लगा होगा? उसी प्रकार उस बेटे की व्यथा की कल्पना करो जिसकी आँखों के सामने उसकी माँ को निर्वस्त्र कर दिया हो अथवा उस बूढ़े बाप का चेहरा याद करो जिसने पूरे दिन खेत पर कड़ी मेहनत की – खेत जोता, फसल काटी, आंगन की सफाई की और उसके बदले में उसे गालियां व फटकार मिली। कवि एक बार पुन: उस बाप का चेहरा याद करने के लिए कहता है जिसकी जवान बेटी की ओर अनेक उच्चवर्ण के लोगों की गिद्ध जैसी नजरें गड़ी हुई हैं। भला उस पिता पर क्या गुजरती है? इसे व्यक्त नहीं बल्कि अहसास ही कर सकते हैं। वैश्वीकरण के इस युग में जब दलित अपनी मेहनत से पढ़ - लिख कर नौकरी भी प्राप्त कर लेता है। तब भी उसके साथ मानवीय व्यवहार नहीं होता। कवि ऐसे सरकारी क्लर्क का चेहरा स्मरण में लाना चाहते हैं जिसे सवर्ण चपरासी पानी पिलाने में संकोच करता है।

भूमण्डलीकरण के इस दौर में दलित आज भी समाजद्वारा अपमानित एवं तिरस्कृत हो रहा है। कवि का शिक्षित सवर्ण समाज से प्रश्न है कि क्या अब भी तुम यह जानना नहीं चाहते कि 'घृणा और प्रेम कहाँ से शुरू होते हैं?'

कवि अपनी कविता के माध्यम से यह संदेश देना चाहता है कि भारतीय जन-मानस में व्याप्त भेद-भाव, ऊँच-नीच की भावना के कारण ही पारस्परिक घृणा का जन्म होता है। अत: सभी भारतवासियों के मन में 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना का प्रसार हो तभी घृणा का अन्त सम्भव है।

साहित्यिक सौंदर्य

१. कवि समानता की अपेक्षा कर 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' का संदेश देता है।
२. वर्णव्यवस्था के प्रति कवि का विद्रोही स्वर है।
३. भाषा विषय के अनुकूल है।

सूरज पाल चौहान – (१९५५)

सूरजपाल चौहान हिंदी के प्रतिष्ठित कहानीकारों में से एक हैं। दलित जाति में जन्म लेने के कारण आपने अपने जीवन में बहुत अपमान सहा । प्रतिकूल स्थितियों में भी बिना किसी आत्मीयता व लगाव के आपने अपनी शिक्षा पूरी की। इनका जन्म २० अप्रेल १९५५ ई. को. अलीगढ़ जिले के फुसावली नामक गाँव (उ.प्र.) में हुआ था। इनके संस्कार बार-बार इनकी स्मृतियों में आकर, इन्हें उत्तेजित करते हैं और इनकी कविता का विषय भी बन जाते हैं।

रचनाएँ

काव्य – क्यों विश्वास करूँ, कब होगी वो भोर प्रयास।

कहानी – हरि कब आएगा, नया ब्राह्मण, नया प्रशिक्षण। तिरस्कृत – (आत्मकथा) सन्तप्त (उपन्यास) महान दलित क्रांतिकारी योद्धा मातादीन (दलित साहित्य) आदि इसके अतिरिक्त इनकी कविताएँ 'दलित चेतना: कविता' में भी संग्रहीत हैं।

प्यारा हिन्दुस्तान :

प्रस्तुत कविता में कवि ने व्यंग्य के माध्यम से अपने राष्ट्र प्रेम को व्यक्त किया है। आम आदमी अपना जीवन असुरक्षित महसूस कर रहा है क्योंकि प्रशासन का कोई नियंत्रण नहीं है। 'आत्मसुखाय' की भावना सर्वत्र व्याप्त है।

कवि ने आज के हिन्दुस्तान की यथार्थ तस्वीर को चित्रित किया है। हत्याएँ, चोरी, ठगी, लूटमार की घटनाओं के चलते, आज सामान्य आदमी अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रहा हैं। नेता वर्ग अपनी मन-मानी कर रहा है और सरकार का इस पर कोई नियन्त्रण नहीं हैं। देश विदेशी कर्ज में डूबा जा रहा है, यह चिन्ता न तो बुद्धिजीवी को सता रही है और न आम आदमी को। यह अपने हिन्दुस्तान के प्रति कैसा प्यार है? इस पर कवि व्यंग्य करता है। कवि कहता है कि विश्व में सर्वश्रेष्ठ संस्कृति वाले अपने 'प्यारे हिन्दुस्तान' की तस्वीर आज बिल्कुल बिगड़ चुकी है। रक्षक ही भक्षक बन बैठे हैं। अनेक प्रकार की समस्याएँ देश पर मड़रा रही हैं। आम आदमी पूरी तरह से असुरक्षित है। हत्याएँ, चोरी ठगी लूटमार की घटनाएँ अब दिल दहलाने वाली नहीं लगती हैं। समस्याएँ मुँह बाए खड़ी हैं। देश विभिन्न जातियों में विभाजित है। भौतिक वादी प्रवृत्ति के बढ़ते लोग गॉव छोड़कर शहर की ओर भाग रहे है। कृषि के प्रति युवकों की बढ़ती अन्यमनस्कता के कारण देश का रोम-रोम विदेशी कर्ज में डूबा हुआ है। समस्याएँ अनंत हैं पर समाधान नहीं। कवि अपने प्यारे भारत की बिगड़ती तस्वीर को देखकर चिंतित है।

बुद्धिजीवी वर्ग एकमत नहीं है, सुविधा सम्पन्न कक्ष में बैठकर - 'वह अपनी – अपनी ढपली, अपना-अपना राग 'अलाप रहा है। देश के नागरिकों में देश के प्रति कोई आस्था व प्यार दिखाई नहीं देता। वह विदेशी सभ्यता व संस्कृति की ओर पूर्णरुपेण आकर्षित है। आज वह अपने देश का गौरव भूल, विदेशी व्यवस्था का गुणगान कर रहा है। यही हमारे 'प्यारे हिन्दुस्तान' की तस्वीर है।

कवि ने कविता के माध्यम से अपनी व्यक्तिगत 'छटपटाहट' व 'देशप्रेम' की भावना को अभिव्यक्त किया है। 'प्यारा हिन्दुस्तान' में वेदना के साथ व्यंग्य भी है।

साहित्यिक सौंदर्य

१. अपना-अपना में अनुप्रास की छटा दर्शनीय है।
२. 'अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग' प्रचलित कहावत का प्रयोग है।
३. भाषा विषय व भाव के अनुकूल है।
४. शासन व प्रशासन पर करारा व्यंग्य है।
५. कविता के माध्यम से कवि अपनी बेचैनी व राष्ट्रप्रेम को अभिव्यक्त करता है।
६. 'जातिवादी मानसिकता लोगों पर हावी है' बुद्धिजीवियों में संगठन का अभाव है।

महत्त्वपूर्ण अवतरण :

"याद करो,
उस बेटे का चेहरा
जिसके सामने फेंक दिये हों
नोच - नोचकर
उसकी माँ के वस्त्र।"

"बुद्धि जीवी
ड्राइंग - रूम में बैठकर
बजाते ढपली
अलापते अपना - अपना राग।

५.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

"अपना क्या है इस जीवन में
सब तो लिया उधार,
सारा लोहा उन लोगों का
अपनी केवल धार।"

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'काव्य –प्रदीप में संकलित कविता 'अपनी केवल धार' से ली गई हैं। इसके रचियता प्रगतिशील चेतना के कवि अरुण कमल हैं। इस कविता में कवि ने अपने युग और समय की समस्त पीड़ाओं, को अभिव्यक्ति दी है।

प्रसंग :

कवि कहता है कि आज का आधुनिक मानव भौतिकवाद के कारण मूल शक्तियों से दूर होता जा रहा है। साथ ही, आत्म केन्द्रित समाज में संवेदनशील व्यक्ति स्वयं को पूरी तरह अकेला और असहाय समझने लगता है।

व्याख्या :

कवि अरुण कमल को ऐसा लगता है कि आज की अर्थ केन्द्रित व्यवस्था समाज पर इस तरह हावी हो गयी है कि मनुष्य को अपना कुछ लगता ही नहीं है। इस व्यवस्था ने सबको अपना

गुलाम बना लिया है। जिसे देखकर ऐसा लगता है मानो सब कुछ जीवन में उधार लिया हुआ है। जीवन की मुख्य आवश्यकताओं (रोटी, कपड़ा, और मकान) की पूर्ति हेतु हमें किसान, दर्जी व मजदूरों पर निर्भर होना पड़ता है। हम पर सभी का कर्जा है अत: हमें किसान, दर्जी और मजदूर का आभारी होना चाहिए। बुद्धिजीवी वर्ग अपने बौद्धिक धार के कारण बड़े आराम से रहता है जबकि किसान, मजदूर वर्ग कड़ी मेहनत के बावजूद भी अच्छा जीवन नहीं जी पाते। बुद्धिजीवी एवं पूँजीपति लोग गरीबों के जीवन को नियंत्रित कर रहे हैं। भूमंडलीकरण के दौर में जो विकास हो रहा है, वह सिर्फ एक वर्ग तक सिमट कर रह गया है।

अंत में कवि यह कहना चाहता है कि समाज में सबकी उपयोगिता है। अत: मेहनती लोगों की हमें उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। आधुनिक परिवेश में रंगे व्यक्ति का अपना कुछ नहीं है अर्थात् वह अपनी पहचान भूलता जा रहा है। पूरी तरह उधार की सम्पत्ति पर जी रहा है। यदि कहने को उसके पास अपना कुछ है तो ऐसा है जैसे 'लोहा' किसी और का हो और उस पर 'धार' केवल मनुष्य की हो । समाज का निर्माण करने में सर्वहारा वर्ग की महत्त्वपूर्ण भूमिका है उनकी मेहनत के बिना जीवन निर्वाह कठिन है।

अत: वैश्वीकरण के दौर में व्यक्ति कितना असहाय हो गया है ? इसका सफल चित्रण इस कविता में किया गया है।

साहित्यिक सौंदर्य :

१. इस कविता में मनुष्य के आन्तरिक विकास के लिए उसके पक्ष में सबूत पेश करने के साथ ही शोषकों के खिलाफ चेहरे बेनकाब करने का साक्ष्य भी ये बन जाती हैं।

२. यह कविता अपने व्यापकत्व में पूरी दुनिया की मानवीय चिंता का आधार लेकर अन्तर्राष्ट्रीय रागात्मकता की प्रगतिशील भावधारा का परिचय देती है।

३. भाषा – शिल्प की सामर्थ्य के बारे में कुछ पक्तियाँ अपने आप बोल उठती हैं- अपना क्या है इस जीवन में। सब तो लिया उधार। सारा लोहा उन लोगों का। अपनी केवलधार।

५.५ बोध प्रश्न :

१) 'अपनी केवल धार' कविता में मनुष्य की असहायता का यथार्थ चित्रण है, स्पष्ट कीजिए।
२) 'अपनी केवल धार' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।
३) 'घृणा और प्रेम कहॉ से शुरु होते हैं' ? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
४) 'घृणा और प्रेम कहॉ से शुरु होते हैं ? कविता की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।
५) 'प्यारा हिंदुस्तान' कविता का व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।
६) 'प्यारा हिंदुस्तान' कविता के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

लघुत्तरी / वस्तुनिष्ठ प्रश्न:

i) कवि अरुण कमल इस शरीर को किसका बंधक मानते हैं ?

उत्तर कवि अरुण कमल इस शरीर को बाहरी उपादानों का बंधक मानते हैं।

ii) कवि ने इस जीवन में क्या लिया है ?

उत्तर कवि ने इस जीवन में सब उधार लिया है।

iii) 'सारा लोहा उन लोगों का अपनी केवल धार' यह पंक्ति किसने लिखी है ?

उत्तर 'सारा लोहा उन लोगों का अपनी केवल धार' यह पंक्ति अरुण कमल ने लिखी है।

iv) कवि वाल्मीकि किस मॉ का चेहरा याद करने की बात करते हैं ?

उत्तर कवि वाल्मीकि उस मॉ का चेहरा याद करने की बात करते हैं। जिसके बेटे की पिटाई बिना किसी उपराध के बड़ी निर्ममता से की जा रही हैं।

v) कवि किस सरकारी क्लर्क का चेहरा याद करने की बात करता है ?

उत्तर कवि उस सरकारी क्लर्क का चेहरा याद करने की बात करता है जिसका सवर्ण चपरास उसे पानी पिलाने से कतराता है।

vi) 'मिली गालियां –दुत्कार जिसे, कठिन श्रम के बदले' यह पंक्ति किस कवि ने लिखी है ?

उत्तर 'मिली गालियां –दुत्कार जिसे, कठिन श्रम के बदले' यह पंक्ति कवि ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने लिखी है ।

vii) 'प्यारा हिंदुस्तान' कविता में बुद्धिजीवी वर्ग क्या कर रहा है ?

उत्तर 'प्यारा हिंदुस्तान' कविता में बुद्धिजीवी वर्ग अपनी –अपनी ढपली और अपना-अपना राग अलाप रहा है।

viii) कवि सूरजपाल चौहान के अनुसार देश किसमें डूब चुका है ?

उत्तर कवि सूरजाल चौहान के अनुसार देश विदेशी कर्ज में डूब चुका है।

ix) देश का नागरिक नित किसका गुणगान करता है ?

उत्तर देश का नागरिक नित विदेश का गुणगान करता है।

x) 'अलापते अपना –अपना राग'पंक्ति में कौन -सा अलंकार है ?

उत्तर 'अलापते अपना –अपना राग'पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

❖❖❖

६

खरगोश के सींग

प्रभाकर माचवे

इकाई की रुप - रेखा

६.० उद्देश्य
६.१ प्रस्तावना
६.२ सारांश
६.३ टिप्पणी
६.४ महत्वपूर्ण अवतरण
६.५ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

६.० उद्देश्य :

- इस निबंध में मनुष्य की उस वृत्ति पर प्रहार किया गया है जो असंभव को संभव बनाने का प्रयास करती रहती है।
- प्रकृति के विरुध्द जाने से मनुष्य हँसी का पात्र बन जाता है।
- मनुष्य को आकाश कुसुम को पाने अथवा रेती में से तेल निकालने की प्रवृत्ति से बचना चाहिए। यह असंभव है।

६.१ प्रस्तावना व लेखक परिचय :

'खरगोश के सींग' प्रभाकर माचवे जी के चर्चित हास्य – व्यंग्यों में से एक है। प्रभाकर माचवे जी बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार हैं। आलोचना, उपन्यास, कहानी, कविता व्यंग्य आदि विधाओं में आपने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। अनुक्षण, स्वप्नभंग, तेल की पकौड़ियाँ, खरगोश के सींग, संगीनों का साया आदि आपकी महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं। प्रस्तुत हास्य व्यंग्य में माचवे जी ने मनुष्य की उस वृत्ति पर व्यंग्य किया है जो असंभव को संभव बनाने का प्रयास करती रहती है।

६.२ सारांश :

प्रस्तुत हास्य व्यंग्य में प्रभाकर माचवे जी यह बताने का प्रयास करते हुए दीख पड़ते हैं कि मनुष्य एक ज्ञान - वान प्राणी है किंतु कही – कहीं वह तर्क और विवेक से काम नहीं लेता और असंभव वस्तु को संभव बनाने की कोशिश में लग जाता है। लेखक मनुष्य की इस वृत्ति पर व्यंग्य करते हुए कहता है कि इस प्रकार का कार्य मूर्ख व्यक्ति ही करता है, उसे समझाने – बुझाने का प्रयास भी निरर्थक होता है। संस्कृत के श्लोक के आधार पर लेखक कहता है कि ऐसे मूर्ख को समझा पाना आसान नहीं है। एक बार रेती रगड़कर तेल भी मिल जाए, खरगोश के सींग उग आवें, परन्तु मूर्ख का ह्रदय क्षणभर भी नहीं बदलता।

माचवे जी कहते हैं कि विकास के साथ साथ प्रकृति और प्राणी जगत में अनेक परिवर्तन हुए, जैसे जैसे प्राणियों में दिमाग का विकास होता गया, वैसे-वैसे उन्होंने सींग का परित्याग कर दिया किंतु आज के अणु युग में भी कल्पकों की कमी नहीं है। विज्ञान के अद्‌भुत विकास ने असंभव समझी जानेवाली चीजों को भी संभव बनाया है। आज हमें असंभव समझी जाने वाली बातों के लिए तैयार रहना चाहिए। संभव है कि कोई चमत्कार हो जाए और खरगोश बकरी की तरह दो सींग पहनकर हमारे सामने उछलने लगे, क्योंकि मनुष्य की बुद्धि और कल्पना कब कौन सा अप्राकृतिक परिवर्तन या चमत्कार कर दे इस बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता।

६.३ टिप्पणी :

सींग के विविध उपयोग : लेखक प्रभाकर माचवे के अनुसार सींग का विविध रुपों में उपयोग हे रहा है। सींग से छड़ी, सारस, साँव, फूलदान,कलम, कँ घी, खिलौने इत्यादि बनाए जा रहे हैं। पुराने जमाने में सींग का प्रयोग बिगुल की तरह होता था। रण जृंग का प्रयोग वाद्‌य की तरह होता था। कुछ लोग सींग को खोखला बनाकर उसका उपयोग भर्मस की तरह भी करते थे। कुछ लोग अपने दीवानखाने को सजाने के लिए तो कुछ, झूठी शान के प्रदर्शन के लिए की हिरन या दूसरे अन्य जंगली जानवरों के सीगों का प्रयोग करते हैं। कुछ लोग अपने आदमकद आईने के पास मुर्दा आँखोंवाले हिरन की सीगों को लगाते हैं और बाद में उस पर वे अपने हैट, पैंट व कोट लटकातें हैं। इस प्रकार सींग के विविध उपयोगों का वर्णन लेखक करता है।

६.४ महत्वपूर्ण अवतरण :

''संस्कृत का श्लोक है कि एक बार रेती रगड़कर तेल भी मिल जाए; खरगोश के सींग उग आवें, परन्तु मूर्ख का ह्रद-न क्षणभर भी नहीं बदलता।''

संदर्भ:- प्रस्तुत अवतरण 'खरगोश के सींग' नामक रचना से लि-ा ग-ा है। इसके लेखक विष्णु प्रभाकर जी हैं।

प्रसंग:- उपर्-ुक्त अवतरण में लेखक मनुष्-न मन की उस वृत्ति पर व्-ांग्-न करता है, जिसके कारण वह असंभव चीजों को संभव बनाने के मूर्खतापूर्ण प्र-ास में लगा रहता है।

व्-ाख्-ाा:- प्रस्तुत अवतरण में लेखक प्रभाकर माचवे जी बताते हैं कि आज मनुष्-न असंभव समझी जानेवाली चीजों को संभव बनाने की मूर्खता में लगा हुआ है। वे कहते हैं कि आज संस्कृत का वह श्लोक पूरी तरह से चरितार्थ हो रहा है, जिसमें -नह कहा ग-ाा है कि रेती को रगड़कर तेल मिल जाए अथवा खरगोश को सींग निकल आ-ने अर्थात असंभव वस्तुएँ चाहे किसी दैव -नोग से संभव हो जाएँ किंतु मूर्ख व्-यक्ति अपनी मूर्खता से क्षणभर को भी डिगता नहीं अर्थात वह अपनी मूर्खता पर अटल रहता है। लेखक -नहाँ संकेत करता है कि आज मनुष्-न इसी प्रकार की मूर्खता में लगा हुआ है। वह तमाम उन चीजों पर अपना श्रम, सम-न व पैसा बर्बाद कर रहा है, जो प्राकृतिक रुप से संभव नहीं हैं। आज का मनुष्-न खरगोश में सींग उगाने की कोशिश में लगा है जो न तो संभव है और न ही आवश्-नक।

लेखक मनुष्-न को उसकी मूर्खता के प्रति सचेत करना चाहता है और उसे इस बात का आभास करना चाहता है कि यदि वह अपने सम-न, श्रम व संसाधन का प्र-नोग उचित जगह करे तो वह ज्-नादा उत्पादक व रचनात्मक होगा।

विशेष:- उपर्-युक्त अवतरण में मनुष्-न की उस वृत्ति पर व्-यंग्-न कि-ाा ग-ाा है, जिसमें वह असंभव को संभव बनाने की कोशिश में लगा रहता है।

संदर्भ सहित व्-ाख्-ाा हेतु अन्-न महत्त्वपूर्ण अवतरण।

(१) ''और -नह आशा न होती तो विधाता की सृष्टि को हम ज्-नों-का-त्-नों मंजूर कर लेते। मगर नहीं, हम भरसक कोशिश करते हैं कि इस सृष्टि को बदलेंगे। न-ाा बनाएँगे, बेहतर बनाएँगे।''

(२) ''नन्दी और कुछ आदमि-नों में बहुत बातों में साम्-न है। क्-नोंकि जब तक उसे छुओ नहीं, शिवजी का दर्शन दुर्लभ है, वैसे ही जब तक चपरासी साहब -ना प्राईवेट सेक्रेटरी साहब को पुजापा नहीं चढ़े, बड़े साहब के दर्शन नामुमकिन होते हैं।''

६.५ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न :

१) 'खरगोश के सींग' व्यंग्य का भाव स्पष्ट करते हुए, व्यंग्य को समझाइए।

❖❖❖

६-अ

भोलाराम का जीव

हरिशंकर परसाई

इकाई की रुप - रेखा

६.अ.१ उद्देश्य
६.अ.२ प्रस्तावना
६.अ.३ सारांश
६.अ.४ टिप्पणी
६.अ.५ महत्वपूर्ण अवतरण
६.अ.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

६.अ.१ उद्देश्य :

- इस हास्य व्यंग्य के माध्यम से हरिशंकर परसाई जी प्रशासनिक भ्रष्टाचार को उजागार करते हैं।
- प्रशासनिक कार्यों की गति, फाइलों के प्रपंच में उलझी व्यवस्था व सरकारी बाबुओं के काइयांपन को यह व्यंग्य हमारे सामने लाता है।
- भोलाराम की तरह आम आदमी की लाचारी पर यह व्यंग्य प्रकाश डालता है।

६अ.२ प्रस्तावना व लेखक परिचय :

व्यंग्य विधा को आम जन में लोकप्रिय बनानेवाले हिंदी के कुछ महत्त्वपूर्ण व्यंग्यकारों में परसाई जी अग्रगण्य हैं। 'सुनो भाई साधो', 'ठिठुरता हुआ गणतन्त्र, 'वैष्णव की फिसलन' 'तट की खोज' 'विकलांग श्रद्धा का दौर', 'हम इस उम्र से वाकिफ हैं, 'तुलसीदास चंदन घिसें', इत्यादि आपकी चर्चित रचनाएँ हैं। आप साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हैं तथा पद्मश्री से विभूषित किए गए हैं।

प्रस्तुत हास्य व्यंग्य में परसाई जी सरकारी दप्तरों में व्याप्त प्रशासनिक भ्रष्टाचार को उजागार करते हैं।

६.अ.३ सारांश :

'भोलाराम का जीव' हास्य – व्यंग्य भोलाराम के जीव को केंद्र में रखते हुए सरकारी दप्तरों में व्याप्त भ्रष्टाचार पर प्रकाश डालता है। भोलाराम रेलवे की नौकरी से सेवामुक्त होकर

अपना जीवन बिता रहे थे। पेंशन की प्रतीक्षा कर रहे थे। कई बार पेंशन को लेकर वे अर्जी दे चुके थे । किंतु उनकी अर्जी पर पेंशन विभाग ने कोई विचार नहीं किया, आखिर नौबत यहाँ तक आ गई कि घर के जेवर – गहने, और बर्तन इत्यादि बेचकर घर का खर्च चलाने की कोशिश होने लगी। इसी बीच भोलाराम का पेंशन के लिए प्रयास चलता रहा और एक दिन चिंता में घुलते – घुलते उसकी मृत्यु हो जाती है। यमदूत भोलाराम के जीव को लेकर यमलोक की तरफ तेजी से बढ़ता है किंतु बीच रास्ते से ही अचानक भोलाराम का जीव गायब हो जाता है। यमदूत बहुत कोशिश करता है, किंतु वह भोलाराम के जीव को खोज पाने में असफल रहता है। थका – हारा यमदूत खाली हाथ यमलोक पहुँचता है और सारी स्थिति से यमराज को अवगत कराता है। यमराज की परेशानी बढ़ जाती है, इसी बीच नारद मुनि यमलोक पहुँचते हैं और सारी समस्या से अवगत होते हैं। यमराज की प्रार्थना पर वे पृथ्वीलोक पर आकर भोलाराम के जीव की तलाश में जुट जाते हैं।

भोलाराम के जीव को खोजते हुए नारद भोलाराम के घर पर पहुँचते हैं। भोलाराम की पत्नी से भोलाराम के व्यक्तिगत जीवन के बारे में जानने की कोशिश करते हैं। नारद मुनि जब चलने लगते हैं तब भोलाराम की पत्नी नारद मुनि से अपने दिवंगत पति की पेंशन दिलवाने की प्रार्थना करती है। भोलाराम की पत्नी की प्रार्थना पर नारद को दया आ जाती है और वे पेंशन कार्यालय पहुँच जाते हैं। वहाँ वे बाबुओं के टेबलों के चक्कर लगाते हैं। अंततः उन्हें यह पता चलता है कि चूँ कि भोलाराम ने अपनी दरख्वास्तों पर वजन नहीं रखा इसलिए उसके दरख्वास्त उड़ गए और उसकी फाइल आगे नहीं सरकी। इधर उधर भटकने के बाद एक चपरासी नारद से कहता है कि इधर उधर मत भटको महराज सीधे बड़े साहब से मिललो अगर वे खुश हो गए तो तुम्हारा काम हो जाएगा।

नारद बड़े साहब से मिलते हैं। पहले तो बड़े साहब इधर उधर की बातें करते हैं। पेंशन के नियम समझाते हैं और साथ ही साथ वजन रखकर अपना काम करवा लेने का संकेत भी दे देते हैं। नारद के पास वजन के रुप में रखने के लिए वैसे तो कुछ भी नहीं था, इतने में बड़े साहब की नजर नारद की वीणा पर पडती है और वे नारद, को वीणा ही वजन के रुप में रखने की सलाह दे देते हैं। जिससे उनकी लड़की गाना – बजाना आसानी से सीख सके।

अंततः बेचारे नारद विवश होकर अपनी वीणा वजन के रुप में साहब को दे देते हैं। साहब ,खुश होकर भोलाराम की फाइल मंगवाते हैं और जैसे ही फाइल खोलने की कोशिश करते हैं और नारद से फाइल पर देखे हुए नाम को निश्चित करने के लिए संबंधित व्यक्ति का नाम पूछते हैं वैसे ही एक आश्चर्य जनक घटना घटती है। नारद द्वारा भोलाराम का नाम बताते ही सहसा फाइल में से आवाज आती है- कौन पुकार रहा है मुझे ? पोस्टमैन है क्या ? पेंशन का आर्डर आ गया ? की आवाज आती है। साहब तो डर के मारे एक और लुढ़क जाते हैं लेकिन नारद सारी बात समझ जाते हैं। नारद भोलाराम के जीव को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि चलो भोला राम स्वर्ग में तुम्हारा इंतजार हो रहा है, मैं नारद तुम्हें लेने आया हूँ। इस पर भोलाराम का जीव कहता है, "मुझे नहीं जाना। मैं तो पेंशन की दरख्वास्तों में अटका हूँ। यहीं मेरा मन लगा है। मैं अपनी दरख्वास्तों को छोड़कर नहीं जा सकता।" इस तरह लेखक ने प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से सरकारी दप्तरों में व्याप्त भ्रष्टाचार व अकर्मण्यता को उजागर किया है।

'भोलाराम का जीव के नारद :- ' भोलाराम का जीव' के नारद धर्मराज की प्रार्थना पर भोलाराम के गायब हुए जीव को खाजने के लिए पृथ्वी पर आते हैं। पृथ्वी पर आकर वे भोलाराम के घर पर जाते हैं और भोलाराम की मृत्यृ व आचरण को लेकर पूछताछ करते हैं। चलते चलते भोलाराम की पत्नी उनसे प्रार्थना करती हैं कि महाराज आपतो सिध्द पुरुष हैं, आप यदि कोशिश

कर दें तो हमें शायद भोलाराम की पैंशन मिल जाए और हम लोग मरने से बच जाएं। नारद को दया आ जाती हैं और वे पेंशन कार्यालय पहुँच जाते हैं। वहाँ जाकर वे विचित्र स्थिति में पड़ जाते हैं। पेशंन कार्यालय के बाबू लोग उन्हें एक टेबल से दूसरे टेबल पर दौडते हैं। नारद की यह दुर्दशा एक चपरासी देख रहा होता है। वह नारद से कहता है कि महाराज इधर उधर दौड़ने से काम होनेवाला नहीं है। सीधे जाकर बड़े साहब से मिल लो काम हो जाएगा।

६.अ.४ टिप्पणी :

नारद बड़े साहब की केबिन में बिना इजाजत के घुस जाते हैं। पहले तो बड़े साहब नारद पर बिगड़ जाते हैं फिर नारद के आने का उद्देश्य पूछते हैं। नारद भोलाराम की पेंशन की बात बताते हैं। इस पर साहब कहते हैं कि काम हो जाएगा किंतु उसके बदले में नारद को वजन रखना होगा। नारद मजबूर होकर वजन के रुप में अपनी वीणा को रखने के लिए तैयार हो जाते हैं। साहब भोलाराम की फाइल मंगवाते हैं । और नाम को एक बार फिर से निश्चित करने के उद्देश्य से नारद से पूछते हैं कि क्या नाम बताया साधुजी आपने? इस पर नारद जोर से भोलाराम कह उठते हैं। सहसा नाम सुनकर फाइल में छिपी भोलाराम की आत्मा बोल उठती है। नारद समझ जाते हैं, वे कहते हैं भोलाराम मैं नारद हूँ तुम्हें लेने आया हूँ चलो स्वर्ग में तुम्हारा इंतजार हो रहा है। इस पर भोलाराम की आत्मा उत्तर देती है कि मुझे नहीं जाना । मैं तो पेंशन की दरख्वास्तों में अटक हूँ। यहीं मेरा मन लगा है। में अपनी दरख्वास्तों छोड़कर नहीं जा सकता।

६.अ.५ महत्वपूर्ण अवतरण :

''महाराज, आप क-ों इस झंझट में पड़ ग-े। आप अगर साल-भर भी -हाँ चक्कर लगाते रहें, तो भी काम नहीं होगा। आप तो सीधे बड़े साहब से मिलिए। उन्हें खुश कर लि-ा तो अभी काम हो जाएगा।''

संदर्भ:- प्रस्तुत अवतरण भोलाराम का जीव नामक रचना से लि-ा ग-ा है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई जी हैं।

प्रसंग:- उप-ुर्क्त अवतरण में एक सरकारी चपरासी नारद को सरकारी दफ्तर में काम करवाने का तरीका समझा रहा है।

व्-ाख्-ा:- नारद भोलराम की पेंशन के सिलसिले में सरकारी ऑफिस में एक बाबू के टेबल से दूसरे बाबू के टेबल तक भटक रहे होते हैं। हर कोई कोई न कोई बहाना बताकर उनसे 'पिंड छुड़ाने में लगा होता है, क-ोंकि उन्हें पता है नारद काम करवाने के बदले पैसे देने वाले नहीं हैं। नारद की इस स्थिति को एक चपरासी दूर से देख रहा था। उसे नारद पर द-ा आ जाती है और वह नारद को काम करवाने का सीधा तरीका बताते हुए कहता है कि, महाराज आप इस झंझट में क-ों पड ग-े, आप साल भर इधर-उधर का चक्कर लगाते रहेंगे तब भी आपका काम होनेवाला नहीं है। आप सीधे बडे साहब से मिल लीजिए, आपने उन्हें खुश कर लि-ा तो आपका काम हो जाएगा।

विशेष:- उपर्युक्त अवतरण सरकारी कार्यालयों में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर करता है।

संदर्भ सहित व्याख्या हेतु अन्य महत्त्वपूर्ण अवतरण।

(१) ''साधुओं की बात कौन मानता है ? मेरा यहाँ कोई मठ तो है नहीं। फिर भी मैं सरकारी दफ्तर जाऊँगा और कोशिश करूँगा।''

(२) ''मुझे नहीं जाना। मैं तो पेंशन की दरख्वास्तों में अटका हूँ। यहीं मेरा मन लगा है। मैं अपनी दरख्वास्तें छोडकर नहीं जा सकता।''

६.अ.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

१) ' भोलाराम का जीव' व्यंग्य में नारद को भोलाराम के पेंशन हेतु क्या – क्या जहमतें उठानी पड़ीं ?

२) 'भोलाराम का जीव' व्यंग्य के आधार पर सरकारी दप्तरों में व्याप्त भ्रष्टाचार पर रोशनी डालिए।

❖❖❖

६ - ब

एक रेल सफर की बात

शंकर पुणतांबेकर

इकाई की रुप - रेखा

६.ब.१ उद्देश्य
६.ब.२ प्रस्तावना
६.ब.३ सारांश
६.ब.४ टिप्पणी
६.ब.५ महत्वपूर्ण अवतरण
६.ब.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

६.ब.१ उद्देश्य :

- प्रस्तुत हास्य व्यंग्य के माध्यम से पुणतांबेकरजी भारतीय रेल सफर में आनेवाली कठिनाइयों को उजागर करते हैं।
- रेल व्यवस्था की लेट – लतीफी, अव्यवस्था व असंवेदनशीलता पर लेखक प्रकाश डालता है।
- रेल सफर जो कभी आनंददायक हुआ करती थी आज जेल सफर बन चुकी है।
- रेल सफर गरीबों की पहुंच से दिन –ब – दिन दूर होती जा रही है। उनके लिए जिल्लत व परेशानी का सबब बनती जा रही है।

६ब.२ प्रस्तावना व लेखक परिचय :

'एक रेल सफर की बात' शंकर पुणतांबेकरजी के चर्चित हास्य व्यंग्यों में से एक है। शंकर पुणतांबेकर वरिष्ठ व्यंग्य लेखक हैं। 'बचाओ मुझे डॉक्टर से बचाओ' 'रेडीमेड कपड़े' एक मंत्री स्वर्गलोक में' 'अंगूर खट्टे नहीं है' इत्यादि आपकी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं। प्रस्तुत व्यंग्य में भारतीय रेल में व्याप्त अव्यवस्था को लेखक ने रेखांकित किया है।

६.ब.३ सारांश :

लेखक शंकर पुणतांबेकर प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से वर्तमान भारतीय रेल व्यवस्था में व्याप्त अव्यवस्था को उजागर करते हैं। लेखक कहता है कि एक समय ऐसा. भी था जब भारतीय रेल यात्रा खेल यात्रा हुआ करती थी उस समय रेलयात्रा उड़नखटोले का आनंद दिया करती थी। किंतु समय के साथ साथ यह स्थिति भी बदल गई। आज रेल व्यवस्था की

अराजकता के कारण वह जेलयात्रा में बदल चुकी है। समय के विकास के साथ हमारी जरूरतें तो बढ़ी किंतु उन जरूरतों को पूरा करने में रेल व्यवस्था नाकाम रही, परिणामतः आज रेल यात्रा आम आदमी के लिए परेशानी का सबब बनती जा रही है। लेखक अपनी ही रेलयात्रा का उदाहरण देते हुए कहता है कि दिल्ली यात्रा के आरक्षण हेतु जब वह टिकट खिड़की पर पहुँच तो पाया कि लंबी कतार लगी हुई हैं। दस घंटे खड़े रहने के बाद जब लेखक टिकट खिड़की पर पहुँचा तब टिकट बाबू ने बड़े असंवेदनशील तरी के से उसके हाथ को टिकट खिड़की से बाहर ढकेलते हुए समय समाप्त होने की बात कहकर टिकट खिड़की बंद कर दी। दूसरे दिन फिर लेखक सुबह पाँच बजे ही टिकट खिड़की पर पहुँच गया और चार घंटे कतार में खड़े होने के बाद उसे दिल्ली का टिकट मिल पाया।

जिस दिन यात्रा करना था लेखक अपनी पत्नी के साथ निर्धारित समय पर स्टेशन पहुँच गया, किंतु वहाँ पहुँच कर पता चलता है कि ट्रेन निर्धारित समय से एक घंटे लेट है। ट्रेन चार घंटे लेट पहूँचती है। इस बीच लेखक स्टेशन पर व्याप्त अराजकता तथा बड़े – बड़े आकर्षक विज्ञापनों के पोस्टरों को देखते हुए अपना समय काटते है और ट्रेन के आने के बाद जब वे अपनी सीट पर बैठ जाते हैं तब उन्हें विश्वास होता है कि वे अब दिल्ली पहुँच जाएंगे।

६.ब.४ टिप्पणी :

गुजरे जमाने की रेल यात्रा : – आज की रेलयात्रा की मुश्किलों को ध्यान में रखते हुए लेखक गुजरे जमाने की रेलयात्रा के सुखद पक्ष का वर्णन करता है। वह कहता हैं कि भारतीय रेल – सफर जो आज जेल सफर बना हुआ है वह कभी खेल सफर था। टिकट खिड़की पर कहीं कोई कतार नहीं होती थी, डिब्बें में भीड नहीं होती थी, भीड़ में चोर उचक्के नहीं होते थे। डिब्बे में प्रवेश करते समय भी लोग सौजन्यता पूर्ण व्यवहार किया करते थे। लोग लाट से फैलकर बैठते थे और रेल सफर का भरपूर आनंद उठाया करते थे। लेखक उन दिनों के रेल सफर को याद करते हुए कहता है कि उन दिनों भारतीय रेल पटियों के देश की रेल थी और यात्रा करते समय पटियों के उड़न खटोले की तरह ही आनंद देती थी। मात्रियों में भी आत्मीयता व सहजता होती थी। तब बाजारवादी मानसिकता लोगों पर हावी नही हुई थी लोग सादगी में विश्वास रखते थे। लेखक कहता है कि तब रेल गाड़ियाँ भी सुपर, डीलक्स या राजधानी जाति की पैदा नहीं हुई थीं। वे जनता की भीं, जनता के लिए थीं। इस तरह से गुजरे जमाने की रेलयात्रा को लेखक बड़े आत्मीय रुप से याद करता है।

६.ब.५ महत्वपूर्ण अवतरण :

'' आपको आश्चर्-ा नहीं होना चाहिए जानकर कि मैं बीसि-ों बार दिल्ली ग-ा हूँ, पर आज तक मैंने न कुतुबमीनार देखा है और न लाल किला। अपने व्-ापारी कामकाज के पीछे इन फालतू बातों में कौन सम-ा बरबाद करे !''

संदर्भः- प्रस्तुत अवतरण 'एक रेल-सफर की बात' नामक रचना से लि-ा ग-ा है। इसके लेखक शंकर पुणतांबेकर जी हैं।

प्रसंगः- प्रस्तुत अवतरण में लेखक का पड़ोसी किसनलाल लेखक को -ह बताता है कि उसके लिए कुतुबमीनार व लालकिले का कोई विशेष महत्त्व नहीं है। उसके लिए उसके अपने व्-ापारिक उद्देश्-ा ज्-ादा महत्त्वपूर्ण हैं।

व्-याख्-या:- लेखक दिल्ली जाना चाहते थे। कई बार मन बना-ा पर जा न सके, किंतु उनके पड़ोसी किसनलाल करीब-करीब हर माह दिल्ली जाते थे। लेखक को लगा कि किसनलाल कई बार दिल्ली गए हैं, उन्होंने कुतुबमीनार व लाल किला जैसी ऐतिहासिक इमारतें जरुर देखी होंगी। लेखक के मन में इन राष्ट्री-न धरोहरों के प्रति श्रध्दा व अभिमान का भाव है किंतु किसनलाल लेखक की आशा के ठीक विपरीत उत्तर देते हुए कहते हैं कि उन्होंने दिल्ली -ात्रा बीसि-ों बार की है, किंतु न तो वे कभी कुतुबमीनार गए हैं और न कभी लाल किला। किसनलाल के अनुसार इन जगहों पर जाने का अर्थ है अपने सम-न को बर्बाद करना। इन सभी चीजों में वे अपना सम-न बर्बाद नहीं करते उनके लिए उनके अपने व्-यापारिक उद्देश-न इन सभी चीजों से ज्-यादा महत्त्वपूर्ण हैं।

विशेष:- उप-र्युक्त अवतरण में लेखक -ह बताता है कि किस तरह हम भारती-न लोग अपने राष्ट्री-न धरोहरों के प्रति उपेक्षा का भाव रखते हैं। हमारे लिए -े सभी चीजें महत्त्वहीन होती जा रही हैं।

संदर्भसहित व्-याख्-या हेतु अन्-य महत्त्वपूर्ण अवतरण.

(१) ''कोई दिल्ली गाँधीजी के लिए नहीं जाता। हाँ, आप ऐसा करें दिल्ली सूट का कपडा खरीदने जा-ें और इस दौरान गाँधी-समाधि को भेंट दें।''

(२) ''श्रीमती साथ थी तब भी बोर हो ग-ा था। कहते हैं ऐसे सम-न प्रेमिका साथ हो तो आदमी बोर नहीं होता। पर हर आदमी तो कार की तरह प्रेमिका रखना अफोर्ड नहीं कर सकता।''

६.ब.६ अभ्यास हेतु दिर्घोत्तरी प्रश्न

१) 'दिल्ली यात्रा' हेतु लेखक शंकर पुणतांबेकर को किन किन तकली फों से होकर गुजरना पड़ा ? व्यंग्य के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

❖❖❖

७

'अंगद का पाँव'

श्रीलाल शुक्ल

इकाई की रुप - रेखा

७.१ उद्देश्य
७.२ प्रस्तावना
७.३ सारांश
७.४ टिप्पणी
७.५ महत्वपूर्ण अवतरण
७.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

७.१ उद्देश्य :

- प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से व्यंग्यकार श्रीलाल शुक्ल मनुष्य की उस मनोवृत्ति पर प्रहार करते हैं जिसके कारण वह हमेशा कुछ न कुछ, कहता रहता हैं। किसी न किसी विषय पर अपनी राय देता है या बेकार की बकबक करता रहता है।
- इस आदत के कारण मनुष्य समय व श्रम को व्यर्थ करता है।
- सच्चा मित्र ही अंत तक साथ देता है। केवल उपरी आचरण से मित्र बनने या मित्र होने का ढोंग करने वाले मित्र लंबे समय तक साथ नहीं देते।

७.२ प्रस्तावना व लेखक परिचय :

श्रीलाल शुक्ल हिंदी के अग्रणी व सुप्रतिष्ठित व्यंग्यकार हैं। 'रागदरबारी' 'अंगद के पाँव', 'उमराव नगर में कुछ दिन', 'कुछ जमीन पर कुछ हवा में', इत्यादि आपकी सुप्रतिष्ठित व्यंग्य कृतियाँ हैं। प्रस्तुत व्यंग्य में लेखक ने मनुष्य के कुछ न कुछ बोलते रहने की मनोवृत्ति पर व्यंग्य किया है।

७.३ सारांश :

प्रस्तुत व्यंग्य में लेखक श्रीलाल शुक्ल यह बताते हैं कि उनके एक मित्र जो उच्च पदस्थ अधिकारी थे उनका तबादला हो गया था, उन्हें विदा करने के लिए उनके अनेक मित्र व मातहत स्टेशन पर इकट्ठा हुए। इन सभी ने बारी – बारी से मित्र को फूल – मालाएं पहनाई।

मित्र ने सहर्ष सबके द्वारा दिए गए मानसम्मान को स्वीकार किया और फर्स्ट क्लास के डिब्बेके पास जाकर खड़े हो गए। सारी औपचारिकताएं हो चुकीं थीं मित्र सिग्नल के डाउन होने व गाड़ी के छूटने का इंतजार कर रहे थे। किंतु, गाड़ी थी कि छूटने का नाम ही नहीं ले रही थी।

गाड़ी के न छूटने की स्थिति में लोग छोटे छोटे समूह बनाकर इधर उधर की बातें करने लगे कुछ लोग पास के बुक स्टाल पर जाकर अखबार के पन्ने पलटने लगे, तो कुछ लोगों के मन में कला, कौशल व ग्रामोद्योग के प्रति एकदम से प्रेम उत्पन्न हो गया और ये लोग पास की दुकान पर जाकर हैंडि क्रैप्ट के नमूने देखने लगे। कुछ लोग गेंदे के फूल और गुलाब की वैरायटियों की चर्चा करने लगे। लेखक कहता है कि इस सब के बीच मित्र लगभग उपेक्षित हो गए। उनके चेहरे पर दयनीय मुस्कान व झेप आसानी से देखी जा सकती थी। इसी बीच दर्शनशास्त्र के एक प्रोफेसर साहब जिंदगी व दबाव के रहस्य पर अपने मित्रों को उपदेश पिलाने लगे।

मित्र ट्रेन के न छूटने की स्थिति में व व्यर्थ की चर्चा तथा अपनी उपेक्षा को झेलते हुए परेशान हो चुके थे वे स्थिति को लेकर असहज थे। मुस्कुराना चाहते थे किंतु मुस्कुरा नही पा रहे थे। इसी बीच गार्ड ने सीटी दी। झण्डी हिलाई। इंजन का भोंपू बजा और गाड़ी चलने को हुई। लोगों ने लपककर मित्र से हाथ मिलाया और ट्रेन चलने को हुई। अचानक एक साहब जो वजन लेने वाली मशीन पर वजन ले रहे थे दौड़कर आए और गाड़ी के चलते चलते उन्होंने मित्र से हाथ मिलाया और गाडी को निश्चित चलता हुआ पाकर वे बड़े हसरत के साथ बोले "काश, कि यह गाड़ी यहीं रह जाती।"

इस –प्रकार लेखक श्रीलाल शुक्ल यह बताने की कोशिश करते हैं कि हममें से अधिकांश लोग बिना मतलब के ही बकबक करते रहते हैं और जिन्हें हम मित्र के रुप में अपने आस –पास पाते हैं। वस्तुत: वे अवसरवादी व दिखावटी मित्र होते हैं।

७.४ टिप्पणी :

'अंगद का पाँव' के मित्र :- लेखक के मित्र का स्थानांतरण हुआ था। उन्हें विदा करने के लिए स्टेशन पर अच्छी –खासी भीड़ जमा थी। मित्र के मातहतों की भीड़ लगी हुई थी कोई उन्हें माला पहना रहा था तो कोई हाथ मिला रहा था। लगभग सारी औपचारिकताएं पूरी हो चुकी थीं और मित्र भी अपने प्रथम श्रेणी के डिब्बे के पास खड़े हो गए थे। गाड़ी का समय हो गया था किंतु गाड़ी छूट नहीं रही थी लेखक के अनुसार सारी औपचारिकताओं के बाद मित्र ट्रेन के न छूटने पर बड़े असमंजस की स्थिति में थे वे समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें और क्या न करें। प्रारंभ में मित्र के मातहतों ने उनसे जो आत्मीयता दिखाई थी वह अब गायब हो चुकी थी। लोग मित्र को अकेला छोड़कर इधर उधर बिखर गये थे। मित्र अपने आपको उपेक्षित व अपमानित महसूस करने लगे। समय काटने के लिए मित्र अपने पुराने नौकर से बातचीत करने लगे। लोग इधर उधर की बातें कर रहे थे, कुछ लोग पान-सिगरेट के इंतजाम में लगे हुए थे तो कुछ अखबार स्टालों पर इकट्ठा हो गए थे। मित्र बेचारे बेकार की बकवास व उपेक्षा झेलने के लिए मजबूर थे क्योंकि गाडी छूट नहीं रहीं थी। मित्र के सामने मित्रों के मुँह पर दयनीय मुस्कान देखी जा सकती थी। लगता था कि वे मुस्कराना तो चाहते हैं पर किसी से आँख नहीं मिलाना चाहते।

तभी अचानक गार्ड ने सीटी दी। झंडी हिलाई। इंजन का भौंपू बज उठा और मित्र लपककर डिब्बे में चढ़ गए। और लोगों से हाथ मिलाने लगे और राहत की सांस ली। कुछ लोग

रुमाल हिलाने लगे । लेखक ने भी रुमाल हिलाना चाहा पर सदा की भाँति वे रुमाल घर पर ही भूल गए थे। और ऐसे में वे हाथ हिलाने लगे। इतने में एक सज्जन दौड़ते – दौड़ते आये उन्होंने मित्र से बड़े उत्साह के साथ हाथ मिलाया और गाड़ी को निश्चित रुप से चलती हुई पाकर बड़े हसरत के साथ बोले, "काश, कि यह गाड़ी यहीं रह जाती।"

७.५ महत्वपूर्ण अवतरण :

''थि-ेटर में जब हीरो पर वार करने के लिए विलेन खंजर तानकर तिरछा रवडा हो जाता है, उस वक्त परदे की डोरी अटक जा-ने तो सोचिए क-ा होगा ? कुछ वैसी ही हालत थी। परदा नहीं गिर रहा था।''

संदर्भ:- प्रस्तुत अवतरण ''अंगद का पाँव' नामक रचना से लि-ा ग-ा है। इसके लेखक श्रीलाल शुक्ल हैं।

प्रसंग:- उप-ुर्क्त अवतरण उस सम-ा को हमारे समक्ष रखता है, जब लेखक महोद-ा के मित्र की ट्रेन छूट नहीं रही होती है और उनके सारे तथा कथित शुभचिंतक इधर-इधर की बातों में अपनी समस-ा का समाधान ढूँढ रहे होते हैं।

व्-ाख-ा:- लेखक के मित्र जिस ट्रेन से जा रहे होते हैं वह अपने नि-ात सम-ा के बावजूद किन्हीं कारणों से छूटती नहीं। मित्र के जाने की सारी तै-ारि-ाँ हो चुकी थीं। फूल मालाएँ पहनाई जा चुकीं थीं। उन्होंनें भी सभी को धन-्वाद दे दि-ा था। लगभग सारी औपचारिकताएं हो चुकीं थीं। ऐसे में ट्रेन के न छूटने पर उन के मित्रों की बचैनी बढती जा रही थी, वे -ह समझ नहीं पा रहे थे कि क-ा करें ? ऐसी विचित्र स्थिति की तुलना लेखक फिल्म के उस दृश-ा से करता है जिसमें विलेन खंजर तानकर हीरो पर वार करने के लि-े तिरछा खड़ा होता है और ऐसे में परदे की डोरी अटक जाती है, और दर्शकों की उत्सुकता निराशा में बदलने लगती है। प्लेटफार्म पर भी लगभग -ही स्थिति थी। ट्रेन के न छूटने के कारण लोगों का उत्साह बोरि-ात व उत्साहहीनता में तब्दील हो चुका था फिर भी वे वहाँ रुके रहने के लिए मजबूर थे।

विशेष:- उप-ुर्क्त अवतरण आजकल के तथाकथित मित्रों के आचरण पर प्रकाश डालता है।

व्-ाख-ा हेतु अन-ा महत्वपूर्ण अवतरण

१) 'इण्डि-ा में अभी तो जैसे हम बैलगाड़ी के लेवेल से ऊपर नहीं उठे, वैसे ही फूलों के मामले में गेंदे से ऊपर नहीं उभर पा-े। गाड़ि-ों में बैलगाडी, मिठाइ-ों में पेड़ा, फूलों में गेंदा, लीजिए जनाब, -ही है आपकी इण्डि-न कल्चर ! ''

२) 'गाड़ी के चलते- चलते उन्होंने उत्साह से हाथ मिला-ा। फिर गाडी को निश्चित रूप से चलती हुई पाकर हसरत के साथ बोले- '' काश, कि -ह गाडी -हीं रह जाती।''

७.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी :

१) 'अगंद के पाँव' व्यंग्य आज कल के मित्रो की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है। व्यंग्य के आधार पर इस तथ्य को स्पष्ट कीजिए ?

२) ट्रेन के ठीक समय पर न छूटने के कारण लेखक के मित्र की क्या स्थिति हुई ? व्यंग्य के आधार पर स्पष्ट कीजिए ?

❖❖❖

समस्या सुलझाने में बुद्धिजीवी का योगदान

शरद जोशी

इकाई की रुप - रेखा

७.अ.१ उद्देश्य
७.अ.२ प्रस्तावना
७.अ.३ सारांश
७.अ.४ टिप्पणी
७.अ.५ महत्वपूर्ण अवतरण
७.अ.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

७.अ.१ उद्देश्य :

- प्रस्तुत व्यंग्य में व्यंग्यकार शरद जोशी इस तथ्य पर रोशनी डालते हैं कि इस देश का बुद्धिजीवी आम जन – जीवन से कटा हुआ है।
- बुद्धिजीवी समस्याओं का समाधान व्यावहारिक स्थिति के अनुसार नहीं प्रस्तुत करता बल्कि वह एक काल्पनिक समाधान प्रस्तुत कर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेता है।

७.अ.२ प्रस्तावना व लेखक परिचय :

'समस्या सुलझाने में बुद्धिजीवी का योगदान' शरद जोशी के चर्चित हास्य व्यंग्यों में से एक है। शरद जोशी हिंदी के उन कुछ व्यंग्यकारों की श्रेणी में आते है, जिन्होंने व्यंग्य को आम हिंदी पाठकों तक पहुँचाया है। जीप पर सवार इल्लियाँ, पिछले दिनों, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, दो व्यंग्य नाटक, मैं और केवल में आपकी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

७.अ.३ सारांश :

प्रस्तुत व्यंग्य में व्यंगयकार शरद जोशी देश के बुद्धिजीवियों के वास्तविक चरित्र को उद्‌घाटित करते हुए कहते हैं कि हमारे देश के बुद्धिजीवी वस्तुत : एक काल्पनिक दुनिया में रहते हैं। वे समस्याओं पर किताबी ढंग की चर्चा करते हुए देश में व्याप्त समस्याओं का अव्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करते हैं। व्यंग्यकार अपने आप को बुद्धिजीवी मानता है। वह देश की समस्याओं के समाधान में अपनी भूमिका समझता है। अत: वह सबसे पहले एक नेताजी के पास जाता है और उनसे पूछता है कि उनकी नजर में देश की सबसे बड़ी समस्या क्या है ? जवाब देते हुए नेताजी कहते हैं कि एक बार जहाँ से चुनाव जीत गए वहाँ से फिर चुनाव जीतना ही उनके लिए सबसे बड़ी समस्या है। लेखक नेताजी के सामने मदद करने का प्रस्ताव रखता है, इस पर नेताजी व्यंग्यपूर्वक हँसते हुए लेखक से पूँछते हैं कि क्या तुम गुण्डे बदमाश हो ? मुझे तो ऐसे ही

लोगों की जरुरत होती है। इसपर लेखक कहता है कि मुझे गुण्डा बदमाश बनने के लिए एक और जन्म लेना पड़ेगा इस पर नेताजी कहते हैं कि तब आप मेरी कोई मदद नहीं कर सकते। इसके बाद भी लेखक हार नहीं मानता वह एक पुलिस अफसर के पास जाता है और उससे राष्ट्र की समस्या पर चर्चा करता है। पुलिस अफसर कहता है कि 'लॉ एण्ड आर्डर' अर्थात कानून और व्यवस्था की समस्या राष्ट्र की प्रमुख समस्या है। हत्यारों को पकड़ना और उन्हें सजा दिलाना ही राष्ट्र की सबसे बड़ी समस्या है। पुलिस अफसर लेखक से पूछता है कि वह हत्यारे को पकड़नें में किस प्रकार उनकी मदद कर सकता है ?इस संदर्भ में लेखक अपने आप को अनुभव शून्य मानता है। और इस तथ्य पर विचार करने लगता है कि भला हमारे देश में किन लोगों की हत्या होती है ? बहुत चिंतन करने के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता हे कि हमारे देश में हत्या सिर्फ अमीर आदमी की ही हो सकती है, गरीब आदमी की हत्या कोई क्यों करेगा गरीब आदमी का तो शोषण किया जाता है उसकी हत्या नहीं की जाती। गरीब आदमी शोषण के असहनीय हो जाने पर केवल आत्महत्या ही कर सकता है और कोई विकल्प उसके पास होता ही नहीं। पुलिस भी हत्यारे को पकड़ने में कोई बहुत ज्यादा परिश्रम नहीं करती। किसी गरीब निरपराधी व्यक्ति को पकड़कर वह उसे इतना पीटती है कि बेचार वह अपने आप हत्या का आरोप स्वीकार कर लेता है और बाकी सारे साक्ष्य पुलिस अपने आप तैयार कर लेती है।

यह सब जानते समझते हुए भी बुद्धिजीवी के रुप में लेखक पुलिस की मदद करने के उद्देश्य से एक हत्या का विस्तार से अध्ययन करता है और, इस अध्ययन का विस्तृत विवरण वह उस पुलिस अधिकारी को सौंपता है। इस पर वह पुलिस अधिकारी यह कहता है कि हत्या करने के वास्तविक अनुभव के बिना, हत्या करने के बारे में वह इतनी प्रमाणिक जानकारी कैसे दे सकता है और शक के आधार पर वह लेखक को ही अपराधी घोषित कर देता है।

निष्कर्षत : व्यंग्यकार यह बताना चाहता है कि देश का बुद्धिजीवी देश की समस्याओं की जमीनी सच्चाई से परिचित नहीं होता अतः उसके द्वारा सुझाये गए समाधान भी अव्यावहारिक व काल्पनिक ही होते हैं।

७.अ.४ टिप्पणी :

बुध्दिजीवी व पुलिस :- बुध्दिजीवी महोदय देश की समस्या सुलझाना चाहते थे। इसी विचार को लेकर वे पुलिस अफसर से मिले और उनकी समस्या सुलझाने के लिए मदद देने की पेशकश की। पुलिस अफसर ने कहा कि देश की प्रमुख समस्या लॉ एण्ड ऑर्डर अर्थात कानून व्यवस्था की है। भला इसमें आप हमारी क्या मदद कर सकते हैं ? पुलिस अफसर ने बुध्दिजीवी महोदय से पूछा कि उनकी रुचि किस प्रकार के अपराध मैं है ? क्या वे हत्याएँ रोकना चाहते हैं या हत्यारों को पकड़ना चाहते हैं ? इस पर बुध्दिजीवी महोदय ने कहा कि इस क्षेत्र में उनका कोई अनुभव नहीं हैं। न तो उन्होंने हत्या की है और न ही उनकी हत्या हुई है। ऐसे में भला वे हत्यारे को कैसे खोजेंगे। वे तो ठीक से आत्मनिरीक्षण नहीं कर पाते ऐसे में भला वे हत्यारे को कैसे खोजेंगे ?

बुध्दिजीवी को हत्यारे को खोजने का तरीका बताते हुए पुलिस अफसर कहता है कि हम हत्यारे के पीछे – पीछे नहीं भागते बल्कि जहाँ हत्या हुई है वहीं से किसी व्यक्ति को पकड़ लेते हैं और जेल में डालकर उसे इतना पीटते हैं कि वह खुद ही हत्या करने की बात को

स्वीकार कर लेता हैं। एक बार उस व्यक्ति ने हत्या करने की बात स्वीकार कर ली,फिर सारे सबूत, गवाह इत्यादि का प्रबंध हम स्वयं कर लेते हैं।

बुध्दिजीवी महोदय कुछ अच्छा कर दिखाने के उद्देश्य से एक ताजा हुई हत्या का अध्ययन करते हैं। हत्यारे के मनोविज्ञान, उसकी आर्थिक स्थिति, इतिहास भूगोल इत्यादि सभी पक्षों का रिसर्च कर वे उसे पुलिस अफसर को दिखाते हैं। इस पर पुलिस अफसर महोदय कुछ देर तक चुप रहते हैं और फिर बड़ी गंभीर मुद्रा में कहते हैं कि मेरा खयाल है कि ये हत्या आपने की हैं। क्योंकि बिना हत्या किए हत्या का इतना अच्छा विवरण आप दे ही नहीं सकते। इस पर बुध्दिजीवी महोदय ने लाख सफाई दी कि मैं बुध्दिजीवी हूँ, इसलिए यह विश्लेषण मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ। किंतु पुलिस अफसर कुछ भी सुनने के लिए तैया नही हुआ और बुध्दिजीवी महोदय को उसने ठाने ले जाकर जेल में बंद कर दिया। अपनी हुई दुर्दशा को रेखांकित करते हुए बुध्दिजीवी महोदय कहते हैं कि इसके बाद जो कुछ हुआ वह लेख का नहीं बल्कि कविता का विषय हैं।

७.अ.५ महत्वपूर्ण अवतरण :

'समस्या सुलझाने में बुद्धिजीवी का योगदान' शरद जोशी के चर्चित हास्य व्यंग्यों में से एक है। शरद जोशी हिंदी के उन कुछ व्यंग्यकारों की श्रेणी में आते है, जिन्होंने व्यंग्य को आम हिंदी पाठकों तक पहुँचाया है। जीप पर सवार इल्लियाँ, पिछले दिनों, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, दो व्यंग्य नाटक, मैं और केवल में आपकी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

'' इसमें शक नहीं है कि इस देश में अपराध बहुत बढ़ गए हैं। अपराध करनेवालों को समझ नहीं आ रहा है कि क-ा करें। मतलब -ह है कि हत-ा करे -ा बैंक लूटें, अपहरण करे -ा दुकान में घुसकर नगद कैश ले लें। -दि पुलिस को फुरसत नहीं है, तो उनके पास भी फुरसत नहीं है।''

संदर्भ:- प्रस्तुत अवतरण में लेखक शरद जोशी देश में निरंतर बढ़ रहे अपराध की स्थिति पर विचार प्रकट करते हैं। वे -ह बताने कि कोशिश कर रहे हैं कि अपराधों के बढ़ने का मूल कारण पुलिस की निष्क्रि-ता व भ्रष्टाचार है।

व्-ाख्-ा:- लेखक शरद जोशी प्रस्तुत अवतरण में अपराध व पुलिस तंत्र के आपसी सांठगांठ को उजागर करते हुए करते हैं कि इस देश में अपराध बहुत बढ़ गए हैं। अपराधि-ों को -ह समझ में नहीं आ रहा है कि वे क-ा करें और क-ा न करें। वे हत-ा करें -ा बैंक लूटें, अपहरण करें -ा दुकान में घुसकर कैश ले लें अर्थात उनके लिए तमाम विकल्प खुलें हैं। लेखक कहता है कि उनके विकल्प इसलिए बढ गए हैं क-ोंकि उनपर अंकुश लगानेवाला पुलिस विभाग अपने धंधे में डूबा हुआ है। भ्रष्टाचार के माध-म से वे पैसे खाने में लगे हुए हैं। ऐसे में अपराध बढेंगे ही और अपराधि-ों के सामने अनेक विकल्प अपने आप बनते चले जाएंगे।

विशेष:- प्रस्तुत अवतरण अपराधि-ों व पुलिस प्रशासन के बीच के संबंध को उजागर करता है।

संदर्भ सहित व्-ाख्-ा के लिए अन-ा महत्वपूर्ण अवतरण।

१) '' पुलिस मानती नहीं। गरीब को कौन मारेगा, इसमें रखा क्-ा है। बिना अच्छी आर्थिक स्थिति के आपकी इस देश में हत्-ा भी नहीं हो सकती।''

२) '' हत्-ा मैं नहीं करता। इन चक्करों में पड़ने का टाइम नहीं है मेरे पास. कभी किसी की करनी भी होगी तो पैसे देकर दूसरे से करवा लेंगे। खुद नही करेंगे। हमारी समाज में कुछ इज्जत है साब।''

७.अ.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

१) 'समस्या सुलझाने में बुध्दिजीवी का योगदान' व्यंग्य के आधार पर बुध्दिजीवियों की मानसिकता को स्पष्ट कीजिए।

❖❖❖

७ - ब

'प्रधानमंत्री क्यों नहीं हँसते?'

लतीफ घोंघी

इकाई की रुप - रेखा

७.ब.१ उद्देश्य
७.ब.२ प्रस्तावना
७.ब.३ सारांश
७.ब.४ टिप्पणी
७.ब.५ महत्वपूर्ण अवतरण
७.ब.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

७.ब.१ उद्देश्य :

- प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से व्यंग्यकार प्रधानमंत्री पद से जुड़ी अनावश्यक मर्यादाओं पर व्यंग्य करता है।
- देश में व्याप्त अनेक समस्याओं पर रोशनी डालता है।
- प्रधानमंत्री पद की गरिमा के साथ – साथ उनके व्यक्तिगत जीवन से जुड़े लोकपक्ष के महत्त्व को रेखांकित करता है।

७. ब.२ प्रस्तावना व लेखक परिचय :

'प्रधानमंत्री क्यों नहीं हँसते' लतीफ घोंघी के लोकप्रिय व्यंग्यों में से एक है। लतीफ घोंघी हिंदी के सुप्रतिष्ठित व्यंग्यकार हैं। 'उड़ते उल्लू के पंख' 'बधाइयों के देश में' 'टूटी टाँग पर चिन्तन' बुद्धिमानों से बचाइए, ज्ञान की दुकान,बीमार न होने का दु:ख, जुगल-बन्दी, तिकोने चेहरे इत्यादि आपकी महत्त्वपूर्ण कृतिया हैं। प्रस्तुत व्यंग्य में लेखक ने प्रधानमंत्री पद से जुड़ी अनावश्यक मर्यादा पर व्यंग्य किया है।

७.ब.३ सारांश :

'प्रधानमंत्री क्यों नहीं हँसते?' इस व्यग्य में व्यंग्यकार लतीक घोंघी प्रधानमंत्री के न हँसने के विविध कारणों पर विचार करते हैं। व्यंग्य का एक पात्र गुप्ताजी, व्यंग्यकार से पूछता है कि अपने देश के प्रधानमंत्री भला क्यों नही हँसते? सभी अखबारों में उनकी हँसती हुई तस्वीर क्यों नहीं दिखाई पड़ती? इस पर व्यंग्यकार उत्तर देते हुए कहता है कि किसी का हँसना या न हँसना उसका अपना व्यक्तिगत मामला है। इस पर वे सज्जन और भी दुखी हो जाते हैं। उनकी यह स्थिति देखकर लेखक उन्हें समझाता है कि प्रधानमंत्री पर देश की तमाम समस्याओं का बोझ होता है।वह तमाम समस्याओं की चिंताओं से दबा हुआ होता है। ऐसे में यदि वह हँसेगा और

उसकी हँसती हुई फोटो प्रकाशित होगी तो उससे उसकी और देश की छवि पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। लेखक उन सज्जन को समझाता है कि प्रधानमंत्री के सिर पर अनेक समस्याओं का बोझ होता है, ऐसें में वह भला कैसे हँस सकता है? इस पर वे बोलते हैं कि हम भारतीय तो प्रतिकूल स्थितियों में भी हँसते रहते हैं। लेखक समझाते हुए कहता है कि ये बातें हमारे आपके जैसे आम आदमियों के लिए लागू होती हैं, प्रधान मंत्री जैसे महत्त्वपूर्ण पद पर बैठे लोगों के लिए ये बातें लागू नहीं होती हैं। लेखक के बहुविध समझाने के बावजूद प्रधानमंत्री के हँसने को लेकर आग्रह बना रहता है और वे लेखक से कहतेँ कि हमने अपना प्रधानमंत्री हँसने और खुश रहने के लिए चुना है उदास रहने के लिए नहीं। देश की आंतरिक समस्याएं सुलझती रहेंगी। प्रजातंत्र में समस्याओं का उत्पन्न होना और उनका सुलझना तो लगा रहता है किंतु प्रधानमंत्री का न मुस्कुराना अच्छा नहीं लगता।

सज्जन अपने तर्क के प्रवाह को बढ़ाते हुए कहते हैं कि यदि प्रधानमंत्री का हँसता हुआ फोटो विदेशों में लोग देखेंगे तो उसका अच्छा प्रभाव उन पर पड़ेगा। उन्हें लगेगा कि हमारा देश उन्नति कर रहा है लोग खुशहाली की जिंदगी जी रहे हैं। प्रधानमंत्री के हँसने से विदेशों में देश की छवि सुधरेगी। वे सज्जन कहते हैं कि देश की छवि सुधारने के लिए हँसना, प्रधानमंत्री की नैतिक जिम्मेदारी भी है। देश का मतदाता यह चाहता है कि उसका प्रधानमंत्री हँसता मुस्कुराता दिखे।

उनके तर्क और आग्रह को देखकर लेखक चुप रहना ही ज्यादा अच्छा समझता है। वह भला उन जैसे दुराग्रही व्यक्ति को यह कैसे समझाता कि हँसता तो वह व्यक्ति है जिसके जीवन में उत्साह, उल्लास व बेफिक्री होती है। चिंता, तनाव व तमाम तरह के दबाव झेलता हुआ व्यक्ति भला कैसे उन्मुक्त हँसी हँस सकता है।

७.ब.४ टिप्पणी

'प्रधानमंत्री क्यो नहीं हँसते' के सज्जन

लेखक को एक सज्जन मिलते हैं जो इसलिए परेशान हैं कि देश के प्रधानमंत्री महोदय भला क्यों नहीं हँसते? वे लेखक से बार बार पूँछते हैं कि हमारे प्रधानमंत्री की हँसती हुई फोटो अखबारों में कब छपेगी? वो क्लिंटन की तरह कब हँसेगे? इस पर लेखक उन्हें समझाता हैं कि हमारे प्रधानमंत्री देखने के लिए दुखी हैं। देश की स्थिति ठीक नहीं है ऐसे में यदि वे हँसेगे तो विदेशों में हमारी छवि पर असर पड़ेगा। और फिर किसी का हँसना या न हँसना यह उसका व्यक्तिगत मुद्दा है और हमें किसी के व्यक्तिगत मामलें में दखल नहीं देना चाहिए। लेकिन वे सज्जन लेखक के इस तर्क को मानने के लिए तैयार न थे। वे कहने लगे कि आंतरिक मामलों से निपटने के लिए तो और भी लोग हैं। और जब प्रधान मंत्री महोदय की हँसती फोटो अखबारों में प्रकाशित होगी तो उसका व्यापक असर पडेगा। प्रधानमंत्री के हँसते हुए फोटो को देखकर विदेशों में देश की छवि सुधरेगी। लोगों को लगेगा कि अपना देश खुशहाल है। हमें प्रधानमंत्री जी का उदास चेहरा अच्छा नहीं लगता। हम इस देश के मतदाता हैं, प्रधानमंत्री को आखिर हमारी इच्छाओं का ख्याल रखना चाहिए।

इस प्रकार लेखक के लाख समझाने के बावजूद सज्जन समझने के लिए तैयार न थे और प्रधानमंत्री के हँसने को लेकर उनका दुराग्रह बना ही रहा।

७.ब.५ महत्वपूर्ण अवतरण :

''फिर मूर्खों जैसी बात करने लगे, अरे दादा, मैनें कहा ना कि -ह हमारा आंतरिक मामला है, क-ा विदेशों के प्रधानमन्त्री लोगों के सामने हँसते नहीं ?''

संदर्भ:- प्रस्तुत अवतरण 'प्रधानमन्त्री क-ों नहीं हँसते ?' नामक रचना से लि-ा ग-ा है। इसके लेखक लतीफ घोंघी जी हैं।

प्रसंग :- प्रस्तुत अवतरण प्रधानमंत्री के न हँसने के कारणों की विवेचना करता है।

व्-ाख्-ाा:- सज्जन लेखक के दुराग्रह को देखकर उन्हें डाँटते हुए कहते हैं कि आप मूर्खों की तरह बात क-ों करते हैं? हमारे प्रधानमंत्री का हँसना -ह हमारा आंतरिक मामला है। फिर ऐसा भी क-ा है कि आंतरिक मामलों के कारण हमारे प्रधानमंत्री महोद-ा न हँसे। विदेशों के भी तो आंतरिक मामले होते हैं फिर वहाँ के प्रधानमंत्री तो लोगों के सामने हँसते हैं फिर हमारे प्रधानमंत्री भला क-ों नहीं हँसते। और आंतरिक मामलों को संभालने के लिए तो और भी लोग हैं, फिर प्रधानमंत्री ही सारी चिंताओं को क-ों उठा-ें? उन्हें भी जनता में जनता की खुशी के लिए हँसना चाहिए।

विशेष:- प्रस्तुत अवतरण प्रधानमंत्री के न हँसने के कारणों की विवेचना करता है। प्रधानमंत्री के सार्वजनिक जीवन में हँसी के महत्त्व को स्थापित करता है।

संदर्भसहित व्-ाख्-ाा हेतु अन्-ा महत्त्वपूर्ण अवतरण

१) ''लाख परेशानि-ाँ होती हैं लेकिन आदमी का हँसना भी कम महत्त्व का नहीं होता। हम कहते हैं अपने लिए मत हँसों लेकिन दूसरों के लिए हँसने में आपका क-ा जाता है?

३) '' आखिर हम भी देश के मतदाता हैं, हमारी भी अपनी इच्छा है हमारी इच्छाओं का ख्-ाल रखना जरूरी है -ा नहीं? बोलो चुप क-ों हो गए ?''

७.ब.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

१) 'प्रधानमन्त्री क्यों नहीं हँसते?' व्यंग्य के आशय को समझाइए।

❖❖❖

८

'घूस एक चिकनाई है'

रवीन्द्र कालिया

इकाई की रुप - रेखा

८.१ उद्देश्य
८.२ प्रस्तावना
८.३ सारांश
८.४ टिप्पणी
८.५ महत्वपूर्ण अवतरण
८.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

८.१ उद्देश्य :

- प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से व्यंग्यकार रवीन्द्र कालिया आजादी के बाद देश में व्याप्त भ्रष्टाचार की विषम स्थिति पर प्रकाश डालते हैं।
- व्यंग्यकार यह बताना चाहता है कि बरवशीश के रुप में अंग्रेजों ने जिस गलत आदत की नीव डाली थी आज इस देश का नौकरशाह उसे अपना अधिकार समझ कर आम जनता के लिए त्रासद स्थितियों का निर्माण कर रहा है।
- लेखक के अनुसार घूस एक चिकनाई की तरह इस देश की व्यवस्था में काम कर रहा है। बिना घूस के व्यवस्था का चक्का नहीं घूमता।
- व्यंग्यकार प्रस्तुत रचना के माध्यम से यह बताना चाहता है कि घूस ने देश में एक समांतर व्यवस्था का निर्माण कर दिया है जहाँ, बिना घूस के कोई काम नहीं करवाया जा सकता।

८.२ प्रस्तावना व लेखक परिचय :

'घूस एक चिकनाई है' व्यंग्य रवीन्द्र कालिया द्वारा रचित आधुनिक जीवन में फैले भ्रष्टाचार पर रोशनी डालनेवाले महत्त्वपूर्ण व्यंग्यों में से एक है। रवीन्द्र कालिया हिंदी के महत्त्वपूर्ण व्यंग्यकार हैं। खुदा सही सलामत है, काला रजिस्टर, नौ साल छोटी पत्नी, गरीबी हटाओ, चकैया जाम आदि आपकी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

८.३ सारांश :

'घूस एक चिकनाई है' व्यंग्य के माध्यम से व्यंग्यकार यह स्पष्ट करते हैं कि स्वतंत्रता के बाद भ्रष्टाचार भारतीय जन जीवन का एक अंग बन गया है। बिना रिश्वत दिये देश में कोई सरकारी काम हो पाना संभव नहीं है। व्यंग्यकार भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी की जड़ अंग्रेजों द्वारा चलाई गई बख्शीश की परंपरा में मानता हैं। वह कहता है कि अंग्रेजों ने इस परंपरा की शुरुआत की थी। उन्होंने इसे बख्शीश नाम दिया था। गुलामी के दिनों में पड़ी बख्शीश की यह आदत आज रिश्वतखोरी के अधिकार में बदल चुकी है। व्यवस्था से जुड़ा व्यक्ति काम करने के एवज में कुछ न कुछ पाने की अपेक्षा आज अधिकार पूर्वक रखने लगा है। जनता भी लगभग इसे स्वीकार कर चुकी है। रिश्वत आज भारतीय जनजीवन का अंग बन चुका है। अब उसे बुराई के रुप में नहीं देखा जा रहा है। इसे न लेनेवाला बुरा समझता है न देनेवाला देकर दुखी महसूस करता है बल्कि उसे अपने काम के हो जाने का संतोष होता है।

लेखक यह बताता है कि बिडंबना तो यह है कि जिन लोगों ने आजादी की लड़ाई लड़ी थी आज उन्हें भी अपना काम करवाने के लिए रिश्वत देना पड़ता है। बिना रिश्वत के उनका काम भी नहीं होता। लेखक का मानना है कि घूस आलसी से आलसी आदमी को सक्रिय बना देता है, वह लौहासव व च्यवनप्राश का काम करता है। देश का विकास बिना घूस के नहीं हो सकता।

घूस की इस सर्वव्यापकता को देखते हुए लेखक एक नई व्यवस्था की कल्पना करता है। वह कहता है कि यदि घूस को व्यवस्था का अंग मान लिया जाय। उसे हेय दृष्टि से न देखा जाय तो समाज में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आ जाएगा। इस नई व्यवस्था से सारे सरकारी कर्मचारी खुश हो जाएंगे। वे सरकार से वेतन भी नहीं लेंगे बल्कि एक निश्चित तारीख को वे सरकार को अपने वेतन के बराबर की धनराशि देंगे। नौकरियों की खुले आम नीलामी होने लगेगी, जो सबसे ऊँची बोली लगाएगा वह नौकरी पाने का हकदार होगा। इससे सरकार की आमदनी बढ़ेगी और सरकार के घाटे का बजट मुनाफे के बजट में बदल जाएगा। इस व्यवस्था में किसी भी सरकारी कर्मचारी पर भ्रष्टाचार जैसा बेहूदा आरोप नहीं लगेगा। सरकारी जाँच एजेंसियाँ इस प्रकार का कार्य करनेवाले अधिकारियों की सहायता के लिए तत्पर रहेंगी।

लेखक तबादले की व्यवस्था पर विचार करते हुए कहता है कि इस व्यवस्था में सरकारी कर्मचारी को अपने तबादले के लिए परेशान नहीं होना पड़ेगा बल्कि हर मंत्रालय का अपना एक ' रेटकार्ड' होगा। इस रेटकार्ड के अनुसार वह निश्चित धनराशि चुकाकर मनचाही जगह अपना तबादला करवा सकता है।इस प्रक्रिया में उसकी मद्द भी कि जा सकती हैं।यदि उसके पास आवश्यक धनराशि नहीं है तो बैंक उसे स्थानांतरण ऋण सेवा के अन्तर्गत अपना तबादला करवाने के लिए आवश्यक ऋण भी उपलब्ध करवायेंगे। इस प्रकार से एक साथ सारा पैसा न चुकता कर पाने की स्थिति में भी व्यक्ति अपना तबादला इच्छित जगह करवा सकेगा।

लेखक का मानना है कि इस नई व्यवस्था में देश का प्रत्येक नागरिक अपनी योग्यता व आर्थिक क्षमता के अनुसार देशसेवा कर सकेगा। इस प्रकार देशवासी व देश दोनों निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकेंगे।

८.४ टिप्पणी :

घूस के विभिन्न लाभ :- लेखक के अनुसार घूस के विभिन्न लाभ होंगे। उनका मानना है कि घूस के कारण समाज में सप्तवर्णी क्रांति आ जाएगी, कारखाने उत्पादन उगलें गे, फाइलें सुपर – फास्ट गाड़ी की तरह दौडेंगी, नौकरियों में बाढ़ आ जाएगी। इस नदी व्यवस्था में कर्मचारी सरकार से वेतन नहीं लेंगे बल्कि सरकार को वेतन देगें। नियुक्तियों के लिए परीक्षा साक्षात्कार की आवश्यकता नहीं होगी बल्कि पदों की नीलामी होगी और उससे सरकार की आय बढ़ जाएगी।सरकार के घाटे का बजट लाभ के बजट में बदल जाएगा

सरकार के आय का एक नया स्त्रोत भी विकसित होगा और वह होगा तबादले की नयी व्यवस्था के माध्यम से। सरकार के हर मंत्रालय का अपना अपना 'रेटकार्ड' होगा और कर्मचारी अपनी इच्छा के अनुसार पैसे देकर अपना तबादला इच्छित जगह पर करवा सकते हैं। इतना ही नहीं तबादले के लिए ऋण की व्यवस्था होगी। जिनके के पास तबादले के आवश्यक पैसे नहीं होंगे उन्हें इस ऋण व्यवस्था के अन्तर्गत ऋण देकर पैसे उपलब्ध करवाये जाएंगे। ताकि ये पैसे देकर कर्मचारी अपना ताबदला इच्छित जगह करवा सकें। इस व्यवस्था से समाज को पिछडापन दूर होगा, एक नये युग का सूत्रपात होता, जिसमें हर नागरिक अपनी योग्यता, आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति के अनुसार देश की सेवा में संलग्न हो जाएगा और राष्ट्र दिन दूनी और रात चौगुनी प्रगति करेगा।

८.५ महत्वपूर्ण अवतरण :

'' घूस खुश्की दूर करती है, आदमी में स्फूर्ति भर देती है। आलसी आदमी सक्रि-ा हो जाता है। इस लिहाज से घूस मृतसंजीवनी सुरा है, लोहासव है। च्-वनप्राश है।''

संदर्भ :- प्रस्तुत अवतरण ' घूस एक चिकनाई है' नामक रचना से लि-ा ग-ा है। इसके लेखक रवीन्द्र कालि-ा हैं ।

प्रसंग :- प्रस्तुत अवतरण घूस के प्रभावों की विवेचना करता है।

व्-याख्-ा :- लेखक कहता है कि घूस व्यवस्था में व्-याप्त खुश्की को दूर करती है। घूस का प्रलोभन आदमी में स्फूर्ति भर देता है। आलसी से आलसी आदमी भी घूस के कारण सक्रि-ा हो जाता है। लेखक का मानना है कि इन कारणों से घूस मृतसंजीवनी सुरा है, लोहासव है, च्-वनप्राश है क्-ोंकि -ह सुस्त, निर्जीव पड़ी व्-वस्था में नए सिरे से प्राण का संचार कर देती है। प्रकारांतर से लेखक -ह बताना चाहता है कि भारती-ा समाज में बिना घूस के व्-वस्था का चक्का नहीं घूमता। व्-वस्था के चक्के को घुमाने के लिए घूस के टॉनिक की जरुरत भारती-ा प्रशासनिक व्-वस्था की अनिवा-र्ता बन चुकी है।

विशेष :- प्रस्तुत अवतरण भारती-ा प्रशासनिक व्-वस्था में घूस की अनिवा-र्ता को दर्शता है।

संदर्भ सहित व्याख्या हेतु अन्य महत्त्वअपूर्ण अवतरण

१) '' नियुक्तियों के लिये परीक्षा, साक्षात्कार आदि भी औपचारिकताएँ समाप्त हो जायेंगी। नौकरियाँ खुले आम नीलाम होंगी। नीलामी में केवल योग्य उम्मीदवार ही हिस्सा ले पायेंगे।''

२) '' आप अपनी हैसियत के मुताबिक मनचाहा स्टेशन छाँट लीजिए और अपेक्षित रकम स्टेट बैंक में जमा करके अपने तबादले का आदेश प्राप्त कर लीजिए। प्रत्येक मंत्रालय का अपना रेट - कार्ड होगा।''

८.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

१) 'घूस एक चिकनाई है' व्यंग्य वर्तमान व्यवस्था की पोल खोलता है। व्यंग्य के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

❖❖❖

८ - अ

क्रिकेट इज इंडिया एंड इंडिया इज क्रिकेट

घनश्याम अग्रवाल

इकाई की रुप - रेखा

८.अ.१ उद्देश्य
८.अ.२ प्रस्तावना
८.अ.३ सारांश
८.अ.४ टिप्पणी
८.अ.५ महत्वपूर्ण अवतरण
८.अ.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

८.अ.१ उद्देश्य :

- प्रस्तुत व्यंग्य में व्यंग्यकार घनश्याम अग्रवाल क्रिकेट को लेकर देश में व्याप्त दीवानगी पर व्यंग्य करते हैं।
- व्यंग्यकार यह बताने की कोशिश करता है कि क्रिकेट को लेकर छाई हुई यह दीवानगी देश की प्रगति में बाधक है।
- व्यंग्यकार यह बताता है कि क्रिकेट एक खेल है। उसे खेल भावना से ही देखना व खेलना चाहिए.

८.अ.२ प्रस्तावना व लेखक परिचय :

'क्रिकेट इज इंडिया एण्ड इंडिया इज क्रिकेट' यह घनश्याम अग्रवाल द्वारा रचित लोकप्रिय हास्य व्यंग्य है । इस व्यंग्य में व्यंग्यकार ने क्रिकेट को लेकर देश में व्याप्त पागलपन को रेखांकित करने की कोशिश की है। घनश्याम अग्रवाल विसंगतियों पर प्रहार करनेवाले सजग व्यंग्यकार हैं। 'बंसीधर के आईने' 'आजादी की दुम' तथा 'अपने – अपने सपने' आपकी चर्चित कृतियाँ हैं।

८.अ.३ सारांश :

प्रस्तुत व्यंग्य में व्यंग्यकार ने क्रिकेट को लेकर भारतीय जन जीवन में व्याप्त दीवानगी को रेखांकित किया है। लेखक इस दीवानगी को देश के विकास के लिए घातक मानता है। लेखक स्पष्ट रुप से कहता है कि भारत एक अर्द्ध - विकसित देश है और अर्द्ध विकसित ही रहेगा, क्योंकि वह वर्ष में छह महीने अपनी प्रगति करता है और छह महीने क्रिकेट खेलता है। उसकी यह प्रगति भी खेले गए क्रिकेट पर निर्भर रहती है।

लेखक कहता है कि क्रिकेट की इस दीवानगी में देशवासी इस तरह डूब चुके हैं कि गरीबी, अशिक्षा, अन्याय, बदहाली, चिकित्सा जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दे वे नजरअंदाज करते जा रहें हैं, जैसे अब ये समस्याएँ उनके सामने हैं ही नहीं। लेखक इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए कहता है कि हमें इस बात की चिन्ता नहीं है कि उत्पादन माँग की तुलना में कम हो रहा है, चिन्ता इस बात की है कि पहली पारी में हमारे रनों की संख्या विरोधी टीम के रनों से कम है। कुछ बच्चे दवा व दूध के अभाव में मर गए, यह जानकर उतना दुःख नहीं होता, जितना दुःख यह जानकर होता है कि गावस्कर बिना कोई रन बनाये मैथ्यू की गेंद पर आउट हो गए। हमें सड़कों के गड्ढे दिखाई नहीं देते, क्योंकि हमारा सारा ध्यान इस ओर है कि फलां मैदान की पिच कैसी है? मैच के दिनों में स्कूल- कॉलेज, अस्पताल, कोर्ट कार्यालय, विधानसभा, लोकसभा आदि या तो क्रिकेट के मैदान में आ जाते हैं या फिर क्रिकेट का मैदान वहाँ चला जाता है।

लेखक का मानना है कि यदि यही दशा रही तो हम इक्कीसवीं सदी में जायेंगे तो भी क्रिकेट के साथ ही जाएंगे। यदि हम क्रिकेट में लगातार जीतते ही रहे तो हम आगे बढ़ते जाएंगे । मगर जब –जब हम हारेंगे, दुनिया रुके न रुके, हम रुक जाएंगे । हम बढ़ेंगे भी और रुकेंगे भी। इस गति से हम एक न एक दिन इक्कीसवीं सदी मे पहुँचेंगे निश्चित, मगर तब तक दुनिया बाईसवी सदी में चली जाएगी। लेखक कहता है कि इस तरह से यदि हम यह चाहते हैं कि भारत इक्कीसवीं सदी मे पहुँचे तो यह जरुरी है कि हम क्रिकेट के खेल में लगातार जीतते रहें।लगातार विजयी होने के लिए एक ऑल राउंडर खिलाड़ी की जरुरत होगी जो बैटिंग और बॉलिंग में अद्‌भुत हो। लेखक कहता है कि ऐसा अद्‌भुत खिलाड़ी मिलना दुर्लभ है। ऐसे में यदि ईश्वर हमें निराशा से उबारने के लिए ऑलराउंडर क्रिकेटियर का अवतार लेकर आ जाएं तो हम देशवासियों पर बड़ी कृपा होगी। लेखक को यह याद है कि प्रभु का अभी एक अवतार होना बाकी है। वह कहता है कि ईश्वर ने हम पर पहले भी कृपा की है और फिर से करेगा, क्योंकि अवतार लेने के मामले में उसने भारत को प्राथमिकता दी है। वह भगवान के क्रिकेटियर अवतार की कल्पना भी कर लेता है। वह कहता है कि प्रभु इस क्रिकेटियर अवतार में आप की चार भुजाएं होंगी। आपके हाथों में क्रमशः बैट, गेंद, स्टंप और पुरस्कार का रबर होगा। आप हर मैंच में ' मैंन ऑफ द मैच' होंगे, तभी भारत इस संकट से उबरेगा और तभी भारत सही समय से इक्कीसवीं सदी में पहुँचेगा। लेखक यह भी कहता है कि हे प्रभु यदि आप नहीं आएंगे तो इक्कीसवीं सदी में जाते जाते आपका यह भारत 'क्लीनबोल्ड' हो जाएगा।

इस प्रकार लेखक किक्रेट के प्रति भारतीयों की दीवानगी पर बड़े प्रभावी ढ़ंग से व्यंग्य करता है।

८.अ.४ टिप्पणी :

'क्रिकेट इज इण्डिया एण्ड इण्डिया इज क्रिकेट' के प्रभु :- लेखक के अनुसार भारत के इक्कीसवीं सदी में पहुँचने के लिए क्रिकेट में निरंतर जीतना बेहद जरुरी है और इस निरंतर जीत को पाने के लिए एक ऑलराउंडर क्रिकेटियर की आवश्यकता पड़ेगी। इस प्रकार के

ऑलराउंडर क्रिकेटियर के रुप में लेखक ईश्वर के आने की कल्पना करता है। उसके अनुसार प्रभु का अभी एक अवतार होना बाकी है। प्रभु ही यदि ऑलराउंडर क्रिकेटियर का रुप धारण कर आ जायें तो भारत सारे संकटों से उबर जाएगा। वह कहता है कि अवतार लेने के मामले में प्रभु ने हमेशा भारत को प्राथमिकता दी हैं। इस बार भी वह अपने भक्तों की पुकार सुनकर भारत में ही अवतार लेगा। इस अवतारी भगवान के चार हाथों में से एक में बैट, एक में गेंद, एक में स्टंप
और एक में पुरस्कार का रबर होगा। ये भगवान हर मैच मे 'मैन ऑफ द मैच' कहलाएंगे। तभी भारत संकट से उबरेगा । अर्ध्द विकसित ही सही, पर सही समय में देश इक्कीसवीं सदी में पहुँचेगा।

लेखक भगवान से प्रार्थना करता हुआ कहता है कि हे प्रभु आओ, भारत की लाज बचाओ। हम सब सुनने को और अनूप जलोटा आपकी कमेंटरी गाने को उत्सुक हैं। सारा भारत क्रिकेटमय हो चला है। क्या अब भी नहीं आओगे? यदि नहीं आओगे तो देख लेना, इक्कीसवीं सदी में जाते जाते आपका यह भारत क्रिकेट के मैदान में आपके देखते देखते 'क्लीन बोल्ड' हो जाएगा।

८.अ.५ महत्वपूर्ण अवतरण :

'' इस वक्त क्रिकेट का सीजन चल रहा है, आपस में लड़ना ठीक नहीं। आपसी झगड़े छह महीने बाद करेंगे। हमारा आधा जीवन राष्ट्र को और आधा क्रिकेट को समर्पित है। इसलिए भारत अर्द्ध- विकसित देश है और रहेगा।''

संदर्भ :- प्रस्तुत अवतरण ' क्रिकेट इज इण्डि-ा एण्ड इण्डि-ा इज क्रिकेट' नामक रचना से लि-ा ग-ा है। इसके लेखक घनश्-ाम अग्रवाल हैं।

व्-ाख्-ाा :- प्रस्तुत अवतरण में लेखक क्रिकेट के प्रति भारती-ों में व्-ाप्त दीवानगी को स्पष्ट करते हुए कहता है कि क्रिकेट के सम-न हम भारती-न लोग आपसी झगड़े को भूल जाते हैं। हमारे देश में छह महीने तक क्रिकेट चलता है अत: छह महीने तक हम अपने झगड़ों को स्थगित रखते हैं। केवल झगड़े ही नहीं बल्कि अन्-न का-र्-ा भी हम छह महीने तक स्थगित रखते हैं। साल के छह महीने हम क्रिकेट देखने में बिताते हैं और छह महीने काम करते हैं।इस प्रकार हमारा आधा जीवन क्रिकेट को और आधा जीवन राष्ट्र को समर्पित है। इसीलिए आजतक भारत अर्द्ध-विकसित है और आगे भी अर्द्ध-विकसित ही रहेगा। इस प्रकार लेखक क्रिकेट के प्रति भारती-ों की आवश्-नकता से अधिक दीवानगी को स्पष्ट करता है।

विशेष :- प्रस्तुत अवतरण क्रिकेट की दीवानगी के कारण उत्पन्न भारत के अर्द्ध-विकास को रेखांकित करता है।

संदर्भ सहित व्-ाख्-ाा हेतु अन्-न महत्त्वपूर्ण अवतरण।

१) '' हम इक्कीसवीं सदी में जा-ेंगे तो भी क्रिकेट के साथ। बिना क्रिकेट के हम कहीं नहीं जा-ेंगे।''

२) '' क्रिकेट हमारा कर्म है। क्रिकेट हमारा धर्म है। सारा भारत क्रिकेटम-न हो चला है। क-ा अब भी नही आओगे ?''

८.अ.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

१) 'क्रिकेट इज इण्डिया एण्ड इण्डिया इज क्रिकेट' के आधार पर देश में व्याप्त क्रिकेट की दीवानगी व उसके दुष्परिणाम को स्पष्ट कीजिए।

❖❖❖

८-ब

समुझै कवि की कविताई

प्रेम जनमेजय

इकाई की रुप - रेखा

८.ब.१ उद्देश्य
८.ब.२ प्रस्तावना
८.ब.३ सारांश टिप्पणी
८.ब.४ टिप्पणी
८.ब.५ महत्वपूर्ण अवतरण
८.ब.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

८.ब.१ उद्देश्य :

- प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से व्यंग्यकार कवि प्रवृत्ति पर व्यंग्यकरता है। वह यह बताने की कोशिश करता है कि कवि अपनी रचनाओं के पढ़े जाने के प्रति कई बार दुराग्रही हो जाता है।
- व्यंग्यकार यह बताना चाहता है कि निरंतर बदलती हुई कविता पाठक की रुचि का परिष्कार कर पाने में अक्षम रही है। आज की कविता आम पाठक को अपनी तरफ आकर्षित कर पाने में असफल सिद्ध हो रही है।

८.ब.२ प्रस्तावना व लेखक परिचय :

'समुझै कवि की कविताई' व्यंग्यकार प्रेम जनमेजय का चर्चित व्यंग्य है। इस व्यंग्य में व्यंग्यकार ने कवि प्रवृत्ति पर व्यंग्य कसा है।' राजधानी मे गँवार' प्रेम जनमेजय का प्रसिद्ध व्यंग्य संग्रह है। पिछले कई वर्षों से आप ' व्यंग्य यात्रा' नामक पत्रिका भी निकाल रहे हैं।

८.ब.३ सारांश :

प्रस्तुत व्यंग्य में व्यंग्यकार ने कवि प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है। व्यंग्यकार वर्तमान समय में रची जा रही कविता के रुखेपन से परिचित है वह जानता है कि आज का पाठक ऐसी कविताओं

से बचना चाहता है। उसे पढ़ने व सुनने से दूर भागता है किंतु कवि अपने पाठक के दुख को समझने के लिए तैयार नहीं है। वह जबरदस्ती सूखी, बेजान, निरस सी कविताओं को पाठक से पढ़वाना चाहता है। ऐसे ही एक कवि महोदय लेखक के गले पड़ जाते हैं और लेखक को अपना नया कविता संग्रह 'लाश के ढेरों पर आम आदमी' भेट करते हैं। कुछ दिन बाद वे फिर लेखक के घर इस आशा से आते हैं कि शायद लेखक ने उनकी कविताओं को पढ़ लिया होगा और वे लेखक की कुछ प्रतिक्रिया से परिचित हो सकेंगे। लेखक की तरफ से कोई प्रतिक्रिया न पाकर वे खुद ही लेखक से पूछ बैठते हैं कि, क्या आपने मेरा कविता संग्रह पढ़ा ? इस सीधे -सीधे प्रश्न के लिए लेखक तैयार न था और कुछ इधर उधर की बातों के बाद वह कवि महोदय से झूठ बोल बैठता है कि उसने उनका काव्य संग्रह पढ़ लिया है। इस पर कवि महोदय की उत्सुकता बढ़ जाती है और वे लेखक से पूछ बैठते हैं कि कौन सी पसंद आई ? इस पर लेखक को झूठ बोलना पड़ा और वह कहता है कि भाई वैसे तो संग्रह की सभी कविताएं अच्छी हैं किंतु प्रेम संबंधी कविताएं बेजोड़ हैं। इस पर कवि महोदय कहते हैं कि प्रेम कविताएँ तो मैंने कभी लिखी ही नहीं, मैं तो आम आदमी का कवि हूँ। पकड़े गए झूठ को छिपाने के लिए लेखक दूसरा झूठ बोलता है कि अच्छा आम आदमी के बारे में है, फिर तो भाई वियतनाम के बारे में लिखी गई कविता ने गजब ढा दिया है। इस पर कवि महोदय लेखक की तरफ प्रश्नात्मक दृष्टि से देखते हैं। लेखक भी समझ जाता है कि उनका झूठ पकड़ा गया और अंततः वे कवि महोदय से सच सच बता देते हैं कि वे न तो कविता लिखते हैं और न ही पढ़ने में रुचि रखते हैं।

कवि महोदय लेखक के उत्तर को सुनकर लेखक से पूछते हैं कि पहले आप भी तो कविता लिखते थे इस पर लेखक कहता है कि हाँ लिखता तो था पर आज उस लिखने के लिए मैं शर्मिंदा हूँ। लेखक के इस उत्तर को सुनकर कवि महोदय लेखक पर व्यंग्य कसते हुए कहते हैं कि आप महान हैं जो अपनी गलती मानकर शर्मिंदा हो रहे हैं। इस पर लेखक उत्तर देता है कि वास्तव में मैं महान नहीं हूँ, महान तो वे लोग हैं जो वर्षों तक गलती करने के उपरान्त भी शर्मिन्दा नहीं हो पाते। लेखक के इस व्यंग्य से कवि महोदय तिलमिला उठते हैं और लेखक से कविता न लिखने का कारण पूछने लगते हैं। इस पर लेखक अध्यापकीय शैली में कविता न लिखने के मूल और गौण कारणों तथा उनके उपभेदों को बताने का उपक्रम करने लगता है। लेखक की इस धृष्टता को कवि महोदय नहीं सह पाते और लेखक पर बिगड़ते हुए कहने लगते हैं कि, श्रीमान गद्यकार महोदय, आप में गद्य नहीं गधापन है, और आप अनपढ़- गँवार हैं। आप में कविता की समझ नहीं है।

कवि महोदय लेखक को खरी खोटी सुनाकर चलते बनते हैं और लेखक यह नहीं समझ पाता कि भला उसने क्या गलत कह दिया। मैंने तो कविता के बारे में वही कहा जो उसका आज का सच है।

८.ब.४ टिप्पणी :

'समुझे कवि की कविताई' के कवि महोदय : समुझै कवि की कविताई के कवि महोदय अति आत्मविश्वासी हैं। अपनी हर रचना को लेकर उनमें लबालब आत्मविश्वास भरा रहता है। उन्होंने अपनी एक नई नवेली कृति 'लाश के ढेरों पर आम आदमी' लेखक को पढ़ने के लिए दी थी। कुछ दिन बाद वे लेखक के घर पर आ धमकते हैं और इधर उधर की बातें करने के बाद वे लेखक से अपनी कविताओं के बारे में जानना चाहते हैं। लेखक पहले इधर उधर की बातें करते हैं । कुछ कविताओं के बारे में काल्पनिक राय देते हैं किंतु अंततः कवि महोदय उनकी चालाकी

को पकड़ लेते हैं। मजबूर होकर लेखक को अपनी सफाई देनी पड़ती है। लेखक साफ साफ शब्दों में कवि से कह देता है कि भाई में, न तो कविता लिखता हूँ और न ही पढने में रुचि रखता हूँ। इस पर कवि महोदय पूँछते कि फिर इतने सारे काव्य संग्रह आपने क्यों सजा रखा है? इस पर लेखक कहते है कि ऐसा वे सजावट के लिए करते हैं। लेखक कविता में रुचि न लेने का कारण बताते हैं कि यह जो नयी कविता नामक वस्तु है वह किसी के समझ में नही आती और उसमें किसी भी प्रकार का रस भी नहीं मिलता। अत: वे न तो कविता लिखते है और नही पढते हैं। लेखक अध्यापकीय शैली में कविता न लिखने के अनेक कारण व उपकारण बताने लगते हैं इस पर कवि महोदय क्रोधित हो जाते हैं और लेखक से कहते हैं कि श्रीमान गद्यकार महोदय आप में गद्य नहीं, गंधापन है और आप अनपढ़ - गँवार हैं । आप में कविता की समझ नहीं है।

८.ब.५ महत्वपूर्ण अवतरण :

''महान मैं नहीं, वे हैं जो कई वर्षों तक गलति-ाँ करने के उपरान्त भी शर्मिन्दा नहीं हो पाते हैं। उनमें अभूतपूर्व सं-म है। मुझमें वह सं-म नहीं है।''

संदर्भ:- प्रस्तुत अवतरण 'समुझै कवि की कविताई' नामक रचना से लि-ा ग-ा है। इसके लेखक प्रेम जनमेज-ा जी हैं।

प्रसंग:- प्रस्तुत अवतरण में लेखक न-ी कविता की कठिनाइ-ों को तथा न-े कवि की बेशर्मी को स्पष्ट करता है।

व्-ाख्-ा:- लेखक कवि महोद-ा को समझाते हुए कहता है कि वास्तव में मैं महान नहीं हूँ, महान तो वे लोग हैं जो वर्षों तक बेतुकी कविताएँ लिखते हैं किंतु अपनी बेवकूफी को लेकर शर्मिन्दा नहीं होते। उल्टे वे जनता से -ह आशा रखते हैं कि वह उनकी इस बेवकूफी को न केवल पढे बल्कि उसकी प्रशंसा भी करे। लेखक कवि कवि महोद-ा पर व्-ांग्-ा करते हुए कहता कि ऐसे तथाकथित कवि-ों में अभूतपूर्व सं-म है। मुझमें ऐसा सं-म नहीं है।

विशेष:- लेखक नई कविता की दुरुहता को स्पष्ट करते हुए न-े कवि-ों के दुराग्रह पर व्-ांग्-ा करता है।

संदर्भसहित व्-ाख्-ा हेतु अन्-ा महत्त्वपूर्ण अवतरण

(१) ''श्रीमान् गद्यकार महोद-ा, एक बात मैं कहूँ। आपमें गद्य नहीं गधापन है और आप अनपढ़- गँवार हैं। आप में कविता की समझ नहीं है।''

८.ब.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

१) कवि महोदय, लेखक पर क्यों बिगड़ पड़े व्यंग्य के आधार पर समझाइए।

❖❖❖

९

'मौत की राजनीति'

ईश्वर शर्मा

इकाई की रुप - रेखा

९.१ उद्देश्य
९.२ प्रस्तावना
९.३ सारांश
९.४ टिप्पणी
९.५ महत्वपूर्ण अवतरण
९.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

९.१ उद्देश्य :

- प्रस्तुत व्यंग्य में व्यंग्यकार ईश्वर शर्मा देश के नेताओं की असंवेदनशीलता पर रोशनी डालते हैं।
- देश के सत्तापक्ष व विपक्ष के वास्तविक चरित्र को उजागर करने की कोशिश करते हैं।
- सरकारी तंत्र की कमजोरियों व खामियों को स्पष्ट करते हैं।
- देश में व्याप्त गरीबी, भुखमरी व लाचारी की स्थिति का वर्णन करते हैं।

९.२ प्रस्तावना व लेखक परिचय :

'मौत की राजनीति' ईश्वर शर्मा के चर्चित व्यंग्यों में से एक है। ईश्वर शर्मा हिंदी के स्थापित व्यंग्यकार हैं। 'भिखमंगों की पेंशन -कथा' आपका महत्त्वपूर्ण व्यंग्य संग्रह है। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रही हैं।

९.३ सारांश :

प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से व्यंग्यकार देश में व्याप्त राजनीतिक असंवेदनशीलता पर प्रकाश डालता है। वह यह स्पष्ट करता है कि देश के नेता आज इतने असंवेदनशील हो चुके हैं कि वे किसी की मृत्यु को भी राजनीति का विषय बनाने से नहीं चूकते। मृत्यू को भी अपने लाभ के लिए मोहरा बनाकर वे राजनीतिक चालें चलते हैं। विपक्षी पार्टी का एक कार्यकर्ता जब अपने वरिष्ठ नेता को यह खबर देता है कि गाँव में रहनेवाली एक बुढ़िया जो भूख प्यास से मर रही थी उसने उसके लिए राशन का इंतजाम करवा कर उसे भूखों मरने से बचा लिया है, तो शाबाशी

देने के बजाय वह वरिष्ठ नेता जिसे लेखक ने भइयाजी के नाम से सम्बोधित किया है, नाराज हो जाता है और कार्यकर्ता को डांटते हुए कहता है कि यह क्या मूर्खता की तुमने, बुढ़िया मर रही थी मर जाने देते। तुम्हें क्या तकलीफ हो रही थी? तुम्हारी गलती के कारण विपक्ष के हाथ से सरकार को घेरने का बढ़िया मौका निकल गया। कुछ शांत होने के बाद वह नेता उस कार्यकर्ता को समझाता है कि आगे से स्थिति पर नजर रखना और जब कभी मौका आये तब मुझे सूचित करना।

दूसरी तरफ सत्तारुढ़ दल का एक कार्यकर्ता भी वृद्धा मरणासन्न स्थिति से चिंतित था। उसने यह जानकारी मंत्री जी को दी। साथ ही साथ उसने क्षेत्र में व्याप्त भुखमरी की भयावह स्थिति का वर्णन भी मंत्री जी के सामने किया। उसे यह लगा मंत्री जी इस सबसे बड़े प्रभावित होगे किंतु मंत्री जी ने सहज ढंग से हँसते हुए उससे कहा कि भला आज तक कोई इस देश में भूख से मरा है? तुम निश्चिंत रहो.... कुछ नहीं होगा। मंत्री जी कार्यकर्ता को समझाते हैं कि इस देश में लोगों को भूखे रहने की आदत है। इस देश में लोग भूख से नहीं बल्कि अधिक खा लेने से मरते हैं।

इसी बीच एक दिन भूख से तड़पते हुए एक वृद्ध की मृत्यु हो जाती है। भइयाजी से डांट खाया कार्यकर्ता उछल पड़ता है और दौड़ता भागता आकर भइयाजी को वृद्ध के मरने की खुशखबरी सुनाता है। इस सूचना को पाकर भइयाजी तुरंत चौकन्ने हो उठते हैं और कार्यकर्ता को यह निर्देश देते हैं कि अभी लाश को उठने मत देना। पहले हमारी आम सभा होगी, फिर लाश उठेगी। दूसरी तरफ सत्तापक्ष का कार्यकर्ता भी मंत्री जी को इस घटना की जानकारी देता है। मंत्री जी बिना विचलित हुए तुरंत कलेक्टर को फोन लगाते हैं और मामले को ठीक से देख लेने का निर्देश देते हैं। विपक्ष व पक्ष अपनी – अपनी भूमिकाओं में सक्रिय हो उठे थे। विपक्षवाले भइयाजी ने एक आम सभा ली उस सभा में उन्होंने यह संकल्प लिया कि भूख की बलिवेदी पर शहीद वृद्ध की शहादत को इस प्रजातंत्र में निरर्थक नहीं जाने दिया जाएगा। दूसरी तरफ कलेक्टर ने भइयाजी के आरोपों का खंडन करते हुए यह विज्ञप्ति जारी की कि प्राथमिक जांच में यह पाया गया है कि वृद्ध की मृत्यु भूख से नहीं हुई है। इस प्रकार पक्ष व विपक्ष के बीच आरोप – प्रत्यारोपों का दौर चलने लगा। वृद्ध की लाश को विस्तृत जाँच के लिए पोस्टमार्टम हेतु भेजा गया। मंत्री जी के इशारे पर डॉक्टरों ने फर्जी पोस्टमार्टम रिपोर्ट बना दी कि, मृतक के पेट में से बिना पचे अनाज के दाने पाए गए। मृत्यु से कुछ समय पहले मृतक का भोजन करना पाया जाता है।

भइयाजी ने इस रिपोर्ट को झूठी रिपोर्ट कहा और भूख से हुई मृत्यु के मामले को और भी जोरदार ढंग से उठाना शुरु किया। दूसरी तरफ मंत्री जी भी चाल पर चाल चलने लगे और इस बार उन्होंने पुलिस विभाग को काम पर लगा दिया। पुलिस विभाग मंत्रीजी के निर्देश पर हरकत में आ जाता है। कुछ पुलिसवाले अचानक वृद्ध के घर की तलाशी लेने के लिए पहुँच जाते हैं। गाँव के पाँच प्रतिष्ठित गवाहों के सामने मृतक के घर की तलाशी ली जाती है। मृतक के घर से पाँच किलो चावल, तीन किलो दाल, शकर, सब्जी, तेल और नगद बीस रुपए सफलतापूर्वक बरामद करके गाँववालों को दिखा दिया जाता है। मंत्रीजी की इस चाल से सामने विपक्षवाले भइयाजी की बोलती बंद हो जाती है। इतना ही नहीं मृतक का एक दूर का रिश्तेदार भी खोज निकाला जाता है।यह रिश्तेदार यह दावा भी करता है कि गुजारे के लिए वह मृतक को स्वयं अनाज व रुपये लाकर देता था।

इस प्रकार मंत्री जी अपनी चालों की सफलता पर मुस्कुरा रहे थे और विपक्षी भइयाजी नई चालों की जुगत भिड़ा रहे थे, और इस सबके बीच बेचारे वृद्ध की लाश को चील कौवे नोच नोचकर खा रहे थे। इस तरह सत्ता की विसात पर मौत की राजनीति खेली जा रही थी।

मंत्रीजी अपनी चालाकी व पूर्तता के जरिये फिर लोगों की आँखों में धूल झोकने मे ंसफल होते हैं।

९.४ टिप्पणी :

'मौत की राजनीति' के मंत्री जी : 'मौत की राजनीति' के मंत्री जी देश के खांटी राजनीतीज्ञ का प्रतिनिधित्व करते हैं। पार्टी का एक कार्यकर्ता जब उन्हें क्षेत्र में हो रही मौतों के बारे में बताता है तब वे कह उठते है कि, हमारे देश में लोगों को भूखे रहने की आदत है, वे कभी भी भूख से नहीं मरते है। ज्यादा खा लेने से जरुर मर जाते हैं। इसलिए चिंता की कोई बात नही है। हमारी सरकार भूख से किसी को मरने नहीं देगी। उधर जब भूख से सचमुच एक वृध्द की मौत सचमुच भुखमारी के कारण हो जाती है और विपक्ष के भेसाली हो हल्ला मचाने लगते हैं तब मंत्रीजी अपने वास्तविक रुप में प्रकट हो जाते हैं और कलेक्टर को मामले से निपटने की हिदायत देते हैं। मंत्रीजी के इशारे पर कलेक्टर मामले के जाँच की बात करता है। उधर दूसरी तरफ कलेक्टर के कहने पर सरकारी डॉक्टर वृध्द की झूठी पोस्ट मार्टम रिपोर्ट तैयार कर देते हैं। जिसमें यह बताया गया होता है कि मृतक ने पेट में अनाज के दाने थे अर्थात मरने से पहले उसने भोजन किया था ।

दूसरी तरफ मंत्रीजी के इशारे पर पुलिस विभाग भी हरकत में आ जाता है और मृतक के घर की तलाशी लेता है।तलाशी के दौरान पुलिस विभाग बड़ी सफलता से मृतक के घर में से पाँच किलो चावल, तीन किलो दाल, शक्कर, सब्जी तेल व नगद बीस रुपये प्राप्त करता है। इतना ही नहीं पुलिस मृतक के एक दूर के रिश्तेदार को भी लाकर खड़ा कर देती है जो इस बात की गवाही देता हैं कि वही मृतक को गुजारे के लिए यह सब लाकर देता था। इस प्रकार विपक्ष के भइयाजी का सारा का सारा दाँव मंत्रीजी की चालाकी के आगे धरा का धरा रह जाता हैं। मंत्रीजी अपनी चालाकी व पूर्तता के जरिये फिर लोगों की आँखों में धूल झोकने मे सफल होते हैं।

९.५ महत्वपूर्ण अवतरण :

''ने लोग भूख से कभी नहीं मरते। हाँ, अधिक खा लेने से जरुर मर जाते हैं। इसलिए चिंता की कोई बात नहीं है। सरकार किसी को मरने नहीं देगी, इतना ध्‍यान में रखो।''

संदर्भ:- प्रस्तुत अवतरण 'मौत की राजनीति' नामक रचना से लि‍या ग‍या है। इसके लेखक ईश्वर शर्मा जी हैं।

प्रसंग:- प्रस्तुत अवतरण में मंत्री महोद‍य अपने कार्‍यकर्ता को भूख से हो रही मौतों का तथाकथित सच समझा रहे हैं।

व्‍याख्‍या:- मंत्री महोद‍य कार्‍यकर्ता को समझाते हुए कहते हैं कि ने जो मौतें हो रही हैं वे भूख के कारण नहीं हो रही हैं । वे कहते हैं कि हमारे देश में लोग भूख से मर ही नहीं सकते बल्कि ज्‍यादा

खा लेने से जरूर मर जाते हैं। इसलिए चिंता करने जैसी कोई बात नहीं है। और ध्‍यान रखो भला हमारी सरकार भूख से किसी को मरने देगी, बिलकुल नहीं। देश में कोई और किसी कारण से क्‍यों न मरे। सरकार भूख के चलते किसी को नहीं मरने देगी। मंत्री जी आपने शब्दों के आडंबर से सरल ह्रदय कार्यकर्ता को बहला देते हैं।

विशेष:- उपर्युक्त अवतरण सत्ता में बैठे लोगों के वास्तविक चरित्र को हमारे सामने रखता है।

संदर्भसहित व्‍याख्‍या हेतु अन्‍य महत्त्वपूर्ण अवतरण।

(१) ''अधिक खाकर पचा लेने की क्षमता इस देश में विरले लोगों को ही हासिल है और मंत्रीजी इस तथ्‍य को भलीभांति जानते हैं।''

(२) ''सरकार के स्पष्ट निर्देश हैं कि किसी की मौत भूख से होने की रिपोर्ट न दी जाए। ऐसी स्थिति में हमें मृतक के पेट से अनाज के दाने निकालने ही पड़ते हैं वरना हमारी नौकरी खतरे में पड जाएगी।''

९.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

१) मंत्री महोदय ने विपक्षी नेता भइयाजी की सारी चालें कैसे असफल कर दीं? व्यंग्य के आधार पर स्पष्ट कीजिए

२) भइयाजी ने वृध्द की मौत को लेकर कैसे राजनीति की? व्यंग्य के आधार पर समझाइए।

१ - अ

रुकी हुई ट्रेन क्रांति का बीज

इकाई की रुप - रेखा

९.अ.१ उद्देश्य
९.अ.२ प्रस्तावना
९.अ.३ सारांश
९.अ.४ टिप्पणी
९.अ.५ महत्वपूर्ण अवतरण
९.अ.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

९.अ.१ उद्देश-ा :

- समसामनिक जीवन की विकृत सोच को -िह निबंध स्पष्ट करता है।
- दिशाहीन व दृष्टिहीन समाज के स्वरुप को -िह निबंध स्पष्ट करता है।
- क्रांति के बीज अब समाज, शिक्षा व राजनीति से लुप्त हो चुके हैं। -िह निबंध इसे स्पष्ट रूप से स्वीकार करता है।

९.अ.२ प्रस्तावना व लेखक परिच-ा :

ज्ञान चतुर्वेदी बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न प्रथम श्रेणी के व्-ंग्यकार हैं। 'प्रेतकथा' 'मरीचिका' 'बारामासी' जैसे उपन्-ास आपने लिखे हैं। हिंदी की प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में आपके व्-ंग-ा प्रकाशित होते रहे हैं। 'रुकी हुई ट्रेन और क्रांति के बीज' व्-ंग-ा में आपने सामाजिक व राजनीतिक दिशाहीनता को स्पष्ट कि-ा है।

९.अ.३ सारांश :

प्रस्तुत व्-ंग-ा में ज्ञान चतुर्वेदी जी समकालीन भारती-ा जीवन में व्-ााप्त दिशाहीनता को स्पष्ट करते हैं। वे -िह बताते हैं कि दृष्टिहीनता के इस -ाुग में व्-ाक्ति अपने बुद्धि विवेक से काम नहीं ले रहा है। नेता समाज को बरगला रहे हैं। -ाुवा पीढ़ी अपने हितों को साधने के लिए नेताओं का अंधानुकरण कर रही है और सत्ता पक्ष के साथ -साथ विपक्ष भी अवसरवादी राजनीति में लगा हुआ है। होता -िह है कि लेखक जिस ट्रेन में -ाात्रा कर रहे होते हैं वह ट्रेन अचानक रुक जाती है। लेखक ट्रेन के रुकने का कारण जानना चाहते हैं। एक नौजवान सह-ाात्री से वे पूछते

हैं -ह ट्रेन कैसे रुक गई? इस पर वह नौजवान कहता है कि भाई, हम कुछ नहीं कह सकते। हम तो अभी इस बारे में भी कन्फर्म नहीं हैं कि ट्रेन रुकी भी है -ा चल रही है। जैसा हमारे बुजुर्ग कहेंगे वैसा हम मान लेंगे। लेखक को -ुवक के इस व्-वहार पर बडा आश्च-र्् होता है। उस -ुवक के तर्क को दूसरे सह-ात्री नव-ुवक भी अपना समर्थन देते हैं। और अपने सत्तापक्ष के नेताजी के वक्तव्-न की प्रतीक्षा करते हैं। वे सभी लेखक से कहते हैं कि भै-ाजी जो कहेंगे उसे हम मान लेंगे क्-ोंकि -ही पार्टी का डिसिप्लिन है। -ह सब सुनकर लेखक ट्रेन से उतर पडता है, तभी उससे एक और सज्जन मिलते हैं। -े सज्जन विपक्षी पार्टी के नेता हैं। -े सज्जन लेखक से कहते हैं कि आप किनके चक्कर में पड ग-े थे? -े शासक पार्टी के लोग हैं। -े क्-ों मानेगे सच्ची बात। सच्चाई का साथ लो हम विपक्ष के लोग देते हैं। क्-ों कि शासक पार्टी के निर्ण-ों का विरोध करना ही हमारा काम है। शासक पार्टी की सभी नीति-ों का हम विरोध करते हैं। वे कहते हैं कि हम ट्रेन के रुकने के मामले को इतनी आसानी से छोड़नेवाले नहीं हैं। क्-ोंकि, ऐसी छोटी छोटी बातों से ही क्रांति होती है।

विपक्ष के -े नेता महोद-न छात्रों के एक समूह को पहले अपनी तरफ रिझाते हैं, फिर उन्हें शासन के प्रति भड़काते हैं। वे छात्रों से कहते हैं कि हमारी सरकार निकम्मी है। वह जनता के कल्-ाण के बारे में नहीं सोचती। चारो तरफ अव्-वस्था व अफरा-तफरी का माहौल है। नेताजी सुभाष के जमाने में ऐसा कभी नहीं हुआ। नेताजी होते तो -े दिन न देखने पड़ते। छात्र विपक्षी नेताजी की मंशा समझ जाते हैं। उनमें जो लीडरनुमा छात्र है वह कहता है कि हम जानते हैं कि आप क्रांति कराना चाहतें हैं। हम तो स्व-ं ट्रेन जला देना चाहते थे किंतु क्-ा करें ट्रेन का ड्राइवर हमारी ही जाति का है। अगर ट्रेन जला दि-ा तो वह कष्ट में पड़ जाएगा और हम भला अपनी जाति के लोगों को कष्ट कैसे दे सकते हैं।

छात्र नेता की बात सुनकर विपक्षी नेताजी कुछ उदास हो ग-े किंतु वे इतनी जल्दी हार माननेवाले न थे अत: उन्होंने छात्रों को फिर भड़काना शुरु कि-ा। उन्होंने छात्रों से कहा कि ट्रेन में बैठे सत्ता पक्ष के नेता भै-ाजी राजधानी जा रहे हैं। वहाँ सरकार फिल्मों की टिकट दर बढ़ाने पर विचार करनेवाली है। इतना सुनना था कि छात्रों का असंतोष भड़क उठा और उन्हें क्रांति करने का एक अच्छा बहाना मिल ग-ा। सभी छात्र भै-ाजी के डिब्बे पर टूट पड़े। इंकलाब जिंदाबाद के नारे लगाने लगे और भै-ाजी का सामान बाहर फेंका जाने लगा।

-ह सब देखकर विपक्षी नेताजी अपनी सफलता पर मुस्कराने लगे और लेखक एक किनारे खड़ा होकर सोचने लगा कि क्-ा -ही क्रांति है?

९.अ.४ टिप्पणी :

'रुकी हुई ट्रेन और क्रांति का बीज' के छात्र :- 'रुकी हुई ट्रेन और क्रांति का बीज' के छात्र विपक्षी नेताजी के द्वारा बरगलाए जा चुके हैं।विपक्षी नेताजी छात्रों को बताते हैं कि इस बार का प्रश्नपत्र तुलसीदास बना रहे हैं। वे बड़ी चतुराई से छात्रों को अपनी तरफ आकर्षित कर लेते हैं। सारे छात्र उनकी ईमानदारी के कायल हैं और सोचते हैं कि संभवत: नेताजी गलत युग में पैदा हो गये हैं। कलियुग नेताजी को सूट नहीं करता। नेताजी छात्रों की सहानुभूति बटोरते हुए कहते हैं कि यदि नेताजी सुभाष होते तो उन्हें ये दिन नहीं देखने पड़ते। ट्रेन यों घण्टों रुकी नहीं रहती वे छात्रों को भड़काते हैं। छात्र नेता उनकी मंशा समझ जाता हैं। और वह कहता है कि हम समझ

रहे हैं कि आप क्रांति करवाना चाहते हैं। हम तो स्वयं ट्रेन जला देना चाहते थे किंतु क्या करें ड्राइवर हमारी ही जाति का है और हम अपनी ही जातिवाले को कपट नहीं दे सकते। नेताजी इतने जल्दी निराश होनेवाले नहीं थी अत:उन्होंने दूसरी चाल चली और इस बार उन्होंने छात्रों को यह समझा दिया कि ट्रेन में बैठे सत्ता पक्ष के भैयाजी दिल्ली जा रहे हैं, वहाँ सरकार फिल्मों में टिकट दर को बढ़ाने का विचार करने वाली है। इतना सुनना था कि छात्र भड़क जाते हैं और भैयाजी के डिब्बे में चढ़कर तोड़फोड़ करना शुरु कर देतें हैं। विपक्षी भैया जी अपनी सफलता

९.अ.५ महत्वपूर्ण अवतरण :

''हमने तो स्व-ं कह दि-ा था कि ट्रेन जला देंगे। परन्तु क-ा करें, ड्राइवर साला हमारी जाति का निकल ग-ा। जात भी तो कोई चीज है साहब ! अब अपने जाति वाले को कष्ट कैसे दें ?''

संदर्भ:- प्रस्तुत अवतरण 'रुकी हुई ट्रेन और क्रांति का बीज' नामक रचना से लि-ा ग-ा है। इसके लेखक ज्ञान चतुर्वेदी जी हैं।

प्रसंग:- प्रस्तुत अवतरण में लेखक छात्रनेताओं की उस वृत्ति को दर्शाता है जिसमें जाति आधारित राजनीति का बीज मिलता है।

व्-ाख्-ाा:- विरोधी पार्टी के नेताजी के भड़काने से छात्र आंदोलन करने पर उतारु हो जाते हैं, किंतु फिर भी उनमें कुछ संकोच बना रहता है। नेताजी चाह रहे थे कि छात्र ट्रेन को आग लगा दें, इसीलिए वे छात्रों को भडकाते हैं। नेताजी के आश-न को छात्र समझ जाते हैं और एक लीडरनुमा छात्र अपनी ओर से सफाई देते हुए कहता है कि नेताजी हम आपका आश-न समझ रहें हैं, आप क्रांति करवाना चाहते हैं। हम तो खुद ट्रेन जला देना चाहते थे किंतु क-ा करें ट्रेन का ड्राइवर साला हमारी जाति का निकल ग-ा अब ऐसे में हम अपनी ही जाति के आदमी को कैसे कष्ट दें, आखिर जाति हमारे लिए ज-ादा महत्त्वपूर्ण है।

विशेष:- लेखक प्रस्तुत अवतरण में जाति आधारित मानसिकता व उससे जुडी राजनीतिक सोच को हमारे सामने रखता है।

संदर्भसहित व्-ाख्-ाा हेतु अन-ा महत्त्वपूर्ण अवतरण

(१) ''इस मामले को इतनी जल्दी छोड़ देना उचित न होगा -ादि हम का-र्वाही न करेंगे तो सरकार, के हौसले बढ़ जा-ेंगे। -े छोटी-छोटी घटनाएँ ही क्रांति का मुद्दा बनती हैं।''

(२) ''हमारी ईमानदारी देखिए। हमें मालूम था, तो हमने आपको भी बता दि-ा कि भई, तुलसीदास जी महान् कवि हुए हैं। किसी मंत्री से पूछकर देखते, तो वह टाल देता आपको।''

९.अ.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

१) विरोधी पार्टी के नेता ने छात्रों को कैसे भड़काया ? व्यंग्य के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

२) क्रांति की भावना दिशाहीन व विकृत हो चुकी है। 'रुकी हुई ट्रेन और क्रांन्ति का बीज' व्यंग्य के आधार पर इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

❖❖❖

९ - ब

'भगवान बचाए मेहमान से'

पूरन सरमा

इकाई की रुप - रेखा

९.ब.१ उद्देश्य
९.ब.२ प्रस्तावना
९.ब.३ सारांश टिप्पणी
९.ब.४ टिप्पणी
९.ब.५ महत्वपूर्ण अवतरण
९.ब.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

९.ब.१ उद्देश-ा :

- प्रस्तुत व्-ांग्-ा महानगरी-ा जीवन की उस संकुचित मानसिकता पर रोशनी डालता है, जिसके चलते हम मेहमानों से बचने की कोशिश करते हैं।
- आज की महँगाई व व्-ास्तता ने मेहमान नवाजी की समृद्ध भारती-ा परंपरा को लगभग नष्ट कर दि-ाा है।
- आज बिना बुलाए आ-ो मेहमान को हम जरा भी नहीं सह पाते और उसे जल्द से जल्द भगा देने की जुगत में लग जाते हैं।

९.ब.२ प्रस्तावना व लेखक परिच-ा :

पूरन सरमा समकालीन व्-ांग्-ा लेखकों में सबसे ज्-ादा प्रकाशित होने वाले लेखक हैं। सिध्द हस्त व्-ांग्-ाकार के रूप में आपने हिंदी व्-ांग्-ा विधा के लेखन में कीर्ति अर्जित की है। 'तैमूरलंग का तोहफा,' 'आत्महत्-ाा से पहले,' 'बड़े आदमी,' 'साहित्-ा की खटपट,' 'दफ्तर में वसंत' इत्-ादि आपकी महत्त्वपूर्ण रचनाएं हैं।

प्रस्तुत व्-ांग्-ा में व्-ांग्-ाकार पूरन सरमा ने -ाह बताने की कोशिश की है कि वर्तमान महानगरी-ा जीवन में मेहमाननवाजी के लिए कोई जगह नहीं रह गई है। बिना बुलाए आ-ो मेहमान के प्रति हमारे मन में किसी भी प्रकार की आत्मी-ाता नहीं होती उसे कोई भी तिकड़म कर भगाने की जुगत में हम लग जाते हैं।

९.ब.३ सारांश :

'भगवान् बचाए मेहमान से' व्यंग्य में व्यंग्यकार यह बताता है कि बिना बुलाए मेहमान जब घर पर आ जाता है तब किस प्रकार की कठिनाइयों का निर्माण होता है? और, वे तथा उनकी पत्नी दोनों किस प्रकार मेहमान को घर से भगा पाने में असमर्थ साबित होते हैं? होता यह है कि लेखक के घर एक बिन बुलाए मेहमान आ जाते हैं और पाँच दिन रुककर मेहमान नवाजी का लुत्फ उठाने की घोषणा करते हैं। लेखक सोच में पड़ जाता है वह सोचता है कि महँगाई के इस युग में एक वक्त का मेहमान तो झेला नहीं जाता, भला पाँच दिनों तक इन्हें कौन झेलेगा?

लेखक की इस दुविधा को उनकी पत्नी भांप लेती है और तुरंत उन्हें दूसरे कमरे में ले जाकर कहती है कि तुम चाय सिप करो, इन्हें भगाने के लिए मैं ही कोई ताण्डव सोचती हूँ। पत्नी अपनी योजना के अनुसार मेहमान को भगाने का उपक्रम करने लगती है। पहले तो वह मेहमान के लिये ऐसी चाय बनाती है, जिसमें काली मिर्च और अदरक तो बहुत ज्यादा होती है और शक्कर बहुत कम, पत्नी को लगता है कि इस कड़वी चाय को पीकर मेहमान गुस्से में आकर चले जाएंगे किंतु ऐसा होता नहीं। मेहमान खुद ही कह बैठते हैं कि भला इस महँगाई में कोई चाय में कितनी शक्कर डाल सकता है, भाभीजी मुझे डायबिटीज है आप मेरी चाय में शक्कर कम ही डाला करें।

इतना ही नहीं मुझे ब्लड प्रेशर और ब्रोंकईटिस भी है। केवल साग रोटी खाता हूँ। मेरे लिये कोई फोरमलटी न करें। मैं तो घर का आदमी हूँ। मुझे मेहमान न समझें। मैं जानता हूँ कि मेहमाननवाजी क्या चीज होती है।

मेहमान के मुँह से यह सब सुनकर पति पत्नी के होश उड़ जाते हैं। उन्हें ऐसा लगने लगता है कि मेहमान महोदय अब भगाए से भागनेवाले नहीं हैं। हार कर पति पाँच दिन के लिये सी.एल. का आवेदन लिखते हैं और निराश मन से मेहमान को झेलने के लिये तैयार होते हैं। दूसरी तरफ पत्नी किचन में जाकर अपनी नाराजी को प्रकट करने के लिये बर्तन पटकने लगतीं हैं।

९.ब.४ टिप्पणी :

'भगवान बचाये मेहमान से' के मेहमान :- 'भगवान बचाये मेहमान से' के मेहमान मेहमानवाजी का लुत्म उठाने के उद्देश्य से लेखक के घर पर आ धमकते हैं। उनके इस तरह आने और पाँच दिन विकने के प्रोग्राम के बारे में जब लेखक व उनकी पत्नी को पता चलता है तब उन्हे मेहमान साक्षात् दानव नजर आने लगते हैं। लेखक की पत्नी तुरंत मेहमान के भगाने के कार्यक्रम में जुट जाती हैं। लेखक के लाख मनाने पर भी वे मेहमान के लिए बिल्कुल कड़वी व फीकी चाय बना लाती हैं, जिसमें अदरक व काली मिर्च तो भरपूर थी किंतु शक्कर बिल्कुल फीकी थी। वे खाने में भी आलू की सूखी सब्जी और सूखी रोटी देने का प्रोग्राम बनाती हैं। घर आया मेहमान लेखक के पत्नी की इस चालाकी को समझ जाता है। वह लेखक की पत्नी से कहता है कि भाभीजी मेरी चाय में पाँच दिन तक चीनी कतई न डालें, क्योंकि मुझे डायबिटीज हैं- ब्लड प्रेशर और ब्रोंकाईटिस है। सूखी रोटी और सूखा साग खाता हूँ। आप कोई फोरमलटी न करें। मैं तो घर का आदमी हूँ। मुझे मेहमान न समझें । इस प्रकार मेहमान बड़ी - चालाकी से

लेखक की पत्नी की सारी योजना को ध्वस्त कर देता है। लेखक समझ जाते हैं, कि अब मेहमान को पाँच दिनों तक झेलना ही पड़ेगा और वे चुपचाप पाँच दिन की सी. एल. का आवेदन लिखने लगते हैं। दूसरी तरफ पत्नी अपनी खीझ निकालने के लिए रसोईघर में बर्तन फेंकने लगती है। इस प्रकार मेहमान अपने मेजबान से ज्यादा शातिर व चालाक निकलता है, और बड़े चैन से फ्रेश होने के लिए टायलेट में चला जाता है।

९.ब.५ महत्वपूर्ण अवतरण :

''मेरी चा-न में आप पाँच दिन तक चीनी कतई न डालें, क-ोंकि मुझे डा-बिटीज है- ब्लड- प्रेशर और बोंकाईटिस है। सूखी रोटी और सूखा साग खाता हूँ। आप कोई फोरमलटी न करें। मैं तो घर का आदमी हूँ।''

संदर्भ:- प्रस्तुत अवतरण 'भगवान बचाए मेहमान से' नामक रचना से लि-ा ग-ा है। इसके लेखक पूरन सरमा जी हैं।

प्रसंग:- प्रस्तुत अवतरण में लेखक -ह स्पष्ट कर रहा है कि घर आ-ा मेहमान किसी भी स्थिति में घर से भागने के लिए तै-ार नहीं है।

व्-ाख्-ा:- लेखक की पत्नी ने मेहमान को भगाने के लिए तरह तरह के हथकंडे आजमाए। लेखक की पत्नी ने मेहमान की चा-न में काली मिर्च और अदरक तो ज्-ादा मात्रा में डाली लेकिन शक्कर बहुत कम डाली ताकि चा-न कड़वी लगे और मेहमान जल्दी से भाग जाए, किंतु मेहमान भी इतनी आसानी से भागनेवाले न थे, इसीलिए उन्होंने अपनी ओर से चाल चलते हुए कहा कि भाभीजी आप मेरी चा-न में शक्कर बिलकुल न डालें क-ोंकि मुझे डा-बिटीज, ब्लड-प्रेशर और ब्रोंकाईटिस है। खाना भी सादा बनाएं क-ोंकि मैं साग रोटी ही खाता हूँ। मेरे साथ कोई फोरमलटी न करें। मुझे मेहमान न मानें, मैं तो घर का आदमी हूँ।

विशेष:- मेहमान लेखक व उनकी पत्नी से ज्-ादा चालाक है वह घर से भागने के लिए बिलकुल तै-ार नहीं है।

संदर्भ सहित व्-ाख्-ा हेतु अन्-ा महत्त्वपूर्ण अवतरण।

(१) ''सारा खेल लोन का है, लेकिन किश्त देता हूँ तो पसीना आ जाता है। आप ही बताइए मैं क-ा करूँ?''

(२) ''भाई साहब आप तो खामखाँ सीरि-स हो ग-े। मैं तो अखबार पढकर कह रहा था कि कैसा -ुग आ ग-ा जिसमें इंसानि-त को कोई जगह ही नहीं रही है। नेता करोडों पर हाथ साफ कर रहे हैं और कर्मचारी खुलेआम रिश्वत खा रहे हैं।''

९.ब.६ अभ्यास हेतु दीर्घोत्तरी प्रश्न

१) घर आए मेहमान को भगाने के लिए लेखक व उनकी पत्नी ने क्या – क्या हथकंडे अपनाए ? व्यंग्य के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

२) 'भगवान बचाए मेहमान से' व्यंग्य के आशय को समझाइए।

❖❖❖

१०

पत्र-लेखन

इकाई की रुप - रेखा

१०.१. उद्देश्य
१०.२. प्रस्तावना
१०.३. पत्र लेखन के प्रकार
(क) अनौपचारिक
(ख) औपचारिक
१०.४. पत्रों के प्रारुप
(क) निमंत्रण पत्र
(ख) बधाई पत्र
(ग) रिक्त पद हेतु आवेदन पत्र
(घ) संपादक के नाम पत्र
(१) शिकायत
(२) सुझाव
१०.५. संभावित प्रश्न

१०.१. उद्देश्य -

पत्र लेखन से संबंधित इस इकाई में विविध प्रकार के पत्र - लेखन के संबंध में चर्चा की गई है। विभिन्न स्थितियों और विषयों के अनुसार भाषा और पत्र का प्रारुप बदलता है। इस दृष्टि से विविध स्थितियों में पत्र लेखन सिखाना इस इकाई का उद्देश्य है। इस इकाई को पढ़ने से विद्यार्थी अनौपचारिक तथा औपचारिक पत्र लिख सकेंगे, पत्र का प्रारुप तैयार कर सकेंगे।

१०.२. प्रस्तावना -

पत्र हमारी जिंदगी का एक जरुरी हिस्सा है। हम सभी पत्र लिखते हैं। हमारे पास दूसरों के पत्र आते हैं। आप अपने परिवार के सदस्यों को, मित्रों को पत्र लिखते हैं। यदि आपके इलाके में किसी सार्वजनिक सुविधा की जरुरत है तो इसके लिए संबद्ध अधिकारी को पत्र लिखते हैं अथवा संपादक के नाम पत्र लिखकर अधिकारी का ध्यान आकर्षित करते हैं। यदि आप नौकरी पाना चाहते हैं तो आवेदन पत्र लिखते हैं। विद्यालय या कार्यालय से छुट्टी के लिए आवेदन पत्र लिखते है। किसी की सफलता पर उसे बधाई पत्र लिखते हैं अथवा किसी समारोह के अवसर पर आप निमंत्रण पत्र लिखते हैं।

१०.३. पत्रलेखन के प्रकार -

पत्र लेखन दो तरह का होता है - अनौपचारिक और औपचारिक। औपचारिक पत्र व्यक्तिगत पत्र होते हैं। इसमें एक निजीपन होता है। अनौपचारिक पत्र परिवार के सदस्यों को, मित्रों को, पूर्व - परिचित व्यक्तियों को लिखे जाते है। ये पत्र लिखने वाले और पाने वाले के बीच संवाद स्थापित करते हैं। औपचारिक पत्र उन लोगों को लिखे जाते हैं जो व्यक्तिगत रुप से बहुत परिचित नहीं होते, अथवा जिनके बीच संबंध काफी औपचारिक होते हैं। इसमें व्यावसायिक पत्र, नौकरी के आवेदन पत्र, संपादक से अनुरोध या शिकायत के पत्र, सरकारी पत्र आदि आते हैं।

१०.४. पत्रों के प्रारुप -

इस इकाई में निमंत्रण, बधाई, रिक्त पद हेतु आवेदन पत्र, संपादक के नाम पत्र के प्रारुप की जानकारी दी गई है। छपे हुए निमंत्रण पत्रों में केवल प्रेषिती (पाने वाले) के नाम की जगह छोड़ दी जाती है। इसमें प्रेषक (लेखक) का पता और दिनांक पत्र में नीचे बायीं ओर लिखा जाता है। स्वनिर्देश के लिए भवदीय, विनीत या दर्शनाभिलाषी लिखा जाता है। उनके नीचे एक या एक से अधिक व्यक्तियों के नाम छपे होते हैं। इसमें संबोधन और अभिवादन नहीं होते हैं। हस्तलिखित पत्र में प्रेषक और प्रेषिती के संबंधों के अनुसार संबोधन और स्वनिर्देश दिये जाते हैं।

निमंत्रण – पत्र – १

श्री / श्रीमती ———-
आप को यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता होगी कि घाटकोपर में हमारे नये मकान का गृहप्रवेश समारोह सोमवार, दिनांक ३०/४/ २०१२ को प्रातः १०-०० सम्पन्न होगा।

इस शुभ अवसर पर आप सपरिवार आमंत्रित हैं। आशा है इस आयोजन में सम्मिलित होकर हमारे आनंद में बृध्दि करेंगे।

दर्शनभिलाषी
रामानुज

२५ अप्रैल, २०१२
३ / z शिवमहल
घाटकोपर(प.)
महात्मागांधी रोड,
मुंबई - ४०० ०८४.

नोट - यदि प्रेषिती (पाने वाले) का पता देना आवश्यक हो, तो पत्र की समाप्ति पर निम्नलिखित रुप में दिया जा सकता है।

श्री राजपाल सिंह □
१० गुरुकृपा, तिलकरोड
मुलुंड, मुंबई - ८१

प्रेषिक
रामानुज
३ / z शिवमहल
घाटकोपर(प.)
महात्मागांधी रोड,
मुंबई - ४०० ०८४.

निमंत्रण – पत्र २

शुभ विवाह
श्री गणेशाय नमः

मान्यवर ———–

चि.अजय
(आत्मज – श्री देवनारायण
एवम्
कु. जया
(आत्मजा – श्री रविनाथ)
के

दाम्पत्य सूत्र – बन्धन की शुभ बेला पर पधार कर वर – कन्या को शुभाशीष देकर हमें अनुगृहीत करें।

विनीत
शिव शंकर
३ साईं अपार्टमेंट, सुभाष रोड,
मुलुंड (पूर्व), मुंबई - ८१.

वैवाहिक कार्यक्रम

विवाह स्थल – विशाल हॉल, अंधेरी (पूर्व)
मुंबई - ४०००६९.

विवाह – मंगलवार – २७फरवरी – सायं ७-०० बजे।

प्रीतिभोज – मंगलवार – २७ फरवरी – रात्रि ८-३० बजे।

निमंत्रण – पत्र ३

प्रीतिभोज के लिए

आदरणीय चंद्रकांत जी,

सादर नमस्कार

आप को यह जानकर हर्ष होगा कि मेरे पुत्र नरेश को इंजीनियरिंग परीक्षा में प्रवेश मिल गया है।

उसके उपलक्ष्य में रविवार, २९ जनवरी २०१२ को रात्रि ९-०० बजे मेरे निवास स्थान पर प्रीति- भोज का आयोजन किया गया है। इस आयोजन में सम्मिलित होकर हमें कृतार्थ करें।

विनीत,
राजनारायण
२० – बी, साईं निकेतन,
परेल, मुंबई - १२

(नीट आवश्यकता के अनुसार प्रेषिती का पता दिया जाना चाहिए)

(ख) बधाई पत्र

(जन्म दिवस पर मित्र को बधाई पत्र)

बधाई पत्र -१

४, कण्व सोसायटी,
९० फीट रोड, सांताक्रूज (प.)
मुंबई - ४०० ०५४
दिनांक ———–

प्रिय सुरेश,

नमस्ते।

जन्म दिन समारोह में सम्मिलित होने के लिए मुझे आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद। इस बार मैं तुम्हारे जन्मदिन समारोह में सम्मिलित नहीं हो पाऊँगा, क्योंकि २२ मार्च से मेरी परीक्षा आरंभ हो रही है और २५ मार्च को तुम्हारा जन्मदिन समारोह सम्पन्न होने वाला है। तुम्हारे सुखी – समृद्ध जीवन के लिए बहुत – बहुत शुभ कामनाएँ।

शुभकामनाओं सहित।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
राजीव

(नोट – प्रेषिती का पता देना आवश्यक, हो तो इस तरह दिया जाना चाहिए-)

सुरेश
३४ / ८ शिवदर्शन सोसायटी,
तिलक रोड, नासिक.

प्रेषक
४, कण्व सोसायटी,
९० फीट रोड, सांताक्रूज (प.)
मुंबई - ४०० ०५४.

बधाई पत्र २ –

नगर सेवक को विजयी होने पर बधाई पत्र

२ / ३, गुरुकृपा,
महात्मा गांधी रोड, घाटकोपर (प.)
मुंबई - ४०००८४
दिनांक ————

माननीय शिवसेवक जी,
सादर नमस्कार।

नगर – सेवक के चुनाव में आपके विजयी होने की सूचना टी. वी. पर मिली, अत्यधिक प्रसन्नता हुई । बधाई!

आशा है, क्षेत्र की जनता की सेवा का कार्य बड़ी निष्ठा और ईमानदारी से करेंगे। पुनः बधाई!

आपका कृपाकांक्षी
उमेश शुक्ला

(ग) रिक्त पद हेतु आवेदन पत्र

इतिहास व्याख्याता पद के लिए आवेदनपत्र

सेवा में
प्राचार्य
दयानन्द महाविद्यालय
स्टेशन रोड, भांडुप
मुंबई - ४०००७८.

विषय : इतिहास व्याख्याता के लिए आवेदन पत्र।

महोदय

आपके २० फरवरी २०१२ के दैनिक ' नवभारत टाइम्स' में प्रकाशित विज्ञापन से मुझे ज्ञात हुआ है कि आपके महाविद्यालय में इतिहास व्याख्याता का पद रिक्त हैं। मैं इस पद के लिए अपना आवेदन – पत्र प्रस्तुत करता हूँ। मेरी योग्यता व अनुभव निम्नलिखित है :-

१) एम.ए. इतिहास प्रथम श्रेणी, मुंबई विश्वविद्यालय,
२) बी.एड. प्रथम श्रेणी, मुंबई विश्वविद्यालय,
३) अध्यापन का अनुभव तीन साल, सिद्धार्थ कालेज, मुंबई,

अध्यापन के अतिरिक्त मुझे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बहुत रुचि है। नाटक, नृत्य, गीत – संगीत का निर्देशन कर सकता हूँ। मेरी आयु तीस वर्ष है। आशा है आप मुझे अपने कालेज में सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे।

प्रमाणपत्रों की सत्य- प्रतिलिपियाँ इस आवेदन –पत्र के साथ संलग्न हैं।

आपका विश्वासभाजन
जयप्रकाश

संलग्न : २ प्रतिलिपियाँ।
२५ फरवरी, २०१२
५ / ३ कृष्णकुंज, सुभाष रोड,
घाटकोपर, मुंबई - ८४.

(घ) संपादक के नाम पत्र

१) **शिकायत**

महेश चंद्र
४/१२ शिवदर्शन, तिलक रोड,
अंधेरी, मुंबई ६९.
दिनांक ———

सेवा में,
संपादक,
नवभारत टाइम्स
मुंबई - ४००००१

महोदय,

आप के प्रतिष्ठित दैनिक पत्र द्वारा मैं संबंधित अधिकारियों का ध्यान मरोल की गंदगी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। मरोल में कृष्ण –नगर की सड़कों और गलियों में गंदगी का साम्राज्य है। नालियों की सफाई नहीं होती, जिससे पानी गलियों में फैल जाता है। नालियाँ खुली हैं। कचरों के ढेर पर बहुत मच्छर होते है, जो रोग का कारण बनते हैं।

महानगर पालिका के अधिकारियों से निवेदन है कि कृष्णनगर की सफाई - व्यवस्था पर ध्यान देनें की कृपा करें।

आपका विश्वासभाजन
महेश चंद्र

२) **सुझाव**

राजीव श्रीवास्तव
३०६, राम अपार्टमेंट
भांडुप, मुंबई ४०००७९
दिनांक ———–

सेवा में,
संपादक
नवभारत
मुंबई।

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय दैनिक पत्र के माध्यम से BEST अधिकारियों का ध्यान यात्रियों की भीड़ की और खींचना चाहता हूँ। सुबह- शाम यात्रियों की भीड़ बस क्रमांक ६०७ पर बहुत बढ़ जाती है। बस में घुसना कठिन हो जाता है। छोटे विद्यार्थी बस में सुबह के समय प्रवेश नहीं पाते जिससे वे विद्यालय विलम्ब से पहुँचते हैं। मेरा यह सुझाव है कि सुबह – शाम के समय बस की संख्या बढ़ाई जाए।

सधन्यवाद

भवदीय
राजीव श्रीवास्तव

१०.५. संभावित प्रश्न -

आवश्यकतानुसार काल्पनिक पते का उपयोग करते हुए निम्नलिखित पत्रों के प्रारुप तैयार कीजिए -

१) रमेश के पुत्र नरेन्द्र की शादी २७ जून २०१२ को दिव्या के साथ निश्चित हुई है। निमंत्रण पत्र का प्रारुप तैयार कीजिए।

२) आप के मित्र जयप्रकाश की शादी सम्पन्न हुई है। उसे बधाई पत्र लिखिए।

३) शिवाजी विद्यालय, महात्मा गाँधी रोड, घाटकोपर में पुस्तकालयाध्यक्ष का पद रिक्त है। अपने को योग्य उम्मीदवार मानकर आवेदन पत्र का प्रारुप तैयार कीजिए।

४) आप ७, उदयाचल अपार्टमेंट, सुभाष रोड, अंधेरी (प.) के निवासी हैं। आप के क्षेत्र में गुंडों, लुटेरों का आतंक है। सुरक्षा हेतु पुलिस अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए संपादक के नाम पत्र लिखिए।

५) आप १०, दत्तनगर, राममंदिर रोड, भांडुप (प.) के निवासी हैं। नालों की सफाई न होने से बरसात का पानी आप के क्षेत्र में घुस आता है। संबंधित अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए संपादक के नाम सुझाव पत्र लिखिए ।

❖❖❖

११

वाक्य परिवर्तन तथा काल परिवर्तन

इकाई की रुप - रेखा

११.१. उद्देश्य
११.२. प्रस्तावना
११.३. वाक्य परिवर्तन
(क) अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद
(ख) रचना के आधार पर वाक्य के भेद
११.४. काल परिवर्तन
परिभाषा तथा काल के भेद
११.५. संभावित प्रश्न

११.१. उद्देश्य -

इस इकाई में अर्थ और रचना के आधार पर वाक्य - भेद की जानकारी दी गई है। अर्थ में परिवर्तन किये बिना एक वाक्य को दूसरे ढंग से कहा जा सकता है। जैसे -'आकाश साफ है,' वाक्य को 'आकाश में बादल नहीं है' के रुप में बोला जा सकता है।

इसी प्रकार एक ही धातु में कुछ प्रत्यय जोड़कर भिन्न – भिन्न कालों को सूचित किया जा सकता हैं। इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी वाक्य परिवर्तन की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे तथा धातु में प्रत्यय जोड़कर विभिन्न कालों में वाक्य की रचना कर सकेंगे।

११.२. प्रस्तावना -

अर्थ के आधार पर वाक्य के चार भेदों की चर्चा की गई है। इसी प्रकार रचना के आधार पर तीन प्रकार के वाक्य – सरल, संयुक्त और मिश्र - की जानकारी दी गई है। काल के तीन भेद हैं- वर्तमान, भूत और भविष्य। वर्तमान काल और भूतकाल के तीन – तीन उपभेद- सामान्य, अपूर्ण और पूर्ण -हैं। एक ही धातु में प्रत्यय के योग से भिन्न – भिन्न कालों की रचना की जाती है।

११.३. वाक्य परिवर्तन -

(क) अर्थ के अनुसार वाक्य के कई प्रकार होते हैं, जिनमें ४ प्रकार के वाक्यों का अध्ययन अपेक्षित है। वे हैं-

(१) विधि वाक्य,

(२) निषेधवाचक वाक्य,
(३) प्रश्नार्थक वाक्य,
(४) विस्मयादि बोधक वाक्य।

(१) विधिवाक्य – जिस वाक्य से किसी बात का होना पाया जाए, उसे विधि वाक्य कहते हैं।
जैसे – राम दशरथ के पुत्र थे।
भारत में प्रजातंत्र है।
आकाश में बादल हैं।
इंदौर पहले एक गाँव था।

(२) निषेधवाचक वाक्य – जिस वाक्य से किसी बात का कार्य का न होना पाया जाए, उसे निषेध वाचक वाक्य कहते हैं।
जैसे - भारत में राजतंत्र नहीं है।
आकाश बादल रहित नहीं है। या
आकाश साफ नहीं है।
इंदौर पहले से एक शहर नहीं था।
आपका बोलना उचित नहीं हैं।

(३) प्रश्नार्थक वाक्य – जिस वाक्य से किसी बात के लिए प्रश्न सूचित हो, उसे प्रश्नार्थक वाक्य कहते हैं।
जैसे - क्या भारत में प्रजातंत्र है ?
क्या आकाश में बादल हैं ?
क्या इंदौर पहले से एक शहर था ?
क्या आप का बोलना उचित है ?
क्या भारत शांति – प्रिय देश है ?
क्या आतंकवाद का परिणाम विनाश नहीं है ?
बालक क्या लिखता है ?
रमेश क्या पढ़ रहा है ?
बच्चे कहाँ जा रहे हैं ?

(४) विस्मयादिबोधक वाक्य – जिस वाक्य से विस्मय, हर्ष आदि प्रकट हो, उसे विस्मयादिबोधक वाक्य कहते हैं।
जैसे - अहा! आज आकाश में बादल है!
भारत इतना शांति प्रिय देश है!
रमेश ने तो कमाल कर दिया!
आप इतने चुप रहते हैं!
वह कैसा मूर्ख हैं!

अभ्यास – कोष्ठक की सूचना के अनुसार वाक्यों में परिवर्तन कीजिए –
१) तुमने आज ही चिट्ठी लिखी हैं। (प्रश्नार्थक, निषेधार्थक)
२) क्या तुम कल पुस्तक पढ़ रहे थे। (विधि वाक्य, विस्मयादिबोधक वाक्य)

३) तुम अवश्य सफल हो जाओगे। (निषेधार्थक वाक्य, प्रश्नार्थक वाक्य)
४) उसने चिट्ठी लिखी। (प्रश्नार्थक वाक्य, विस्मयादिबोधक)
५) क्या तुम कल मैदान में खेल रहे थे ? (विधिवाक्य, विस्मयादिबोधक वाक्य)

उत्तर –

(१) प्रश्नार्थक – क्या तुमने आज ही चिट्ठी लिखी है ?
निषेधार्थक – क्या तुमने आज ही चिट्ठी नहीं लिखी है ?
(२) विधि वाक्य – तुम कल पुस्तक पढ़ रहे थे।
विस्मयादिबोधक - वाह! कल तुम पुस्तक पढ़ रहे थे।
(३) निषेधार्थक – तुम असफल नहीं होगे।
प्रश्नार्थक – क्या तुम अवश्य सफल हो जाओगे ?
(४) प्रश्नार्थक – क्या उसने चिट्ठी लिखी ?
विस्मयादिबोधक - ऐं! उसने चिट्ठी लिखी।
(५) तुम कल मैदान में खेल रहे थे।
अहा, तुम कल मैदान में खेल रहे थे।

(ख) रचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं।
(१) सामान्य वाक्य,
(२) मिश्र वाक्य,
(३) संयुक्त वाक्य,

(१) सामान्य वाक्य – जिस वाक्य में एक उददेश्य और एक विधेय होता है, उसे सामान्य वाक्य कहते हैं।
जैसे – राम खेलता है।
राम और श्याम खेलते हैं।
राम, श्याम और सीता खेलते हैं।
पहले वाक्य में राम, दूसरे में राम और श्याम, तीसरे में राम, श्याम और सीता उद्देश्य हैं, इनके साथ खेलता है, खेलते हैं विधेय हैं। ये सरल वाक्य हैं, क्योंकि ये एक ही समापिका क्रिया से सम्बध्द हैं।

(२) मिश्र वाक्य – जिस बड़े वाक्य में एक प्रधान वाक्य हो और उसके आश्रित एक या अधिक उपवाक्य हों, उसे मिश्रवाक्य कहते हैं।
जैसे – १) मैं चाहता हूँ कि अपने माता –पिता के साथ रहूँ।
२) मैं सच कहता हूँ कि मैंने जीवन में कभी अन्याय का समर्थन नहीं किया।
३) कौन नहीं जानता कि पृथ्वी गोल है।
४) सब जानते है कि सत्य की विजय होती है।
५) वह व्यक्ति मूर्ख है,जो अपनों को छोड़ कर परायों को गले लगाता हैं।

उपर्युक्त वाक्य मिश्र वाक्य हैं, इन वाक्यों में एक प्रधान वाक्य है और दूसरा अश्रित उपवाक्य । अश्रित उपवाक्य अपने अर्थ के लिए प्रधान उपवाक्य पर निर्भर करता है। आश्रित

उपवाक्य प्रधान वाक्य के साथ ही सार्थक बनते हैं। मैं चाहता हूँ कि अपने माता – पिता के साथ रहूँ। को इसे सरल वाक्य में इस तरह बदला जा सकता है –

१) मैं अपने माता – पिता के साथ रहना चाहता हूँ।
२) जीवन में कभी अन्याय का समर्थक नहीं होने का मेरा कथन सच है।
३) पृथ्वी के गोल होने को सभी जानते हैं।
४) सत्य के विजयी होने को सभी जानते हैं।
५) अपनों को छोड़कर परायों को गले लगाने वाला व्यक्ति मूर्ख है।

वाक्य परिवर्तन के उदाहरण –

१) तुम जानते न थे, यह झूठ है। (सरल वाक्य)
उ. तुम इस झूठ को नहीं जानते थे।

२) जहाँ नदी बहती थी, वहाँ अब सूखी रेत पड़ी है। (सरल)
उ. नदी बहने की जगह पर अब सूखी रेत पड़ी है।

३) मैं आज मुंबई जाऊँगा । (संयुक्त वाक्य)
उ. मैं आज मुंबई जाऊँगा और तुम यहीं रहोगे।

४) जब राम आएगा, मैं उसके गले मिलूँगा।(सरल वाक्य)
उ. राम के आने पर मैं उसके गले मिलूँगा।

(३) संयुक्त वाक्य

जिस वाक्य में साधारण अथवा मिश्र वाक्यों का संयोग होता है, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। संयुक्त वाक्य के प्रधान वाक्यों को समानाधिकरण उपवाक्य कहते हैं।

उदा. १) मैं नदी पर गया और वहाँ स्नान किया।
२) मैंने पुस्तक खरीदी और उसका अध्ययन किया।
३) दिन में प्रकाश रहता है और रात में अंधेरा होता है।
४) तुम जाग रहे हो और वह सो रहा है।
५) तुम खाते हो और वे गाते हैं।

उपर्युक्त संयुक्त वाक्यों को सामान्य वाक्यों में परिवर्तित किया जा सकता है।

१) मैंने नदी पर जाकर वहाँ स्नान किया।
२) मैंने पुस्तक खरीदकर उसका अध्ययन किया।
३) दिन में प्रकाश और रात में अंधेरा होता हैं।
४) तुम जाग और वह सो रहा हैं।
५) तुम खाते और वे गाते हैं।

११.४. काल परिवर्तन

काल: क्रिया के जिस रुप से उसके होने के समय तथा पूर्णता या अपूर्णता का बोध होता है उसे काल कहते हैं। काल तीन प्रकार के होते हैं।
वर्तमान काल, भूतकाल और भविष्यत् काल।
वर्तमान काल - क्रिया के जिस रुप से आज के समय का बोध हो, उसे वर्तमान काल कहते है। इसके तीन भेद हैं-

१) सामान्य वर्तमान काल – इससे यह जाना जाता है कि क्रिया का आरंभ वक्ता के बोलने के समय से हो रहा है। सामान्य क्रिया में लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार ता हूँ, ती हूँ, ता है, ते हैं, आदि लगाने से सामान्य वर्तमान काल की क्रिया बनती है।

जैसे – बालक पढ़ता है।
बालिकाएँ पढ़ती हैं।
बालक पढ़ते हैं।

२) अपूर्ण वर्तमान काल से प्रकट होता है कि वर्तमान काल में कार्य हो रहा है। सामान्य क्रिया में रहा है, रहे हैं,रही हूँ आदि जोड़ने से अपूर्ण वर्तमान की क्रिया बनती है।

जैसे - बालक आ रहा है। तुम पत्र लिख रहे हो । वे चिट्ठी लिख रहे हैं।

३) पूर्णमान काल की क्रिया से ज्ञात होता है कि व्यापार वर्तमान काल में पूर्ण हुआ है।
जैसे - लड़का आया है। पुस्तक पढ़ी गई है। तुमने फल खाया है।

भूतकाल – क्रिया के जिस रुप से बीते समय का बोध हो, उसे भूतकाल कहते हैं। इसके भी तीन भेद हैं।

१) सामान्य भूतकाल – इससे यह ज्ञात होता है कि व्यापार बालने से पहले हुआ।
जैसे –लड़का आया, वे गए। पत्र लिखा गया।

२) अपूर्ण भूतकाल से ज्ञात होता है कि व्यापार भूतकाल में पूरा नहीं हुआ किंतु जारी रहा। क्रिया के सामान्य रुप में रहा था या ता था आदि जोड़ने से अपूर्ण भूतकाल की क्रिया बनती हैं।
जैसे - वह पढ़ता था।
वह पढ़ रहा था।
मैं पढ़ती थी, मैं पढ़ रही थी।

३) पूर्ण भूतकाल से पता चलता हैं कि व्यापार को पूर्ण हुए बहुत काल बीत चुका है। सामान्य भूतकाल की क्रिया में वचन – लिंग के अनुसार था, थी, थे, जोड़ने से पूर्ण भूतकाल की क्रिया बनती हैं।
जैसे - लड़का गया था।
लड़के गए थे।
लड़कियाँ गई थीं।

भविष्यकाल – क्रिया के जिस रुप से आनेवाले काल का बोध हो उसे भविष्यकाल कहते हैं। भविष्य काल में कार्य की पूर्ण या अपूर्ण अवस्था को सूचित करने के लिए हिन्दी क्रिया में कोई विशेष रुप नही ंपाए जाते। इसलिए इसके कई भेद नहीं है।सामान्य भविष्य काल की क्रिया से ज्ञात होता है कि कार्य आरंभ होने वाला है।

जैसे – गाड़ी आएगी,
वह पुस्तक पढ़ेगा,
पत्र लिखा जाएगा।

एक क्रिया का सभी कालो में रुपांतरण नीचे दिया जा रहा है।

वर्तमानकाल -

सामान्य वर्त.	अपूर्ण वर्त.	पूर्ण वर्त.
वह पुस्तक पढ़ता है।	वह पुस्तक पढ़ रहा है।	उसने पुस्तक पढ़ है।

भूतकाल –

उसने पुस्तक पढ़ी।	वह पुस्तक पढ़ता था। वह पुस्तक पढ़ रहा था।	उसने पुस्तक पढी थी।

भविष्यकाल –

वह पुस्तक पढ़ेगा।	×	×

प्रश्न – कोष्ठक की सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए.

१) नारद को दया आ जाती है। (पूर्ण भूतकाल)
२) मैं सरकारी दप्तर जा रहा हूँ। (सामान्य भविष्य)
३) नारद उस बाबू के पास जाएँगे। (सामान्य भूतकाल)
४) कर्मचारी दूने उत्साह से अपने काम में जुट जायेंगे। (अपूर्ण भूतकाल)
५) परिवर्तन के नाम से विपक्ष भड़क रहा था। (सामान्य वर्तमानकाल)
६) स्वतंत्रता सेनानी का बड़ा लड़का पागल हो गया।(पूर्ण वर्तमान)
७) मेरे पड़ोसी ने ठीक कहा है। (अपूर्ण वर्तमान काल)

उत्तर –

१) नारद को दया आ गई थी।
२) मैं सरकारी दप्तर जाऊँगा।
३) नारद उस बाबू के पास गए।
४) कर्मचारी दूने उत्साह से अपने काम में जुट जाते थे।
५) परिवर्तन के नाम से विपक्ष भड़कता है।
६) स्वतंत्रता सेनानी का बड़ा लड़का पागल हो गया है।
७) मेरा पड़ोसी ठीक कह रहा है।

११.५. संभावित प्रश्न -

१) कोष्ठक की सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए-

(क) उसमें से कुछ भीनी – भीनी सुगंध भी आती है। (अपूर्ण भूतकाल)

(ख) आप के चित्र से पत्र की शोभा बढ़ जाती है। (सामान्य भविष्यकाल)

(ग) मैं तुम्हारे सब जाल – फरेबों को अच्छी तरह जान रही थी। (सामान्य वर्तमान काल)

(घ) चिराग कुछ पंक्तियाँ पढ़ कर सुनाता है। (सामान्य भूतकाल)

(च) हमारे पड़ोस में एक नये किरायेदार आए। (पूर्ण वर्तमान)

(छ) लाचार मैं चुप हो जाता हूँ। (सामान्य भूतकाल)

(ज) मैं सुख की साँस लेता हूँ (सामान्य भूतकाल)

(झ) अपने अजीज के नाम आकाशवाणी से एक पत्र आता है। (पूर्ण वर्तमानकाल)

२) कोष्ठक की सूचना के अनुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए –

(क) मुन्ने की दादी नाखुश नहीं है। (विधि वाक्य)

(ख) घूमते – फिरते नारद मुनि वहाँ आ गए।(प्रश्नार्थक वाक्य)

(ग) गाड़ी ठीक समय पर आई थी। (निषेध वाचक)

(घ) कर्मचारियों को व्याजमुक्त ऋण की सुविधा मिलेगी। (विस्मयादिबोधक)

❖❖❖

१२

वाक्य रचना तथा वर्तनी की शुध्दता

इकाई की रुप - रेखा

१२.१. उद्देश्य
१२.२. प्रस्तावना
१२.३. वाक्य रचना की शुध्दता
पद –क्रम, अन्वय
१२.४. वर्तनी की शुध्दता
१२.५. संभावित प्रश्न

१२.१. उद्देश्य -

इस इकाई का उद्देश्य शुध्द – वाक्य रचना तथा शुध्द वर्तनी की जानकारी प्रदान करना है। वाक्य रचना में पद – क्रम निश्चित होता है और वाक्य के पदों मे परस्पर संबंध होता है। इन संबंधो के आधार पर उनके लिंग, वचन और पुरुष निश्चित होते हैं।

शुध्द वर्तनी के लिए आवश्यक है कि लेखन में ठीक ध्वनि चिह्न प्रयुक्त हों, और वे ठीक क्रम में आएँ।

१२.२. प्रस्तावना -

वाक्य रचना की शुध्दता से संबंधित इस इकाई मैं पद क्रम और अन्वय की विस्तृत चर्चा की गई है। हिन्दी में पहले कर्ता आता है, उसके बाद कर्म तथा अन्त में क्रिया आती है। क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष आदि कभी कर्ता के अनुसार होते हैं तो कभी कर्म के अनुसार विशेषण के लिंग- वचन विशेष्य के लिंग –वचन के अनुसार होते हैं।

शब्द का लिखित रुप वर्तनी कहलाता है। अर्थ की स्पष्टता के लिए वर्तनी का शुध्द होना आवश्यक है। वर्तनी में एकरुपता होने से सीखने में सरलता होती है। शुध्द उच्चारण पर वर्तनी की शुध्दता निर्भर करती है। उच्चारण सही हो तो वर्तनी भी ठीक होगी। दिन और दीन के उच्चारण को समझ कर वर्तनी की गलतियों से बचा जा सकता है।

१२.३. वाक्य – रचना की शुद्धता

अर्थ की स्पष्टता के लिए वाक्य का शुध्द होना आवश्यक है। वाक्य रचना में पद – क्रम और अन्वय का विशेष महत्त्व है।

पद – क्रम :- वाक्य में शब्दों को उनके संबंधानुसार उचित स्थान पर रखने को क्रम कहते हैं। पद क्रम के साधारण नियम इस प्रकार हैं।

१) प्राय : वाक्य में पहले कर्ता आता है।

जैसे - बालक गया।
तुम गये।

संबोधन आश्चर्य, क्रोध आदि प्रकट करने के लिए कर्ता का प्रयोग वाक्य के अन्त में होता हैं।

जैसे - लिखते क्यों नहीं हो तुम ?
कहाँ गया है रमेश ?

कर्ता का विशेषण कर्ता से पहले आता है। जैसे उसकी माँ खाना पकाती है।

२) कर्ता के बाद कर्म आता है। जहाँ दो कर्म हों, वहाँ गौण कर्म पहले और प्रधान उसके बाद आता है।

जैसे – राम 'पुस्तक' पढ़ता है।
माँ 'बच्चे को' रोटी खिलाती है।

कर्म का विशेषण कर्म से पहले आता है। जैसे – वह 'अपने भाई' को 'नई पुस्तक' पढ़ाता है।

३) वाक्य में सबसे अन्त में क्रिया और उसके कुछ पहले क्रिया – विशेषण आते हैं। जैसे – माँ ने बच्चे को खूब प्यार किया। माँ खाना पकाती है।

४) कालवाचक क्रिया – विशेषण प्राय: वाक्य या उपवाक्य के आरंभ में आते हैं। जैसे - 'जब' मैं गया 'तब' वह आया।

५) विशेषण शब्द यदि क्रिया के पूरक बन कर आए तो वे क्रिया से पूर्व लिखे जाते हैं न कि विशेष्य के पूर्व ।

जैसे - कपड़ा 'गीला' हैं।
चावल गर्म हैं।

शब्द –क्रम के ये सामान्य नियम हैं। किंसी शब्द पर विशेष बल देने अथवा प्रश्न करने में नियमों का विचार नहीं किया जाता हैं।

जैसे - लिखना था तो तूने लिखा क्यों नहीं ?
भाड़ में जाए ऐसी नौकरी!

अन्वय

प्रत्येक वाक्य के पदों में परस्पर संबंध होता हैं। किस पद का किससे संबंध है, इस ज्ञान को व्याकरण में अन्वय कहते हैं।

<u>सर्वनाम और संज्ञा का संबंध</u>

सर्वनाम के लिंग और वचन वही होते हैं जो उस संज्ञा के होते हैं जिसके स्थान में सर्वनाम प्रयुक्त हुआ हैं।

जैसे - (क) लड़के ने कहा - 'मैं' पुस्तक पढूँगा।
(मैं सर्वनाम , पुल्लिंग, एकवचन)
(ख) लड़की ने कहा -'मैं' पुस्तक पढूँगी।
(मैं सर्वनाम , स्त्रीलिंग, एकवचन)
(ग) विद्यार्थीयों ने कहा हम पढ़ते हैं।
(हम सर्वनाम, पुल्लिंग, बहुवचन)

यदि 'हम' कहने वाले स्त्री- पुरुष दोनों हो तो सर्वनाम पुल्लिंग और बहुवचन के रुप में प्रयुक्त होता हैं।

जैसे - लड़की ने कहा - 'हम' तो दौड़ेंगे।
पत्नी ने कहा – हम तो उस घर में बेटी नहीं देंगे।

<u>विशेषण और विशेष्य का अन्वय</u>

प्राय: जो लिंग – वचन आदि विशेष्य के होते हैं, वही विशेषण के होते हैं।

जैसे – मोटा लड़का पढ़ता है।
छोटी लड़की पढ़ती है।

स्त्रीलिंग में विशेषण दोनों वचनोंमें समान होते हैं।

जैसे - छोटी लड़की, छोटी लड़कियाँ।
नीली साड़ी, नीली साडियाँ।

<u>कर्ता और क्रिया का अन्वय</u>

१) कर्ता कारक चिह्न रहित होता हैं, तब क्रिया का लिंग,वचन और पुरुष कर्ता के अनुसार होता हैं।

जैसे - बच्चा हँसता है।
बच्चे हँसते हैं।
लड़की दौड़ती है।
लड़कियाँ दौड़ती हैं।

२) जहाँ कर्ता कारक –चिह्न- सहित हो और कर्म कारक चिह्न रहित हो वहाँ क्रिया का अन्वय कर्म के साथ होता है।

क) राम ने पत्र लिखा।
ख) राम ने चिटठी लिखी।
ग) सीता ने पत्र लिखा।
घ) सीता ने चिट्ठी लिखी।

३) जब कर्ता और कर्म दोनों कारक-चिह्न-सहित हों, तब क्रिया हमेशा पुल्लिंग, एकवचन और अन्यपुरुष में होती है।

जैसे - क) कृष्ण ने राधा को पुकारा।
ख) राधा ने कृष्ण को पुकारा।
ग) लड़कों ने साथियों को बुलाया।

४) किसी को आदर देने के लिए क्रिया बहुवचन में होती है।
क) दादाजी आ रहे हैं।
ख) प्रधानमंत्री भाषण दे रहे हैं।

संबंध और संबंधी का अन्वय

संबंध कारक के विभक्ति चिह्न में वही लिंग और वचन होते हैं जो संबंधी शब्द के होते हैं।

जैंसे - क) बालक का खिलौना नया है।
ख) बालक के खिलौने नये हैं।
ग) बालक की घड़ी कीमती है।
घ) बालक की घड़ियाँ कीमती हैं।

प्रश्न : निम्नलिखित वाक्यों को शुध्द करके लिखिए –

१) लोग जाता है तो भटक जाता हैं।
२) मूर्ख का हृदय क्षणभर भी नहीं बदलते।
३) हम बुध्दिमान बनाया करता हूँ।
४) गाँव में एक बुढ़िया कई दिनों से भूखी – प्यासी पड़ा था।
५) एक बात मेरी समझ में नहीं आया।
६) बिना क्रिकेट के हम कहीं नही जाएगा।
७) सारा भारत आप की प्रतीक्षा कर रहे हैं।
८) हम आपसी झगड़े छह महीने बाद करूँगा।
९) वे क्रोधित हो गया।
१०) मंत्रीजी इस तथ्य को भली – भाँति जानता हैं।

१२.४. वर्तनी की शुद्धता -

शब्द का लिखित रूप उसकी वर्तनी कहलाता है। जैसे किताब और पुस्तक सही वर्तनी है, कीताब और पुस्तक गलत वर्तनी। वर्तनी की शुद्धता के लिए आवश्यक है कि लेखन में ठीक ध्वनि चिहन प्रयुक्त हों और वे ठीक क्रम में आएँ। किसी – किसी शब्द की वर्तनी के चार रुप मिलते हैं – सम्बन्ध, संबंध, सम्बंध, संबन्ध। इससे सीखने वालों को भी कठिनाई होती है। यहाँ एक रुपता लाने की आवश्यकता है। वर्तनी की शुद्धता के संबंध हिन्दी निदेशालय ने कुछ सुझाव दिये हैं।

१) खड़ी वाई वाले व्यंजनों का संयुक्त रुप खड़ी पाई को हटाकर बनाया जाना चाहिए। जैसे – विस्तार, विश्व, संख्या, पथ्य, सत्य, उल्लेख, नगण्य, विघ्न, सच्चा आदि।
२) क और फ के संयुक्त वर्ण बनाने के लिए इनकी आखिरी रेखा थोड़ी काट दी जाय तो संयुक्त वर्ण बन जाएँगे । जैसे क, फ – मुक्त , हप्ता।
३) ड., छ, ट, ठ, ड, ढ, द और ह के संयुक्ताक्षर हल चिहन लगाकर बनाया जाए। जैसे वाड्.मय ब्रहूमा, विद्या, पद्म आदि। वाड.मय, ब्रहम, विद्या, पद्म गलत वर्तनी हैं।
४) संयुक्त र के प्रचलित तीनों रुप रहेंगे। जैसे प्रकार, धर्म, राष्ट्र।

५) श्र का प्रचलित रुप ही मान्य होगा। इसे श्र के रुप में नहीं लिखा जाएगा। त् + र के संयुक्त रुप के लिए त्र, ग्र दोनों रुपों में से किसी एक का प्रयोग विकल्प के रुप में किया जाए। जैसे –स्त्री, स्त्री। लेकिन क्र को क्र के रुप में नहीं लिखा जाएगा।

६) हल चिह्न युक्त वर्ण से बनाने वाले संयुक्ताक्षर के दवितीय व्यंजन के साथ 'इ' की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के तत्काल पूर्व ही किया जाएगा, न कि पूरे युग्म के पूर्व। जैसे द्वितीय, बुदधिमान, निशचित आदि

७) हिंदी के विभक्ति चिह्न संज्ञा शब्दों से अलग लिखे जाएँ। जैसे लड़के ने, लडके को, स्त्री में आदि। लड़केने, लडकेको, स्त्रीमें आदि गलत वर्तनी है।

८) सर्वनाम शब्दों में विभक्ति चिह्न सर्वनाम शब्दों के साथ मिलाकर लिखे जाएँ। जैसे – उसने, मुझसे, तुमने, तुमको आदि

९) सर्वनाम के साथ यदि दो विभक्ति चिह्न हों तो पहला मिलाकर और दूसरा पृथक लिखा जाए। जैसे उसके लिए, तुम्हारे लिए उनमें से।

अनुस्वार और अनुनासिकता :-

१०) संयुक्त व्यंजन के रुप में पंचमाक्षर के बाद उसी वर्ग के शेष चारों वर्णों से कोई वर्ण हो तो एकरुपता और लेखन की सुविधा के लिए अनुस्वार का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे – पंकज, चंचल, ठंडा, संध्या, संपादक आदि में पंचमाक्षर के बाद उसी वर्ग का वर्ण आगे आता है, अत: पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग होगा (पड्.कज, जञ्चलु ठण्डज्ञ, सन्धा, सम्पादक की वर्तनी गलत है।) यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ण आए अथवा वही पंचमाक्षर आए तो पंचमाक्षर अनुस्वार के रुप में परिवर्तित नहीं होगा। जैसे- वाड्.मय, अन्य, अन्न, पुण्य, सम्मेलन, सम्मति, उन्मुख आदि। इनको वांमय, अंय, अंन, पुंय, संमेलन, संमति, उंमुख के रुप में नहीं लिखना चाहिए।

११) चंद्रबिंदु के बिना प्राय: अर्थ में भ्रम की गुंजाइश रहती है, वहाँ चंद्रबिंदु का प्रयोग अवश्य किया जाए, जैसे हंस : हँस, अंगना : अँगना आदि में । किन्तु जहाँ (विशेष रुप से शिरोरेखा के ऊपर जुड़ने वाली मात्रा के साथ) चंद्रबिन्दु के प्रयोग से छपाई में बहुत कठिनाई हो और चंद्रबिन्दु के स्थान पर बिन्दु (अनुस्वार) का प्रयोग किसी प्रकार भ्रम उत्पन्न न करे, वहाँ चंद्रबिन्दु के स्थान पर बिन्दु का प्रयोग किया जाए जैसे – नहीं, हैं, मैं, में ।

१२) संस्कृत के तत्सम हल्युक्त शब्द, जो हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं और जिनका हल् चिहन होते लुप्त हो गया हो, उनमें पुन: हल् चिहन लगाने का प्रयत्न न किया जाए। जैसे श्रीमान, भगवान, जगत, परिषद आदि। ये शब्द श्रीमान्, भगवान्, जगत्, परिषद् के रुप में नहीं लिखे जाने चाहिए।

१३) संस्कृत के तत्सम शब्दों में तीन व्यंजनों के संयोग की स्थिति में एक द्वित्वमूलक व्यंजन लुप्त हो गया है उसे न लिखा जाए।

सही	गलत
उज्वल	उज्ज्वल
तत्व	तत्त्व
अर्ध	अर्द्ध

१४) संस्कृत के जिन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग होता हैं, वे यदि वे तत्सम रुप में आएँ तो विसर्ग का प्रयोग अवश्य किया जाए, जैसे – दु:खानुभूति में। यदि उस शब्द के तद्भव

रुप में विसर्ग का लोप हो चुका हो तो उस रुप में विसर्ग के बिना भी काम चल जाएगा। जैसे दुख -सुख।

१५) द्वद्व समास में पदों के बीच हाइफन रखा जाए, जैसे सुख –दुख, दिन – रात, माता –पिता, राम – लक्ष्मण, खेलना – कूदना आदि।

१६) यह प्रश्न भी उठता है कि ह्रस्व और दीर्घ स्वरों के दोषों के कैसे दूर किया जाए। वर्तनी के बहुत से दोषों का कारण उच्चारण है। उच्चारण सही हो, तो वर्तनी भी ठीक होगी। हिन्दीं में हम वही लिखते हैं, जो हम बोलते हैं। इसीलिए हस्वदीर्घ स्वरों का उच्चारण सही करें तो वर्तनी सही लिख सकते हैं। दिन – दीन, जाति – जाती के उच्चारण को समझ कर गलत वर्तनी से बचा जा सकता हैं।

१२.५. संभावित प्रश्न -

प्रश्न : निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुध्द करके फिर से लिखिए :

गङ्गा, सन्त भगवान्, उज्ज्वल, सुख दुख, दिन रात, अर्द्ध, उद्यान, लट्टू, बुङ्ग , ब्रहम, चिहन, पुंय, गंना, सांय, संमति, सम्पादक, चञ्चल, ठण्डा सम्बन्ध, हिन्दी, सिन्ध, झण्डा, अन्त, बन्द, बिन्दु, अन्धा, निबन्ध, विद्या, इकट्ठ, प्रश्न, गल्ला, पत्ता.

❖❖❖

१३

मुहावरे तथा कहावतों का अर्थ एवं प्रयोग

इकाई की रुप - रेखा

१३.१. उद्देश्य
१३.२. प्रस्तावना
१३.३. प्रचलित मुहावरे : अर्थ व वाक्य प्रयोग
१३.४. कहावतें : अर्थ व प्रयोग

१३.१. उद्देश्य -

भाषा में सुन्दरता और लालित्य लाने का काम मुहावरे करते हैं। मुहावरे संक्षिप्त और सुन्दर वाक्यांश ही हैं। भाषा में मुहावरों का महत्व बताना ही इस इकाई का उद्देश्य है। मुहावरों के सही प्रयोग से ही भाषा का सौन्दर्य बढ़ता है। बहुत लम्बी बात मुहावरे में संक्षिप्त और प्रभावशाली ढंग से कही जा सकती है।

१३.२. प्रस्तावना -

भाषा में मुहावरे और कहावतों का अत्यधिक महत्त्व होता है। 'यदि व्याकरण को भाषा का अस्थि – पंजर कहा जाए तो मुहावरों और कहावतें उसकी जान हैं। बिना मुहावरों और कहावतों के भाषा प्रभावशाली हो ही नहीं सकती। इनमें शब्द की प्रमुखता नहीं होती। ये संदर्भ, विचार और भाव प्रधान होती हैं। मुहावरों तथा कहावतों को जबानी याद कर लेना भर किसी काम का नहीं होता, जब तक उनके ठीक – ठीक संदर्भ, अर्थ और प्रयोग का ज्ञान हो।

१३.३. प्रचलित मुहावरे : अर्थ व वाक्य प्रयोग -

कुछ प्रचलित मुहावरे और कहावतें अर्थ एवं प्रयोग सहित नीचे दी जा रही हैं।

१) अँगूठा दिखाना – (कोई चीज देने से उपेक्षा के साथ मना कर देना) जमींदार ने किसान से कहा था, ' बेटी की शादी में गेहूँ रुपया आदि ले जाना।' किसान जब मांगने गया तब उसने अँगूठा दिखा दिया।

२) अगर – मगर करना –(टाल –मटोल करना) अगर – मगर करना ठीक नहीं, साफ – साफ बोलो दोगे या नहीं ?

३) अपना उल्लू सीधा करना –(स्वार्थ सिध्द करना) दुकानदार खराब माल बेचकर अपना उल्लू सीधा कर रहा है, ग्राहक मरे जा जिए।

४) आगा –पीछा करना – (हिचकिचाना) अच्छा काम आरंभ करने में आगा पीछा नहीं करना चाहिए।

५) ऊँच –नीच सोचना – (परिणाम सोचना) मारने के लिए हाथ उठाने से पहले ऊँच –नीच सोच लेना चाहिए।

६) कलेजे पर साँप लोटना – (ईर्ष्या से दिल जलना) नौकरी में मेरी तरक्की सुनकर शत्रु – पड़ोसी के कलेजे पर साँप लोट गया।

७) कान पर जू न रेगना –(अप्रभावित रहना) लड़के का पढ़ाई में मन नहीं लगता, पिता के बार-बार कहने पर भी उसके कान में जू नहीं रेंगता।

८) गड़े मुर्दे उखाड़ना – (पिछले झगड़ों की याद करना) बीती बातों पर मत झगड़ो, गडे मुर्दे उखाड़ने से क्या लाभ होगा ?

९) गुड़ियों का खेल समझना – (अत्यन्त सहज काम) गुरु जी ने छात्रों से काह - 'कठिन परिश्रम करो, परीक्षा में प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण होना गुड़ियों का खेल नहीं है।

१०) छाती पर पत्थर रखना – (चुपचाप सहन करना) मैंने छाती पर पत्थर रख कर जमींदार रायसाहब का सब अत्याचार सहन किया।

११) टस से मस न होना – (कुछ भी प्रभावित न होना) रमेश बड़ा जिद्दी लड़का है, पिताजी के बहुत समझाने पर भी वह टस से मस नहीं हुआ।

१२) टेढ़ी खीर – (कठिन काम) रंजना ने कहा कि मेरी सास आज रूठी हैं, उन्हें मनाना टेढ़ी खीर है।

१३) डींग मारना – (लम्बी -चौड़ी बातें करना) मेरे सामने क्या डींग मार रहे हो मोहन! मैं तुम्हारी सब असलियत जानता हूँ।

१४) ढिंढोरा पीटना – (किसी बात को हर जगह कहते फिरना) तुम्हें यह बात मालूम हो गई थी तो चुप रहते, सारे शहर में ढिंढोरा पीटने की क्या जरुरत थी ?

१५) दबे पॉव निकल जाना –(चुपके से खिसक जाना) थानेदार को देखते ही चोर दबे पॉव निकल भागे।

१६) दिमाग चाटना – (निरर्थक बातों से तंग करना) आजकल वह रोज एक घंटे मेरे पास बैठकर मेरा दिमाग चाटता है।

१७) तिल धरने की जगह न होना – (बहुत भीड़ होना) कुंभ के मेले में इतनी भीड़ थी कि तिल धरने की भी जगह न थी।

१८) नाक रख लेना – (इज्जत रख लेना) आज सेठ ने पाँच सौ रुपये देकर मेरी नाक रख ली, नहीं तो इज्जत ही चली जाती।

१९) पर्दा डालना – (किसी बात को छिपाना) सज्जन व्यक्ति दूसरे कि बुराइयों पर पर्दा डालते हैं।

२०) पाँचों अँगुलियाँ घी में होना – (खूब लाभ होना) रमेश की लाटरी लग गई है, शादी सम्पन्न घर में हो गई है। आजकल उसकी पाँचों अँगुलियाँ घी में हैं।

२१) पिंड छुडाना – (पीछा छुड़ाना, मुक्त होना) प्रकाश धोखेबाज है। मैं अब किसी तरह उससे पिंड छुड़ाना चाहता हूँ।

२२) बाग – बाग होना – (खुश होना) भारत ने विश्वकप जीता तो मेरा दिल बाग –बाग हो गया।

२३) मक्खियाँ मारना – (बेकार बैठना) उसकी नौकरी छूट गई, दूसरी नौकरी मिलती नहीं, बेचारा घर बैठा मक्खियाँ मार रहा है।

२४) मुटठी गरम करना – (रिश्वत देना) जब तक अधिकारियों की मुट्ठी गरम नहीं की जाती, वे काम नहीं करते।

२५) हाथ का मैल होना- (तुच्छ वस्तु होना) रुपये – पैसे आदमी के हाथ के मैल हैं। ये आते – जाते रहते हैं।

१३.४. कहावतें : अर्थ व प्रयोग -

१) अँगुली पकड़ कर पहुँचा पकड़ना – (थोड़ा सहारा मिलने पर अधिकार जमाने का प्रयत्न करना) मैंने प्रकाश की पढ़ाई में फीस और किताब में पैसे से सहायता की, अब वह चाहता है कि मेरे घर रहकर ही पढ़ाई पूरी करे। इसे ही कहते हैं अँगुली पकड़कर पहुँचा पकड़ना।

२) अब पछताए होत क्या, जब चिडियाँ चुग गईं खेत – (बीत चुके के लिए पछताना व्यर्थ है।) फेल होने पर रोते हो, पढने के वक्त क्रिकेट खेलते रहे। अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।

३) आगे कुआँ पीछे खाई - (दोनों ओर विपत्ति होना) जय ने होमवर्क पूरा नहीं किया था, इस लिए स्कूल नहीं जाना चाहता था। घर रहने पर पिता जी पिटाई करते। उसके आगे कुआँ, पीछे खाई है।

४) आगे नाथ न पीछे पगहा- (परिवार में कोई न होना, अनाथ होना) भूकम्प में परिवार के सभी लोग मारे गये, एक बच्ची बची है। बच्ची के आगे नाथ न पीछे पगहा।

५) एक तन्दुरुस्ती हजार नियामत –(अच्छा स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा सुख है।) सुन्दर स्वास्थ्य के लिए योगाभ्यास आवश्यक है। इसलिए मैं नियमित योगाभ्यास करता हूँ। जानता हूँ एक तन्दुरुस्ती हजार नियामत।

६) काला अक्षर भैंस बराबर – (बिलकुल अनपढ़ होना) उसे पुस्तक पढ़ने को कहते हो। वह तो उनमें से एक है जिनके लिए काला अक्षर भैंस बराबर।

७) गधा धोने से बछड़ा नहीं होता – (प्राणी का स्वभाव नहीं बदलता), तुम उसे कितना ही उपदेश दो, वह इस गन्दी आदत को नहीं छोड़ सकता। गधा धोने से बछड़ा नहीं होता।

८) जो गरजता है सो बरसता नहीं –(लम्बी - चौंड़ी बातें करने वाला काम नहीं करता) मेरी सहायता करने के लिए वह बढ़ - बढ़कर बातें करता था। लेकिन जब मौका आया तो भाग खड़ा हुआ। सच है जो गरजता है सो बरसता नहीं।

९) दुधारु गया की लात भी भली- (जिससे लाभ हो उसकी बुराई भी सह ली जाती है।) क्रोधी मालिक बात –बात में गाली देता है, लेकिन दिल का अच्छा है। जरुरत पढ़ने पर रुपये – पैसे से सहायता करता है, इसीलिए उसकी नौकरी नहीं छोड़ता। दुधारु गाय की लात भी भली।

१०) दूध का जला छाछ को भी फूँक – फूँक कर पीना – (किसी काम में हानि उठाने के बाद आदमी ऐसे काम को हाथ नहीं लगाता जिसमें हानि की जरा भी सम्भावना हो।) प्रकाश को स्कूल में बिजली का जोर का झटका लगा था। वह इतना डर गया कि अपने घर में बिजली का तार लगवाने का विचार छोड़ दिया। सही है दूध का जला छाछ को भी फूँक – फूँक कर पीता है।

११) नौ नगद न तेरह उधार- (उधार बेचने से सस्ता बेचना अच्छा है।) किसान ने व्यापारी से कहा – मैं सस्ते भाव पर गेहूँ बेच दूँगा, लेकिन उधार नहीं बेचूगाँ । मेरा सिद्धान्त हैं- नौ नकद न तेरह उधार।

१२) दूध का दूध पानी का पानी –(ठीक न्याय करना) बेईमान सरपंच से न्याय की आशा करना व्यर्थ है। वह दूध का दूध पानी का पानी क्या करेगा ?

१३) नीम हकीम खतरे जान – (अधकचरे ज्ञान से हानि की संभावना) टी. वी. का काम अच्छी तरह नहीं जानते तो छोड़ दो, बनाने के बदले कहीं और खराब न हो जाय। नीम हकीम खतरे जान।

१४) मन चंगा तो कठौती में गंगा – (तीर्थ यात्रा से मन शुध्दि उत्तम है) भाई प्रकाश, तुम्हारा तीर्थ - व्रत, दान – धर्म सब व्यर्थ है। हृदय की पवित्र भावनाएँ फलदायी होती हैं। यह सही है – मन चंगा तो कठौती में गंगा।

१५) मार के आगे भूत भागे – (शारीरिक कष्ट देने से दुष्ट भी सुधर जाता है) चोर से माल के बारे में कब से पूछा जा रहा था, कुछ बताता ही न था। पुलिस की बेंत पड़ी तो कैसा कबूल करने लगा। मार के आगे भूत भागे।

१६) रस्सी जल गई, बल न गया – (बरबाद होने पर भी अकड़ में रहना) उसकी नौकरी छूट गई, घर गिरवी हो गया! मगर रहता है शान – शौकत से । रस्सी जल गई, बल न गया।

१७) लातों के भूत बातों से नही˙ मानते – (दुष्ट व्यक्ति बिना पीटे नहीं सुधरते) पुलिस ने चोर के साथ कड़ाई की, तब उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। सच है कि लातों के भूत बातों से नहीं मानते।

१८) सिर मुड़ाते ही ओले पड़े – (कार्य के आरम्भ में ही विघ्न पड़ा) कर्ज लेकर दुकान खोली थी कि उसमें आग लग गई । मेरे सिर मड़ाते ही ओले पड़े।

१९) हीरे की परख जौहरी जाने – (गुणी ही गुण की कद्र करता है) सुरेश के चित्रों को गाँव के लोग नही पसन्द करते थे। लेकिन शहर के कलाकरों में उसकी धूम मच गई। सही है हीरे की परख जौहरी जाने।

२०) अपनी – अपनी डफली, अपना – अपना राग- (काम करने के विषय में सब का अलग – अलग मत) जिस संस्था में सभी प्रमुख बनना चाहते हैं, सब अपनी – अपनी डफली, अपना – अपना राग अलापते हैं, वह संस्था शीघ्र नष्ट हो जाती हैं।

२१) ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया – (आदमियों के भाग्य अलग – अलग होते हैं।) एक धंधे में कोई अपार धन कमाता हैं, कोई उसी धंधे मे भिखारी हो जाता है। सही बात है – ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया।

२२) एक मछली पूरे तालाब को गन्दा करती हैं- (एक व्यक्ति के बुरे काम से सारा समूह कलंकित होता है) रामू चोर है। उसके कारण पूरा गाँव चोर कहा जाता है। एक मछली पूरे तालाब को गन्दा कर देती है।

२३) सीधी उँगली से घी नहीं निकलता - (बहुत सीधेपन से काम नहीं चलता) मेरा अपना पैसा माँगने पर वह बहाने बनाता था। मारपीट पर उतारु हो गया तो शीघ्र दे दिया। इसी को कहते हैं सीधी उँगली से घी नहीं निकलता।

१४

विशेषण व भाववाचक शब्दों की रचना

इकाई की रुप - रेखा

१४.१. उद्देश्य
१४.२. प्रस्तावना
१४.३. विशेषण : परिभाषा और रुप रचना
१४.४. भाववाचक : परिभाषा व रचना
१४.५. संभावित प्रश्न

१४.१. उद्देश्य -

इस इकाई में विशेषण एवं भाववाचक संज्ञा शब्दों की रचना की जानकारी दी गई है। इसके अध्ययन से विद्यार्थी विशेषण व भाववाचक शब्दों की रचना से परिचित हो सकेंगे।

१४.२. प्रस्तावना -

संज्ञा या क्रिया में प्रत्यय के योग से विशेषण शब्दों की रचना की जाती है। इसी प्रकार जातिवाचक संज्ञा, विशेषण या धातु (क्रिया) में प्रत्यय जोड़कर भाववाचक शब्दों की रचना की जाती हैं।

विशेषण संज्ञा की व्याप्ति को मर्यादित करता है। इसका अर्थ यह है कि बिना विशेषण के संज्ञा के जितनी वस्तुओं का बोध होता है, विशेषण के योग से उनकी संख्या कम हो जाती है। शेर शब्द से जितने प्राणियों का बोध होता हैं, 'मोटा शेर' शब्द से उतने प्राणियों का बोध नहीं होता।

भाववाचक शब्द में भाव धर्म - गुण, अवस्था व व्यापार का सूचक है। जैसे शीतलता, मिठास, नींद, सफाई, घबराहट, चढ़ाई आदि।

१४.३. विशेषण शब्दों की रचना -

जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट हो, उसे विशेषण कहते हैं। जिसकी विशेषता प्रकट की जाती है, वह विशेष्य होता है।

संज्ञा या क्रिया में प्रत्यय के योग से विशेषणों की रचना की जाती है। आ, आलु, ई, इत, ईय, इक, मंद और वाला आदि विशेषण की रचना करनेवाले प्रमुख प्रत्यय हैं।

आ – प्यास – प्यासा

प्यार – प्यारा

मैल – मैला

भूख – भूखा

आलु - कृपा – कृपालु
लज्जा – लज्जालु

ई - धन – धनी
क्रोध – क्रोधी
कश्मीर – कश्मीरी
बंगाल – बंगाली
इलाहाबाद – इलाहाबादी
सुख – सुखी
दु:ख – दु:खी

इत - हर्ष -हर्षित, पुष्प – पुष्पित
पुलक – पुलकित, चिंता – चिंतित
व्यथा – व्यथित, शिक्षा – शिक्षित
लिखना – लिखित, रचना – रचित

ईय - स्वर्ग - स्वर्गीय, नरक – नारकीय
भारत – भारतीय, करना – करणीय
स्मरण – स्मरणीय, पठन – पठनीय

इक - तर्क – तार्किक, वेद – वैदिक
वर्ष - वार्षिक, दिन – दैनिक
मास – मासिक, लोक – लौकिक
अध्यात्म – आध्यात्मिक, समाज – सामाजिक
परिवार – पारिवारिक, धर्म - धार्मिक
शरीर- शारीरिक, इतिहास – ऐतिहासिक
नीति – नैतिक, परंपरा- पारंपारिक

ईला - रंग – रंगीला, जहर – जहरीला
रस – रसीला, लाज – लजीला
पानी – पनीला, छवि – छबीला

ऊ - ढाल – ढालू, पेट – पेटू
बाजार – बाजारु, गरज – गरजू
नाक – नक्कू,

मंद - अक्ल – अक्लमंद, दौलत – दौलतमंद

विशेषण बनानेवाले कुछ अन्य प्रत्यय –

आकू –	लड़ना –	लड़ाकू
आका –	लड़ना –	लड़ाका
आलू -	झगड़ना –	झगड़ालू
ओड़ा -	भागना -	भगोड़ा
सार -	मिलना -	मिलनसार
वाला -	पढ़ना -	पढ़नेवाला,
वान -	धन -	धनवान
मान -	बुध्दि -	बुध्दिमान
एरा -	मामा -	ममेरा
	चाचा -	चचेरा
आना -	साल -	सालाना
दार –	दुकान -	दुकानदार
	जमीन -	जमीनदार

१४.४. भाववाचक शब्दों की रचना -

भाववाचक एक संज्ञा है। संज्ञा के पाँच भेदों मे से एक है। जिस संज्ञा से किसी गुण, धर्म अथवा भाव का बोध हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

लड़ाई से कभी शांति स्थापित नहीं हो सकती।

वीरता राजपूतों का विशेष गुण है।

यहाँ लड़ाई और वीरता कोई अलग वस्तु नहीं हैं। ये किसी अन्य वस्तु में गुण बनकर रहते हैं। ये भाव कहलाते हैं। भाववाचक संज्ञाएँ तीन प्रकार के शब्दों से बनाई जाती हैं।

(१) जातिवाचक संज्ञा से।

(२) विशेषण से ।

(३) धातु (क्रिया) से ।

१) जातिवाचक संज्ञाओं में प्रत्यय के योग से भाववाचक संज्ञाओं की रचना होती है। जैसे

लड़का - लड़कपन

मित्र - मित्रता

गुरु - गुरुत्व

सती - सतीत्व

पुरुष - पुरुषत्व

ब्राम्हण - ब्राम्हणत्व

मनुष्य - मनुष्यता

मानव - मानवता

२) **विशेषण शब्दों में प्रत्यय जोड़कर भाववाचक संज्ञाओं की रचना की जाती है। जैसे**

वीर – वीरता,	कोमल - कोमलता
सफेद – सफेदी,	सुन्दर – सुन्दरता
चिकना – चिकनाई,	प्राचीन – प्राचीनता
लाल - लालिमा,	विशेष - विशेषता
खुश - खुशी	कठोर - कठोरता
नेक - नेकी	
बद – बदी	

३) **धातुओं (क्रियाओं) में प्रत्यय के योग से भाववाचक संज्ञा की रचना होती है। जैसे**

पढ़ना - पढ़ाई,	लड़ना - लड़ाई
लिखना – लिखाई,	धोना – धुलाई
सीना – सिलाई,	उठना - उठान
चढ़ना - चढ़ाई,	थकना – थकान / थकावट
बनाना – बनावट,	उड़ना – उड़ान
सजना – सजावट,	घबराना – घबराहट
मिलाना -मिलावट,	चिल्लाना – चिल्लाहट

१४.५. संभावित प्रश्न -

(क) विशेषण रुप लिखिए -

परिवाार, समाज, समय, शहर, शिक्षा, दर्शन, नाटक, प्यार, विकास, बाजार, पत्थर, जिद, स्थापना, खौफ, बाहर, परोपकार, प्रकृति, पृथ्वी, घर, शौक, अध्यात्म, मानव, कायरता, धर्म, रस, उपयोग, अपमान सम्मान, आदर, अर्थ, नीति, व्यवसाय, संसार।

(ख) भाववाचक रुप लिखिए -

अच्छा, बुरा, भला, निडर, दुश्मन, प्रतियोगी, मुस्कराना, निर्मल, मूर्ख, सज्जन, प्राचीन, स्वतंत्र, आजाद, मनुष्य, नारी, पुरुष, व्यक्ति, दौड़ना, परेशान बच्चा, अकेला, विविध, प्राचीन, चुप, घनिष्ठ कठिन, गरीब, दोस्त, दृढ़, बदनाम, गहरा, रुखा, सुंदर, चतुर, लापरवाह, बूढ़ा, वत्सल, सफल।

❖❖❖

१५

संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों का लिंग और वचन परिवर्तन

इकाई की रुप - रेखा

१५.१. उद्देश्य
१५.२. प्रस्तावना
१५.३. संज्ञा का लिंग के अनुसार परिवर्तन
१५.४. संज्ञा का वचन के अनुसार परिवर्तन
१५.५. सर्वनाम का वचन के अनुसार परिवर्तन
१५.६. विशेषणों में लिंग और वचन के कारण परिवर्तन
१५.७. संभावित प्रश्न

१५.१. उद्देश्य -

भाषा में एक शब्द का अनेक रुपों में प्रयोग किया जाता है। इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी संज्ञा का लिंग के अनुसार परिवर्तन सीख सकेंगे। संज्ञा और सर्वनाम और विशेषण के वचन परिवर्तन की जानकारी देना इस इकाई का उद्देश्य है।

१५.२. प्रस्तावना -

हिन्दी पुल्लिंग संज्ञा में प्रत्यय जोड़कर उसे स्त्रीलिंग संज्ञा के रुप में प्रयुक्त किया जाता हैं, तो कभी उसके स्थान पर भिन्न स्त्रीलिंग शब्द प्रयुक्त होता है, जैसे - राजा – रानी, माता-पिता, गाय -बैल। इसी प्रकार संज्ञा शब्द में प्रत्यय जोड़कर वचन परिवर्तन किया जाता है। सर्वनाम में लिंग के अनुसार परिवर्तन नहीं होता सिर्फ वचन के अनुसार परिवर्तन होता है। विशेषण लिंग और वचन के कारण परिवर्तित नहीं होते हैं। आकारांत विशेषणों में ही यह परिवर्तन मिलता है।

१५.३. संज्ञा का लिंग के अनुसार परिवर्तन

संज्ञा का लिंग के अनुसार परिवर्तन हिंदी में लिंग दो हैं – पुल्लिंग और स्त्रीलिंग पुल्लिंग – जिस संज्ञा से यथार्थ या कल्पित पुरुषत्व का बोध हो, उसे पुल्लिंग कहते हैं। जैसे – लड़का, बच्चा, घोड़ा, शेर, मकान, पर्वत, नगर, समुद्र आदि। इनमें लड़का, बच्चा, घोड़ा शेर

सें यथार्थ पुरुषत्व का बोध होता है और मकान, पर्वत, नगर, समुद्र कल्पित पुरुषत्व सूचित करते हैं।

स्त्रीलिंग – जिस संज्ञा से यथार्थ या कल्पित स्त्रीत्व का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे कन्या, शेरनी, घोड़ी, पुस्तक, मेज, नदी इत्यादि। इन उदाहरणों में कन्या, शेरनी, घोड़ी से यथार्थ स्त्रीत्व का बोध होता है और पुस्तक, मेज, नदी से कल्पित स्त्रीत्व का बोध होता है।

हिंदी में अधिकतर शब्द पुल्लिंग पाए जाते हैं। उन्हीं में कुछ परिवर्तन करके उन्हें स्त्रीलिंग बना दिया जाता है।

लिंग – परिवर्तन तीन प्रकार से किया जाता है –

१) शब्द के अन्त में स्त्री प्रत्यय लगाकर।
२) स्त्रीवाचक भिन्न शब्द प्रयुक्त करके।
३) संज्ञा शब्द में स्त्रीवाचक तथा पुरुषवाचक शब्द लगाकर

१) स्त्रीप्रत्यय लगाकर लिंग परिवर्तन –

क) अ,आ, अन्तवाले शब्दों के अन्तिम स्वर को ई करके स्त्रीलिंग शब्द बनाते हैं -

दास – दासी	दादा – दादी
पुत्र – पुत्री	बेटा - बेटी
देव - देवी	लड़का - लड़की
कबूतर –कबूतरी	बकरा - बकरी

ख) कुछ शब्दों के अन्तिम अ, आ को इया करके स्त्रीलिंग शब्द बनाये जाते हैं -

चूहा - चुहिया
बेटा – बिटिया
डिब्बा - डिबिया
लोटा – लुटिया

ग) व्यवसायवाचक संज्ञाओं में 'इन' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग शब्द बनाए जाते हैं -

धोबी – धोबिन
तेली - तेलिन
माली – मालिन
सोनार - सोनारिन
लुहार - लुहारिन
भंगी - भंगिन

घ) कुछ इकारान्त, उकारान्त, एकारान्त के अन्तिम स्वर के स्थान पर 'आइन' प्रत्यय लगाया जाता है -

चौधरी - चौधराइन
गुरु – गरुआइन
पंडा – पंडाइन
दुबे – दुबाइन

च) कुछ प्राणिवाचक संज्ञाओं के अन्त में 'नी' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग बनता है-

मोर – मोरनी
शेर – शेरनी
ऊँट – ऊँटनी
हाथी – हथनी
स्यार - स्यारनी

छ) संस्कृत के 'अ' अन्तवाले शब्दों के अ का 'आ' हेा जाता है -

सुत – सुता
बाल – बाला
मूर्ख - मूर्खा

ज) 'अक' अन्त वाले शब्दों में 'अक' के स्थान पर 'इका' हो जाता है -

लेखक – लेखिका
अध्यापक – अध्यापिका
पाठक - पाठिका
गायक – गायिका

२) स्त्रीवाचक भिन्न शब्दों के प्रयोग से लिंग परिवर्तन -

बैल – गाय
भाई - बहन
पुरुष – स्त्री
राजा – रानी
पिता – माता
मर्द - औरत
ससुर – सास

३) संज्ञा शब्द में स्त्रीवाचक तथा पुरुषवाचक शब्द लगाकर लिंग परिवर्तन किया जाता है -

नर मच्छर – मादा मच्छर
नर मछली - मादा मछली
पुरुष – छात्र – स्त्री छात्र
पुरुष – सदस्य – स्त्री –सदस्य

१५.४. संज्ञा का वचन के अनुसार परिवर्तन -

वचन – शब्द के जिस रुप से संख्या का बोध हो उसे वचन कहते हैं।

हिंदी में दो वचन हैं – एकवचन और बहुवचन । शब्द के जिस रुप से एक वस्तु का बोध हो उसे एकवचन कहते हैं। शब्द के जिस रुप से एक से अधिक वस्तुओं का बोध हो उसे बहुवचन कहते हैं।

बहुत से शब्दों में बहुवचन के प्रत्यय विभक्तियों (कारक चिहनों) के बिना नहीं लगाए जाते। ऐसे शब्दों के बहुवचन रुप में कोई परिवर्तन नहीं होता है। अर्थात एकवचन और बहुवचन रुप समान होते हैं। प्राय: पुल्लिंग शब्दों के दोनों वचनों में रुप एक समान होते हैं। कई शब्दों के विभक्ति रहित (कारक चिहन रहित) बहुवचन रुप विभक्ति सहित (कारक चिहन युक्त) बहुवचन रुप से भिन्न होते हैं। इस प्रकार हिन्दी में बहुवचन रचना के दो भेद हैं-

१) विभक्ति रहित बहुवचन।

२) विभक्ति सहित बहुवचन।

बहुवचन बनाने के नियम लिंग के अनुसार अलग –अलग दिये जा रहे हैं।

१) विभक्ति रहित बहुवचन बनाने के नियम

क) पुल्लिंग –

आकारांत पुल्लिंग संज्ञाओं को छोड़कर अन्य अन्तवाली पुल्लिंग संज्ञाएं दोनों वचनों में एक रुप रहती हैं। उनके बहुवचन रुप में कोई परिवर्तन नहीं होता है –

उदाहरण -

	एकवचन	बहुवचन
अकारांत	बालक	बालक
	घर	घर
	ग्रंथ	ग्रंथ
इकारांत	कवि	कवि
	मुनि	मुनि
ईकारांत	माली	माली
	धोबी	धोबी
	आदमी	आदमी
उकारांत	साधु	साधु
	सेतु	सेतु
ऊकारांत	डाकू	डाकू
	चाकू	चाकू
	लड्डू	लड्डू
एकारांत	चौबे	चौबे
	पाँड़े	पाँडे
ओकारांत	रासो	रासो
ओंकारांत	कोदों	कोदों
औकारांत	जौ	जौ

टिप्पणी – अंतिम चार प्रकार की संज्ञाएँ हिन्दी में बहुत कम है।

आकारांत – आकारांत पुल्लिंग के बहुवचन रुप में 'आ' के स्थान पर 'ए' हो जाता है।

उदाहरण –

एकवचन	बहुवचन
घोड़ा	घोड़े
लड़का	लड़के

बच्चा	बच्चे
बकरा	बकरे
ताला	ताले
परदा	परदे

नोट – संबंधवाचक, प्रतिष्ठावाचक, उपनामवाचक आकारांत संज्ञाओं के बहुवचन में कोई परिवर्तन नहीं होता-

एकवचन	बहुवचन
चाचा,काका, नाना	चाचा, काका, नाना
पिता, मामा (संबंध वाचक)	पिता, मामा
राजा (प्रतिष्ठा वाचक)	राजा
लाला (उपनाम वाचक)	लाला

ख) स्त्रीलिंग – विभक्ति रहित बहुवचन रुप :

१) अकारांत स्त्रीलिंग के अन्तिम अ के स्थान पर एँ करके बहुवचन बनाया जाता है-

बहन - बहनें
बात - बातें
रात – रातें
आँख – आँखें
भैंस – भैंसें

२) इकारांत तथा ईकारांत संज्ञाओं के अंतिम इ, ई के स्थान पर इयाँ हो जाता है –

सखी - सखियाँ
लड़की - लड़कियाँ
थाली - थालियाँ
तिथि - तिथियाँ
विधि – विधियाँ

३) याकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्त में केवल अनुनासिक जोड़ा जाता है-

एकवचन	बहुवचन
बुढ़िया	बुढ़ियाँ
गुड़िया	गुड़ियाँ
डिबिया	डिबियाँ
चिड़िया	चिड़ियाँ

४) स्त्रीलिंग के जिन शब्दों के अंत में आ, उ, ऊ, औ हो उसके अन्त में एँ लगाया जाता है। एँ प्रत्यय लगने से पूर्व ऊ का ह्रस्व कर दिया जाता है –

लता – लताएँ
माता - माताएँ
धेनु – धेनुएँ
वस्तु – वस्तुएँ

बहू – बहुएँ
वधू – वधुएँ
गौ – गौएँ

नोट : कई शब्दों के अंत में लोग, गण, वृंद, वर्ग या जन जोड़कर बहुवचन रुप बनाया है।

एकवचन	बहुवचन
राजा	राजा लोग
बालक	बालक गण
देव	देवगण
पाठक	पाठकगण
विद्यार्थी	विद्यार्थी वृंद
विद्वान	विद्वज्जन

२) विभक्ति सहित बहुवचन रुप –

क) पुल्लिंग संज्ञाओं का विभक्ति युक्त बहुवचन रुप बनाने के लिए 'ओं' या 'यों' लगाते हैं।

बहुवचन प्रत्यय लगाने से पहले 'ई'का 'इ' और 'ऊ' का 'उ' में परिवर्तन किया जाता है –

एकवचन	बहुवचन
बालक	बालकों ने
घोड़ा	घोड़ों ने
कवि	कवियों से
आदमी	आदमियों में
साधु	साधुओं को
डाकू	डाकुओं के

ख) स्त्रीलिंग संज्ञाओं का बहुवचन रुप बनाने के लिए 'ओं' अथवा यों प्रत्यय लगाते हैं-

एकवचन	बहुवचन
बात, आँख	बातों में, आँखों ने
माता, लता	माताओं से, लताओं को
तिथि, विधि	तिथियों में, विधियों को
थाली, नदी	थालियों से, नदियों पर
धेनु, बहू	धेनुओं ने, बहुओं से

१५.५. सर्वनाम का वचन परिवर्तन -

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं। संज्ञाओं के समान सर्वनामों में वचन और कारक के कारण रुपांतर होता है, परन्तु लिंग के कारण इसके रुप में परिवर्तन नहीं होता है। जैसे –

मैं लिखता हूँ। मैं लिखती हूँ। तू लिखता है। तू लिखती है।वह जा रहा है। वह जा रही है।

सर्वनाम का वचन के कारण परिवर्तन :
वचन परिवर्तन के दो भेद हैं- कारकचिहन रहित, और कारकचिहन सहित।
प्रथम पुरुष–

एक वचन	बहुवचन
मैं, मैंने	हम, हमने
मुझको, मुझे	हमको, हमें
मेरा, मेरी, मेरे	हमारा, हमारी हमारे
मुझसे	हमसे

मध्यम पुरुष-

तू, तूने	तुम, तुमने
तुझको, तुझे	तुमको, तुम्हें
तेरा, तेरी, तेरे	तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे

मध्यम पुरुष –

वह, उसने	वे, उन्होंने
उसको, उसे	उनको, उन्हें

अन्य सर्वनामों के वचन परिवर्तन –

एकवचन	बहुवचन
यह इसने	ये, इन्होंने
इसको, इसे	इनको, इन्हें
आप, आपने	आप लोग, आप लोगों ने
कोई, किसी ने	कोई, किन्हीं ने
कौन, किसने	कौन, किन्होंने
जिसने	जिन्होंने

१५.६. विशेषण में लिंग और वचन के अनुसार परिवर्तन -

जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट हो, उसे विशेषण कहते हैं। जिसकी विशेषता प्रकट की जाती है, उसे विशेष कहते हैं। काली गाय दूध देती है। 'काली गाय' में काली विशेषण है और गाय विशेष्य।

लिंग और वचन के कारण विशेषणों में परिवर्तन लिंग और वचन के कारण केवल आकारांत में विशेषणों में परिवर्तन होता है। अन्य विशेषणों में परिवर्तन नहीं होता है।

चतुर लड़का, चतुर लड़के, चतुर लड़की, चतुर लड़कियाँ ढालू जमीन, ढालू सड़क। आकारांत पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए आ के स्थान पर 'ई' किया जाता है –

अच्छा	-	अच्छी
बड़ा	–	बड़ी
मोटा	–	मोटी
ऐसा	–	ऐसी

वैसा	–	वैसी
कैसा	–	कैसी
जैसा	–	जैसी

आकारांत विशेषण का बहुवचन में परिवर्तन करने के लिए 'आ' के स्थान 'ए' हो जाता है।

एकवचन	बहुवचन
अच्छा	अच्छे
बड़ा	बड़े
ऐसा	ऐसे
वैसा	वैसे
कैसा	कैसे
जैसा	जैसे

१६.७. संभावित प्रश्न -

१. निम्नलिखित संज्ञा शब्दों के लिंग परिवर्तन कीजिए -

बेटा, बकरा, नाना, बंदर, नाती, धोबी, हाथी, पाठक, बनिया, लाला, ठाकुर, जेठ, सेठ, देवर, गगरा, घंटा, रस्सा, ननद, जीजी, भैंस, सुत, महाशय, पक्षी, उल्लू, कौआ, चीता।

२. निम्नलिखित संज्ञा शब्दों के वचन परिवर्तन कीजिए -

घर, बालक, मुनि, कवि, बहिन, झील, टोपी, नदी,तिथि, रीति, माता, लता, लड़का, घोड़ा, बहू।

३. निम्नलिखित सर्वनाम शब्दों के वचन परिवर्तन कीजिए -

मैं, यह, वह, मुझको, मुझसे, मेरा, तूने, तुझे, तुझसे, तेरी, तुममें, तुम, इसे, उन्हें, इनका, जिसने, किन्होंने, किसको।

४. निम्नलिखित विशेषणों के लिंग और वचन रुपांतर कीजिए -

चतुर, मूर्ख, बड़ा, छोटा, मोटा, बेचारा।

❖❖❖